This is a digital copy of a book that was preserved for generations on library shelves before it was carefully scanned by Google as part of a project to make the world's books discoverable online.

It has survived long enough for the copyright to expire and the book to enter the public domain. A public domain book is one that was never subject to copyright or whose legal copyright term has expired. Whether a book is in the public domain may vary country to country. Public domain books are our gateways to the past, representing a wealth of history, culture and knowledge that's often difficult to discover.

Marks, notations and other marginalia present in the original volume will appear in this file - a reminder of this book's long journey from the publisher to a library and finally to you.

Usage guidelines

Google is proud to partner with libraries to digitize public domain materials and make them widely accessible. Public domain books belong to the public and we are merely their custodians. Nevertheless, this work is expensive, so in order to keep providing this resource, we have taken steps to prevent abuse by commercial parties, including placing technical restrictions on automated querying.

We also ask that you:

+ *Make non-commercial use of the files* We designed Google Book Search for use by individuals, and we request that you use these files for personal, non-commercial purposes.

+ *Refrain from automated querying* Do not send automated queries of any sort to Google's system: If you are conducting research on machine translation, optical character recognition or other areas where access to a large amount of text is helpful, please contact us. We encourage the use of public domain materials for these purposes and may be able to help.

+ *Maintain attribution* The Google "watermark" you see on each file is essential for informing people about this project and helping them find additional materials through Google Book Search. Please do not remove it.

+ *Keep it legal* Whatever your use, remember that you are responsible for ensuring that what you are doing is legal. Do not assume that just because we believe a book is in the public domain for users in the United States, that the work is also in the public domain for users in other countries. Whether a book is still in copyright varies from country to country, and we can't offer guidance on whether any specific use of any specific book is allowed. Please do not assume that a book's appearance in Google Book Search means it can be used in any manner anywhere in the world. Copyright infringement liability can be quite severe.

About Google Book Search

Google's mission is to organize the world's information and to make it universally accessible and useful. Google Book Search helps readers discover the world's books while helping authors and publishers reach new audiences. You can search through the full text of this book on the web at `http://books.google.com/`

15 A 2

Indian Institute, Oxford.

Digitized by Google

Digitized by Google

Digitized by Google

Digitized by Google

Digitized by Google

15-11-2.

SELECTIONS

FROM THE

BAGH O BAHÁR

AND

HISTORY OF INDIA

FOR THE

EXAMINATION OF MILITARY OFFICERS BY THE LOWER STANDARD.

PUBLISHED BY AUTHORITY.

باغ و بہار اور تاریخ ہندوستان

کا خلاصہ

جو فوجي افسرون کے چھوٹے امتحان کے لئے مقرر ہی *

हिन्दुस्तान का इतिहास और बागोबहार का

चुम्बक

जो फ़ौज के साहिबों के छोटे इम्तेहान के लिये

ठहरायागया है.

CALCUTTA:

PRINTED BY J. W. THOMAS, AT THE BAPTIST MISSION PRESS.

1881.

Digitized by Google

Digitized by Google

हिन्दुस्तान का बयान।

पहला बाब।

हिन्दुओं की तवारीखों से मअलूम होता है कि क़दीम् से हिन्दुस्तान् में दोही ख़ानदान राजा हुआ करते थे; एक घराने के राजा सूरजवंशी और दुसरे के चन्द्रवंशी कहलाते थे। इक्ष्वाकुनाम राजा मनु का बेटा था और उसी से सूरजवंश हुआ है. कहते हैं कि पेश्तर वही पूरब की तरफ़ आया और हिन्दुस्तान में अपनी सलतनत मुक़र्रर की. बयान करते हैं कि अयोधा उसी ने बसाई है जो बहुत दिनों तक सूरजवंश के राजाओं की राजधानी थी. इक्ष्वाकु के पीछे हिन्दुस्तान में बुधनाम एक आदमी आया जिस ने इला के साथ जो इक्ष्वाकु के नसल् में थी शादी करके हिन्दुस्तान में चन्द्रवंश को क़ायम किया जिस की राजधानी बुध के वक़्त में था, उस के थोड़े दिनों पीछे प्रयाग यअने इलाहाबाद थी. इन दोनों ख़ानदानों की राजधानियां निहायत नज़दीक होने के सबब से यह यक़ीन हुआ कि सूरजवंश और चन्द्रवंश के राजाओं का राज बहुत बड़ा न था.

Digitized by Google

जानीगई कि रामचन्द्र की बहादुरी हरचन्द कितनीही हो, पर उस के बड़ों का राज बहुत छोटा था, और उस का नाम भी शोहरत न उस की अवांमर्दी के सबब बल्के वाल्मीक की शाइरी से फैली है. रामायण में राम को ईश्वर का अवतार बयान किया है, जैसा कि हिन्दू लोग अपने सूरमाओं की तअरीफ़ में अक्सर कहाकरते हैं, इस सबब से राम के दुश्मनों को राक्षस कहकर बयान करना ज़रूर पड़ा, क्योंकि देवता आदमीयों के साथ लड़ने को थोड़ी बात समझते हैं. ये बातें फ़क़त बढ़ावा और बनावट की हैं जो इसेशः से शाइर लोग करते चले आये हैं.

यह बात भी बयानकरने के लाइक है कि दण्डकबन जिसने दक्खन के उजाड़ जंगल में, जो कावेरी नदी के कनारे तक चलागया है, राम की फ़ौज के जाने की चर्चा है. कहते हैं कि इस जंगल में, मुनि ऋषि चरते और बन्दर रहते थे, और उस नदी को उतरकर राम का लश्कर जिसस्थान जिसने आदमीयों के रहने की जगह में पहुंचा. यह देश लङ्का के राजा रावण के तअल्लुक में था जिस की प्रजा राजा रामचन्द्र की रिआया से हरतरह चतुर थी, इस लिये राक्षस समझीगई. शायद यह होसकता है कि असले वक़्त में हिन्दुस्तान के दक्खनी मुल्कों में वे लोग रहते थे जो वहां समन्दर की राह से आये और वह हुनर शेशः अपने संग लाये जो उस वक़्त हिन्दुस्तान के उत्तर तरफ़ रहनेवालों को मअलूम न था.

Digitized by Google

चन्द्रवंश जिस का ज़िक्र आगे होचुका है, उस का प्रथम पैदा-करनेवाला बुध था, जो हिन्दुओं की अक्ल जगह तातारदेश से आया था. जब कि सूरजवंश के दो हिस्से भये, जिन्हों ने दो छोटे छोटे राज क़ुर्रर किये, एक अवध दूसरा मिथिला अर्थात् तिरहुत का, चन्द्रवंश से कृष्ण आखें निकलीं और उस से अक्सर सारा उत्तर-हिन्दुस्तान भरगया. ऐसा भी मअ्लूम होता है कि सूरजवंश के राजा उस मज़हब के तरीक़े पर चलते थे जो आख़िर को रफ़्तः रफ़्तः सारे हिन्दुस्तान में फैलगया, जिस की जड़ यह है कि ब्राह्मण देवताओं से भी बड़े हैं. बहुतेरी बातों से जो रामायण और महाभारत में लिखीगई हैं ऐसा मअ्लूम होता है कि पुराने वक़्त में, ब्राह्मण और क्षत्रियों ने अपनी अपनी बड़ाई के लिये कईबार आपस में लड़ाई की थी. रामचन्द्र से कई पुश्त पेश्तर सूरजवंश में, एक परसराम नाम सूरबीर हुआ था. कहते हैं कि उस ने अक्सर क्षत्रियों को मारके नाश करदिया और ब्राह्मणों को उत्तर—हिन्दुस्तान में निहायत ज़बर्दस्त बनाया, और ब्राह्मणों ने उस की शुक्रगुज़ारी में, उस का नाम धर्मावतार जो इन दिनों में हरएक दयाल के लिये दिया जाता, रक्खा था.

क्षत्री लोग थोड़ेही दिनों के बअ्द फिर जोंकेत्यों ज़बर्दस्त होगये और उन्हों ने मगर को, जो राम के बुज़ुर्गों में था और समन्दर का राजा कहलाता, हिमालय के पहाड़ में

Digitized by Google

मलाहन और बाप राजघराने पुरू के वंश में से था, उस ने वेदों को जैसे अब हैं इसी ढौल पर एकट्ठा करके सुधार लिया. उसीने अपनी मदद के लिये पैल, वैशंपायन, जैमिनि, समन्तु नाम चार बड़े बड़े पण्डित बुलाया और उन्हीं की सहायता से इन चारों वेदों को लिखाकर अब के ढौलपर रखा है. यहां पर इस बात का ज़िकर करना वाजिब है कि शायद मनु का धर्मशास्त्र उसी वक़्त में इकट्ठा हुआ हो, क्योंकि उसी के पहिले बाब में लिखा है कि मनु ने खुद धर्मशास्त्र को नहीं बनाया, लेकिन् फ़क़त् तरतीब दिया है.

अब हम महाभारत का हाल लिखते हैं कि जिस को पचीस सौ बरस गुज़रे पर तौभी वह लोगों के मन से न भूला, और अब के हिन्दु इसी लड़ाई के हाल को, उन लड़ाइयों के बयान से भी ज़ियादः ठीक ठीक जानते, जो इस पिछले सत्तर बरसों में हुई हैं जिन से बिल्कुल हिन्दुस्तान दूसरे देशबासियों के क़ब्जे में होगया. इस लड़ाई के वक़् सूरजवंश का राज, फ़क़त् उस थोड़ीसी जगह में रहगया था जो पहाड़ों और गङ्गा के दर्मियान है, और यदुवंश तो बिल्कुल हिन्दुस्तान में फैलरहा था. यदुवंश में निहायत नामी राजा ये थे, पहला जरासन्ध मगधदेश का राजा, दूसरा कंस का घराना जो सूरसेन की राजधानी मथुरा में राज करता था जिस का हाल हिन्दुस्तानी और यूनानी तवारीखों में पायाजाता है, और तीसरा पुरुवंश जो हस्तिना

Digitized by Google

पुर का राजा था, कंस नाम मथुरा के राजा ने, मगध देश के बड़े ज़ोरावर राजा जरासन्ध की बेटी से शादी की थी, जिस के मददगार यवनों का बड़ा राजा और कईएक राजा थे. अगर्चि: हम नहीं जानते हैं कि यह कौनसा बड़ा राजा था, पर इस बात से हम को यह एक भारी दलील मिलती है कि हरएक वक़्त में, सिन्धुदर्या के पश्चिम-तरफ़ के हाकिम् अमीर हिन्दुस्तान में हुकूमत करते थे. कृष्ण ने जो यदु के ख़ानदान में था, कंस को मार उस की राजगद्दी छीन ली. जरासन्ध कंस का पक्षटा लेने के लिये मथुरा पर चढ़ा और कहते हैं कि उस को अठारह बार फेर आख़िर को खेलिया. कृष्ण और उस के संगी साथी समन्दर के किनारे को भागगये और वहां द्वारका को बसाया.

हस्तिनापुर के राजा सन्तनु के बेटे बिचित्र नाम के कोई बेटा न था, लेकिन् हरम से पांड़िया नाम एक बेटी और उस की ब्याहती जोरू से दो बेटीयां थीं. व्यास के जो राजख़ान्दान का गुरु और राजा सन्तनु का बेटा था, उस की भतीजी पांड़िया के पेट से पाण्डु नाम एक बेटा पैदा हुआ जो अपने नाना की गद्दी पर बैठा. पाण्डु ने कुन्ती के साथ जो वसुदेव की बहन और कृष्ण और बलदेव की फुफी थी, शादी की. कुन्ती के पांच बेटे हुये जो पाण्डव कहलाते थे; उनमें से एक का नाम युधिष्ठिर, दूसरे का भीम, तीसरे का अर्जुन, चौथे का नकुल, पांचवें का सहदेव था, पर कई

Digitized by Google

लिये बुलाये गये थे. कुरुवंशी जो राजघराने में बड़े बेटे की नसल में थे, इस गुस्ताख़ी से ख़फ़ा हुये और दुर्योधन चूंके उस को अपनी क़ुव्वत से तो न रोक सका, फ़रेब करने की तदबीर की. ऐसा समझाके कि युधिष्ठिर को जुये का बड़ा शौक़ है, उस को निहायत गहरे खेलमें डाल, दर्जः बदर्जः उस से दांव रखवाता गया, अन्तक कि युधिष्ठिर अपनी लोरू, और राज की बाज़ी दोनों एकही पांसे में हारगया; तब दुर्योधन ने उस का राज—पाट लेकर उसे बारह बरस का देशनिकाला दिया. युधिष्ठिर और उस के चारों भाई, कृष्ण और बलदेव समेत, हिन्दुस्तान के हरएक मुल्क में घूम—फिरने गये और हरएक देश में अपनी बहादुरी दिखलाते—गये. अब उन के देशनिकाले की मुद्दत पुरी होचुकी, तब वे यमुना—कनारे को फिर लौट आये और युधिष्ठिर ने राज का अपना हिस्सः मांगा. दुर्योधन यह उस की बात सुनकर जिन्दाकर बोला कि तुझे इतनी ज़मीन भी न दूंगा कि जितनी में सूई की नोक समावे. तब युधिष्ठिर ने जंगकरना छोड़ और कोई तदबीर न देखी.

इस बड़ी लड़ाई में जो कुरुक्षेत्र में हुई जहांपर पिछले दिनों में मुसलमानों ने चढ़ाई कर, हिन्दुस्तान के सबसे पिछले राजा पृथीराज को शिकस्त दी थी, यादवों की सब कृष्णन ज़ात दोनों तरफ़ बंटी थी. युधिष्ठिर और उस के भाईयों ने देशनिकाले के वक़्त, बढ़तेरों को अपने दोस्त बना लिया था,

Digitized by Google

इस लिये उन के मददगार कम न थे. हिमालय से लेकर समन्दर तक हरएक नामी राजा ने इस महाभारत के वास्ते अपनी फौज इकट्ठी की थी. कहते हैं कि लड़ाई अठारह दिनतक होती रही और दोनों तरफ़ मारधड़ निहायत हौलनाक हुई. आख़िर को राजा दुर्योधन मारागया और युधिष्ठिर के हाथ खेत रहा. फ़तेः होने के बअद जिस वक़ युधिष्ठिर ने लड़ाई के मैदान में अपने दोस्तों और दुश्मनों की लोथें पड़ीहुई देखीं जो सबकेसब एकही ख़ानदान में पैदाहुये थे और आपस की लड़ाई में मारेगये, उस वक़ दुनिया से दूखी होकर उस के छोड़ने का इरादः किया. इस लिये वह हस्तिनापुर में आ, अपने अगानः और दुश्मन दुर्योधन को चिता में जलाकर उस का क्रियाकरम किया, और परीक्षित को, जो अभिमन्यु का बेटा और अर्जुन का पोता था, इन्द्रप्रस्थ के राजसिंहासन पर बैठाकर आप, कृष्ण और बलदेव को साथ ले, द्वारका को चलागया. इस जंग के सबब से वे कमज़ोर होगये थे और थोड़ेही दिनों पीछे जंगली भीलों ने उनपर हमला किया और उनमें से एक ने कृष्ण को कंवल कुण्ड पर मारडाला. युधिष्ठिर हिन्दुस्तान में ठहरना बेसुबासिब जान, बलदेव को साथ ले, सिन्धुनदी की राहसे हिमालय पहाड़ पर चढ़गया. इस के बअद हिन्दुस्तानी तवारीख़ लिखनेवाले उन का हाल न जान, कहते हैं कि वे बैकुण्ठ को चले गये हैं, पर अगालब है कि वे काबुलिस्तान होकर, तातार को, जो उन के कुनबे की पैदाइश

Digitized by Google

है, लिखने का इरादः नहीं करते, इस लिये पांच छः सौ बरस के अहवाल को सिर्फ़ क़यासही पर छोड़ देते हैं, और हिन्दुस्तान के उन अहवालों को लिखते अहां हम को यूनान के अहवालों से भी कुछ मदद मिलसकती है.

मुसलमानों की तवारीखों में ऐसा लिखा है कि अगले ज़माने में ईरान के लोग, न फ़क़त सिन्धुनदी के पूरब तरफ़वाले देशों में आये, बल्के हिन्दुस्तान में फतेः करते हुये दूर दूर तक गये थे. इस बात को बहुत मुद्दत गुज़री इस लिये सच्चे अहवालों की तारीख की हद्द से बाहर है, लेकिन् इस से इतनाही ज़ाहिर है कि पुराने वक़ से हिन्दुस्तान और मुल्क के हाकिमों से बरी न रहा. आर्यों में सिन्धुनदी हिन्दुस्तान की हद्द रक्खी है, और हिन्दुओं को उस के पार उतरना मनअ है, पर न आर्य न राजा सिन्धु के पच्छमवाली जातों को हिन्दुस्तान पर चढ़ने के लिये इस पार उतरने से कभी रोक सके. हक़ीक़त में जब कि हम सोचते हैं कि हिन्दू तातार के मुल्क से आये हैं तो मालिब है कि उस मुल्क की और क़ौमें भी हिन्दुस्तान में आई होंगी; और यह बात मअलूम है कि ज़ाहः वक़ नहीं हुआ कि हिन्दू सिन्धु के पार अपने दुश्मनों से पलटा लेने को जाथाकरते थे. सिन्धुपार या समंदर में जाने को जो मुमानियत है यह नयाही तरीक़ः है. अगले ज़माने में जबतक कि ब्राह्मणों ने छत्रियों को न फतेः किया और बौद्ध मज़हब को हिन्दुस्तान से नहीं निकाला था,

Digitized by Google

तबतक हिन्दू लोग बड़े बहादुर गिनेजाते और अक्सर लड़ाई के लिये चढ़ाई किया करते थे. मअ़लूम होता है कि वह यही वक़्त था कि जिस में वे अटक पारहोकर, तातार देशपर चढ़े और समन्दर उतरकर, पूरब के टापूओं में भी जाकर, अपना मज़हब फैलाया था; और यह बात थोड़े वक़्त की है कि हिन्दू लोग बेहिम्मत होगये हैं और औरों का मत बुरा जान, अपना मुल्क छोड़, परदेश को नहीं जाते इस दहशत से कि शायद दूसरे मज़हबवालों से मिलकर हमारी जात न जाती रहे.

Digitized by Google

दूसरा बाब।

जो जो चढ़ाईयां पछिमवालों ने हिन्दुस्तान पर की हैं और उन के सच्चे बयान हमारे पास हैं, उन में सब से पहली फ़ारस के बादशाह दारा की चढ़ाई है. वह सम्वत् ईसवी पांचसौ अठारह बरस पेश्तर, कैखुसरो के सिंहासन पर बैठा और यूनान के समन्दर से लेकर सिन्धु के कनारे तक, उस ने सारे मुल्क को फतेः करके अपने राज के शामिल करलिया था. इस बड़े भारी राजपर क़नाअ़त न करके, हिन्दुस्तान को भी जहां की दौलत की शुहरत उस ने सुनी थी, अपने राज में मिलाने चाहा. पहलेपहल उस ने सैलेक्स को, जो उस के लड़ाई के जहाजों का सिपाःसालार था, कश्तियों की एक बहर तैयार कर, सिन्धु की राह से समन्दर में उतर जाने का हुक्म दिया. अमर्चिः सैलेक्स आख़िर को कामयाब हुआ पर उसे इतनी मुश्किल पड़ी थी कि अपने चलने की जगह से समन्दर तक तीस महीने में पहुंचा. उस की ज़बानी इस मुल्क की दौलत का हाल जिस में खेलकर वह गया था, दारा को जब मअ़लूम हुआ, उस ने उस के फतेः करने का इरादः किया. उस ने बड़ी फौज साथ लेकर हिन्दुस्तान में आ, हरएक दुश्मन

Digitized by Google

को फतेः कर, उन देशों को जो सिंधु के कनारे कनारे बसते हैं, अपनी सल्तनत में मिलालिया. यह बात हम नहीं ठहरा सक्ते हैं कि उस ने किस क़दर मुल्क फ़तेः किया था, पर ऐसा यक़ीन होता है कि हिन्दुस्तान का वह देश जो ईरान की सल्तनत में शामिल हुआ, बहुत बड़ा और उस के सब मुल्कों से ज्यादः फ़ायदेमन्द था, क्योंकि फ़ारस के तमाम मुल्क की आमदनी की तिहाई के बराबर खिराज, इसी एक सूबे से आता था; और कहते हैं कि जब सिंधु के पच्छम तरफवाले सूबों के खिराज में चांदी दी जाती, तब हिन्दुस्तान से सोना लिया जाता था.

अक्सर इस तरह पर लिखते हैं कि उसी वक़ के नज़दीक, जब कि दारा ने हिन्दुस्तान पर चढ़ाई की थी, मगर बाज़े कहते हैं कि उस से सौ बरस पीछे, गौतम ने बौद्ध मज़हब को हिन्दुस्तान में मुक़र्रर किया. ऐसा मअ़लूम होता है कि यदुवंश की कृष्ण जातें, बल्के सारे चन्द्रवंशी निहायत पुराने वक़ से बौद्धमत को, जिस की बुनियाद वेदों पर थी, मानते चले आते थे. गौतम जिस को सातवां बुध कहते हैं और जिस ने बौद्ध मत के क़ायदों और वचनों को खूब पक्का किया, मगधदेश में जो बिहार की दक्खन है, पैदा हुआ और अक्सर गया में रहता था. उस की पैदाइश को, ईसवी सन् से पांचसौ चालीस बरस पेश्तर ठहराते हैं, पर तिबतवालों की तवारीख़ में जो बौद्धमत को मानते हैं, ऐसा लिखा है कि वह ईसवी

Digitized by Google

सम्वत् के चारसौ तीस बरस पेश्तर पैदा हुआ था. उस के पैदा होने की जगह के बाब में भी जुदे जुदे तौर से बयान करते हैं मगर इतनाही कहना बस है कि वह मगध देशही में पैदा हुआ और बुध का खताब, जो चन्द्रवंश के श्रावक पैदा-करनेवाले का नाम था, उस की पहचान के लिये दियागया. जिस वक्त में वह पैदा हुआ, उन दिनों में बुध का मज़हब बिलकुल हिन्दुस्तान में और खासकर उत्तर की तरफ़ ज्यादः ज़ारी था और ब्राह्मणों का मत, जो अब सारे हिन्दुस्तान में फैला है, फ़क़त छोटे से मुल्क कन्नोज में चलित था. यह मज़हब रामायण और महाभारत से मज़बूत और जारी हुआ; ग़ायद बौद्ध और जैनियों का मज़हब उस के पीछे हुआहो. अगर्चिः यह बात साबित करना आसान नहीं है पर जब से वेद बेरिवाज होगये और बौद्ध का मज़हब हिन्दुस्तान से जातारहा, तबसे ब्राह्मणों ने देवता और देवी के पूजने का इन्तिज़ाम बान्धा.

हम ने उपर लिखा है कि सिकन्दर के दोसौ बरस पेश्तर, ईरान के दारा नाम बादशाह ने हिन्दुस्तान के एक बड़े हिस्से को फारस के राज में शामिल किया था और हिन्दुस्तानी रैअत पर बड़ा भारी कर लगाया. सिकन्दर यूनानियों की थोड़ीसी फौज के साथ, जिस को उस के बाप फैलक़ूस ने लड़ाई का इल्म सिखलाया और अपनी अक़्लमन्दी और जवांमर्दी से उन्हें दुरुस्त किया था, ईरान की सल्तनत को

Digitized by Google

बिगाड़कर, सिन्धुनदी के कनारे पर आपड़ुंचा. तीन बरस तक उस की फौज ने लड़ाई और कूच में बड़ी बड़ी सख्ती उठाई और पहाड़ों में जो बरफ से ढंके हुये रहते थे, जाड़ों की लड़ाईयों में बड़ी ईजा और तक्लीफ़ खैंची थी; और उस ने उन की मेहनत और मशक्कत के एवज़ में, हिन्दुस्तान की लूट से उन को इनाम देने का इक़रार किया था. काबुल को, जो हिन्दुस्तान का दरवाज़ा मशहूर है, फतेः कर, सिन्धुकी दोनो तरफ़ के सरदारों को तसलीम करने को तलब किया और थोड़ीसी फौज को सिन्धु नदी पर पुलबान्धने के वास्ते भेज, आप दर्म्यान के मुल्कों के फतेः करने में मशगूल हुआ. अगर्चिः सिन्धुनदी के उपर की तरफ़ के पहाड़ी लोग जवांमर्दी में कुछ कम न थे, मगर सिकन्दर के पुराने बहादुरों के हुनर और दिलेरी के सामने कोई रोकटोक न करसका. आख़िर को उह सिन्धु के कनारे पर आय, कश्तीयों की एक बहर तयार कर, अटकतक पहुंच गया, जहांपर पुल को बनाते हुये देखकर, यह इरादः किया कि हिन्दुस्तान में उसी तरफ़ से चलें जहां हमेशः से बादशाहों ने हिन्दुस्तान पर चढ़ाईयां की हैं. सिकन्दर जबकि सिन्धुपार उतरा, उन दिनों उस की उमर तीस बरस की थी और उस ने कोई लड़ाई न लड़ी कि जिस में उस ने फतेः न पाई हो और न किसी मुल्क में गया कि जिस को वह अपने ताबेअ में न लाया. निदान अवानी के हौसले में, अटक का पुल उतर, एक लाख बीस

Digitized by Google

हज़ार फौज से हिन्दुस्तान पर हमलः किया. उस ज़माने में, सिन्धु नदी की पूरब तरफ़ के मुल्कों में तीन राजाओं का राज था; पहले का नाम अभिसेरीज, जिस का राज पहाड़ों में था शायद वह कश्मीर होः दूसरा टैकसीलिज़, सिन्धु और झीलम नदी के बीचवाले मुल्कों का राजा था; और तीसरा पोरस, जो पाण्डवों के ख़ानदान में होगा जिस का राज झीलम नदी से लेकर पूरब को हस्तिनापुरतक चलागया था. सिकन्दर के तवारीख़-लिखनेवालों ने दो राजाओं को पोरस के नाम से बयान किया है, जिन में से एक हस्तिनापुर में और दूसरा पञ्जाब में राज करता था. वे दोनों चन्द्रवंश में थे. अभिसेरीज ने अपने भाई को अच्छे अच्छे तोहफ़ः लेकर सिकन्दर के खुश्करने को भेजा, और टैकसीलिज़ ने सिकन्दर के साथ बड़ी मुहब्बत से मुलाक़ात कर, उस को मदफ़ौज़ अपनी टैकसला राजधानी में लाकर ज़ियाफ़त की, जहां सिकन्दर ने अपने बीमार सिपाहियों को छोड़, और थोड़ासा लश्कर सरकशी रोकने के लिये रख, आप चुनी हुई फौज़ साथ लेकर, झीलम नदी की तरफ़, जो पञ्जाब के दर्याओं में से एक दर्या है, चला.

उस वक़ बरसात का मौसम शुरूअ होने लगा था; झीलम ऐसी चढ़ी थी कि उस का पाट आध-कोस तक का होगया, और पानी बड़े ज़ोरशोर से बहता था. राजा पोरस अपनी फौज समेत उस नदी के दूसरे कनारे पर पड़ा

Digitized by Google

था, और सिकन्दर की राह रोकने का क़सद किया. उस की फौज खूब इन्तिज़ाम से जमअ़ उई थी और सिकन्दर को कहीं से उतरने की जगह न रही. राजा पोरस ने हाथियों की एक बड़ी लंबी क़तार नदी के सामने लड़ाई के लिये खड़ी की थी और सब तरफ़ से पारहोने का रस्ता बन्द किया था. पोरस किसी तरफ़ से ग़ाफ़िल न था और जब सिकन्दर नदी पार उतरा चाहता था, तब हिन्दुओं की फौज उस का मुक़ाबला: करती थी. आख़िर जब सिकन्दर को यह मअ़लूम उआ कि क़बर्दस्ती से उतरना नामुम्किन है, क्योंकि उस के सवार हाथियों के सामने सफ़ न बान्ध सकते थे, तब उस ने हिकमत से दर्या पारहोने का इरादः किया. वह इस बात को दर्याफ़्त कर कि फौज के पड़ाव से ऊपर की तरफ़ दस कोस के क़रीब दर्या में टापू है, एक आंधीमेह की अंधेरी रात में जबकि, बादल, गरजते थे, मौका पाकर ग्यारह हज़ार पुराने सिपाहियों को साथ ले, उस टापू की तरफ़ आप चला और रातोंरात दर्या के पार हो, और दिन निकलतेही उस नदी के पूरब कनारे पर पहुंच, उस ने पोरस के हरावल को हटा-दिया. इस बात के सुनतेही पोरस ने यह क़यासकर कि दुश्मन की फौज से फ़क़त एक झुंड चला आता होगा, अपने बेटे को थोड़ीसी फ़ौज के साथ दुश्मन के हटाने के लिये भेजा. इतने में क्रेटरस नाम एक यूनानी सरदार ने, उसी जगह पर फ़ौज की सफ़ बान्धी जहां सिकन्दर

Digitized by Google

की लश्करगाः पेश्तर से थी, जिस से, पोरस को यक़ीन हुआ कि सिर्फ़ थोड़ेही से लोग नदीपार हुये होंगे. निदान पोरस का बेटा मारागया और उस की फ़ौज ने शिकस्त पाई. राजा पोरस इस बात का धौरा और सिकन्दर के आप नदी पार होने का हाल सुनतेही, चार हज़ार सवार और तीस हज़ार प्यादे, बहुतेरे हाथी और रथ साथ लेकर, उस का सामना करने को आप चला. सिकन्दर के साथ, जैसा हम ऊपर लिख चुके हैं, फ़क़त ग्यारह हज़ार आदमी मगर सब पुराने सिपाही थे. लड़ाई बहुत देर तक रही और आपस में दोनों तरफ़ की फ़ौज खूब लड़ी. पोरस की फ़ौज ने बड़ी जवांमर्दी ज़ाहर की, पर सिकन्दर के सवारों के सामने उन का कुछ क़ाबू न चलसका. लाचार तीसरे पहर के वक़्त हिन्दू भाग निकले पर राजा पोरस एक बड़े हाथी पर चढ़ा हुआ लड़ता रहा. सिकन्दर ने उस की बहादुरी देखकर तअज्जुब किया और उस की जान बचाने के लिये उसे कहला भेजा, कि जो वह तस्लीम करे, तो अपनी इज्ज़त हुर्मत में फ़र्क़ न पावेगा. आखिर को राजा पोरस इस बात पर राज़ी हुआ और सिकन्दर के हुजूर में बेखौफ़ चलाआया.. जब सिकन्दर ने उस से पूछा कि हम तुमारे साथ क्या सलूक करें, तब उस ने निडर होकर यह जवाब दिया कि जैसा राजाओं को मुनासिब है. सिकन्दर ने उस की बेखौफ़ी और बेतकल्लुफ़ी से निहायत खुश होा, उसे आज़ाद कर, न सिर्फ़ उस का

Digitized by Google

मौरूसी मुल्क उस को दिया बल्कि और भी बढ़ाया. पोरस, सिकन्दर की सखावत को उम्दः समझ, हमेशः उस का सच्चा दोस्त बनारहा.

सिकन्दर ने आगे के लिये उस नदी की राह को अपने हाँ तख़्त में रखने के लिये, उस की दोनों तरफ़ एक एक शहर बसाने का हुक्म दिया. झीलम और चनाब नदी के बीच का मुल्क जो निहायत आबाद था यहांतक कि उस में तीस पैंतीस नगर से कम न थे, पोरस के तअल्लुक में रक्खे. इस के बअद सिकन्दर चनाब और रावी के पार उतरा; वहां उस ने एक कौम की खबर सुनी जो ग़ालिब अग्रख में तातार के रहनेवाले थे, और हिन्दुस्तान में आ, बसे और सङ्गला नाम जगह पर उस से लड़ने को तयार थे. सिकन्दर ने बड़ी मारधाड़ कर, पीछे उन को फ़तेः कर लिया; उन में से सोलह हज़ार मारे और सत्तर हज़ार क़ैद किये गये, बाक़ी रहे बचे सब पहाड़ों में भागगये.

सिकन्दर वहां से चलकर सतलज नदी के कनारेपर पहुंचा और वहां उस ने मगधदेश के ज़बर्दस्त राजा का हाल सुना जो छः लाख प्यादे और तीस हज़ार सवार और नौ हज़ार हाथियों की भीड़ रखता था. एक तवारीख़ लिखनेवाले ने ऐसा लिखा है कि राजा चन्द्रगुप्त जो पीछे मगध के सिंहासन पर बैठा था, सिकन्दर की फ़ौज में आया और उस ने सिकन्दर के साथ निहायत निधड़क बातें कीं. मअलूम

Digitized by Google

होता है कि सिकन्दर ने इसी की ज़बानी मगध के राज की ताक़त और उस की राजधानी पाटलिपुत्र की ख़ूबसूरती, जिस को साढ़े चार कोसतक कहते हैं, सुना होा. सिकन्दर ने उस नगर के क़िले पर अपना निशान खड़ा करने का मनसूबः कर, अपने लश्कर को आगे कूचकरने और सतलज पार होने का हुक्म दिया; मगर उस के सिपाही ज़खमी मांदे और थके हुये थे, और जिस दिन से वे हिन्दुस्तान में आये, तब से मेंह लगातार बरसता रहा, इस सबब उन की हिम्मत और हौसलः कम होगया और उन्हों ने आगे बढ़ने का इन्कार किया. सिकन्दर ने धमकी डाढ़स तसल्ली और सुहाती बातों से, बहुतेरा उन को समझाया, मगर हरगिज़ साथ चलने को मंजूर न हुये. आख़िर लाचार होकर, उन ने इस नदी से आगे फ़तेः करने न पाया, लेकिन् लौटते वक़्त उस ने अपनी चढ़ाई का निशान छोड़ने के लिये, बारह बड़ी बड़ी बेदी बनवाईं. सिकन्दर ने बिलकुल हिन्दुस्तान के फ़तेः करने से ना उमैद होकर, सिन्धु नदी को अपनी हद्द मुक़र्रर किया. फिरते वक़्त उस नदी की पायमादग्र करने का इरादः कर, उस ने कश्तियों की एक बहर बनवाया और अपना लश्कर चढ़ाकर, आप भी एक नावपर सवार होा, उस नदी की राह बड़ी धूम धाम से चला. जबकि वह मुलतान और वक्ह के सूबों के बीच में गया, तब उस से उस राह में बहुत मुज़ाहिमत हुई, बल्कि एक नगर घेरने के वक़्त, उस के निधड़क जापड़ने के

Digitized by Google

सबब से, उस की जान की जोखिम् थी. आख़िर को अपनी अक़्लमंदी और फ़ौज की दिलेरी से, सब रोक टोक दूर कर, सिकन्दर उस मकाम पर पहुंचा जहां सिंधु समन्दर के साथ मिलती है. सिकन्दर का हौसला ऐसा बड़ा था कि आपद और सब बादशाहों में देखा नहीं गया है. उस के दिल में यह मुराद थी कि हिन्दुस्तान और ईरान के दर्या और बहरे क़ुल्ज़ुम में, समन्दर की राह से, तिजारत करने का रस्ता जारी करे; इसी लिये उस ने उस जगह पर जहां सिंधु समन्दर से मिलती है, कई बन्दर बसाये, और एक बहर जहाज़ों की तैयार करवा, निआरकस को सपुर्द कर, फ़रात नदी के मुहाने तक आने का हुक्म दिया. यह सफर जो इस वक़्त हरएक जहाज़ी आसानी और जल्दी से कर सक्ता है, उस ज़माने में एक बड़ी बात थी. निआरकस इस अमर में कामयाब हुआ, और जो सिकन्दर जीता रहता तो बेशक् इस तरी की राह से, बड़ी बड़ी दूर के देशों में तिजारत जारी करता; लेकिन् हिन्दुस्तान से लौटजाने के दो बरस बअ्द, बाबल् की दल्दलों में उसे तप आई और बत्तीस बरस की उमर में मरगया. अगर्चि सिकन्दर हिन्दुस्तान में कुछ ज़ियादः वक़्त नहीं ठहरा था, मगर अपने बअ्द आनेवाले बादशाहों के लिये रस्ता खोल दिया. इस बात में कुछ शक नहीं है कि उस का इरादः था कि और नई फ़ौज लेकर फिर हिन्दुस्तानपर हुल्लः करे; यक़ीन है कि जो वह ऐसा करता तो बिल्कुल हिन्दुस्तान को

Digitized by Google

अपने क़ाबू में कर लेता, क्योंकि पच्छिम की तरफ़ के पहाड़ी मुल्कों को क़ाबू कर, हिन्दुस्तानी देशों का जीतना, जो बहुधा मैदान हैं, क्या दुश्वार था. सिवाय इस के, जबकि राजा पोरस की बड़ी बहादुर फ़ौज उसको अपने मुल्क में पैठने से न रोक सकी, तो बेशक पूरब की तरफ़ के कमज़ोर राजा उसे क्या खटका समझे.

जो लोग सिकन्दर के साथ आये थे, उन्हों ने उस वक़्त के हिन्दुस्तानियों के हालेहाल लिखे हैं, और उन अहवालों में से जो नीचे मज़कूर हैं, उन लोगों को, जो हिन्दुस्तान के ख़बरें से वाक़िफ़ हैं, यह बात मअलूम होजायगी कि हिन्दुस्तान के पुराने बाशिन्दों के रहन, इस वक़्त के रहनेवालों के तरीक़ों से कितने मिलते हैं. पहले तो हिन्दुस्तानियों का बदन दुबला होता था; दूसरे ग़ल्ला अनाज और तरकारी खाकर रहते थे; तीसरे उनकी हरतरह की आतें होती थीं; और हमेशः अपने घरानों में एकही पेशः मौरूसी जारी रखते थे; चौथे उन की शादी सातवीं बरस की उमर में होती थी और दूसरी जात के साथ शादी करने का मनअ था; पांचवें कानों में बाले पहने थे और उन के जूते और घूंघट रंगबरंग के होते और अपने सिर और कानों को डंकेजुदे रखते थे; छठें अपने माथेपर तरहबतरह के तिलक देते थे; सातवें ग़ल्ला अमीर उमराव हाला लगाते थे; आठवें दोदस्ती तलवारें और कमण्डे बान्धते थे; नवयें हाथियों को उस

Digitized by Google

तरह पकड़ते थे जैसा कि इन दिनों में पकड़ते हैं; दसवें निहायत सफ़ेद रूई के कपड़े बुनते थे; ग्यारहवें चिट्ठी बड़ी बड़ी होती थीं, मगर लिखनेवालों ने इस बात में मुबालग़ः किया, शायद वे दीमक को कहते हों; बारहवें बड़ी बड़ी नदियों के कनारे पर काठ के मकान बनाकर रहते और बहाव के वक़्त ऊपर को हटालेते थे; तेरहवें ताड़के दरख़्त भी होते थे; चौदहवें बड़ के दरख़्त अक्सर होते कि जिन के साये में फ़क़ीर बैठे रहाकरते थे.

इन बातों से मअ़लूम होता है कि जो तरीक़े अब हिन्दुवों में हैं, वे उन तरीक़ों से बहुत खिलाफ़ नहीं हैं जो कि सिकन्दर के वक़्त में, जिस को दो हज़ार एकसौ बरस गुज़रे, जारी थे. यह बात भी लिखने के लाइक़ है कि जो सिकन्दर का नाम हिन्दुओं की किसी तवारीख़ या लिखावट में नहीं पायाजाता है, इस से यह साफ़ निकलता कि उन की इतिहासी किताबें जो हमारे पास हैं, वे कैसी अधूरी हैं, मगर मुसल्मानों ने सिकन्दर के नाम को जिस को वे एक बड़ा बहादुर समझते हैं हिन्दुस्तान में फैलाया था. जहां२ उन्हों ने समन्दरपार के मुल्कों को फ़तेः किया, वहां भी उस का नाम मशहूर किया, और दूर के अफ़्रीक़ा जावा और सुमात्रा के रहनेवाले अबतक सिकन्दर की चढ़ाइयों का साका गाते हैं. इति

Digitized by Google

तीसरा बाब।

जब कि सिकन्दर ने हिन्दुस्तानपर चढ़ाई की, तब महानन्द जिस को प्रमरा की जात और तक्षक के नसल में से कहते हैं, मगधदेश की सलतनतपर पाटलिपुत्र नाम नगर में राज करता था, और वह बीस हज़ार सवार और दो लाख प्यादे बहुतेरे हाथी वग़ैरः के साथ, सिकन्दर का साम्ना करने को तैयार हुआ था; पर जैसा हम बयान करचुके हैं, सिकन्दर को अपनी फ़ौज की सरकशी के सबब सतलजपर से लाचार हो उल्टा फिरना पड़ा.

महानन्द को उस के दीवान ने मरवाडाला, और कहते हैं कि महानन्द के पीछे उस के आठ बेटों ने बारह बरस तक, याने सम्बत् ईसवी से तीनसौ पन्द्रह बरस पहिले तक, मिलजुल कर राज किया. उन में से एक बेटा चन्द्रगुप्त नाम नाइन से पैदा था, और अगर्चिः वह निहायत अक़लमन्द था मगर उस के और भाई उसे हक़ीर समझते थे. कोई कोई कहते हैं कि चन्द्रगुप्त को उस के भाईयों ने, पाटलिपुत्र से निकालदिया था और वह हिन्दुस्तान के देशों में तबाहहाल फिरतारहा; आख़िर को वह अपने दोस्त दीवान चाणक्य नाम की मदद से, जिस ने राजकुमारों को मारडाला राज गद्दीपर बैठा. इस बात को दूसरे तारीख—लिखनेवाले कितनी तरह से बयान करते हैं अगर्चिः मतलब एक ही है;

Digitized by Google

पर सब आपस में इस बातपर लिखते हैं कि चाणक्य इतना भारी गुनाह करने से, ऐसा पछताया कि उस के पराछित में उस ने बज़ुत ही तपस्या की, और उस का पराछित उस वक़्त की तारीखों में निहायत मशहूर होकर, कहानियों में लिखा गया.

कहते हैं कि चन्द्रगुप्त ने एक मोरी नाम नया ख़ानदान बनाया, पर इस बात को उस बात से कि वह महानन्द का बेटा था, मुताबिक करना निहायत मुश्किल है; मगर उस ने मोरी की नसल बनाया होगा या न बनाया होगा, पर बज़ुतेरे तवारीख़दां इस बातपर एकज़ुये हैं कि वह मोरी के ख़ानदान में था.

सिकन्दर के मरने के पीछे, उस के सिपःसालारों ने उस की सलतनत को आपस में हिस्सः करलिया. सल्यूकस को बाबल का सूबः मिला जिस में वे सारे देश थे, जो सिन्धु के नज़दीक बसे हैं. सिकन्दर के सिपःसालारों में सल्यूकस बड़ा हिम्मती था और उस ने हिन्दुस्तान पर फिर चढ़ाई करने का इरादः किया. कहते हैं कि हिन्दुस्तान में आतेवक़्त, चन्द्रगुप्त की फ़ौज ने उस का सामना किया. इस चढ़ाई को कई तरहपर लिखते हैं;- यूनानियों के मुताबिक सल्यूकस की फ़तेः हुई, पर इस बात में इस लिये कुछ शक होता है, कि उस ने चन्द्रगुप्त से सुलह की और उस को वे सब देश देदिये, जो यूनानी सिन्धु की पूरबतरफ़ अपने क़ाबू में लाये थे, और उस के पट्टे में चन्द्रगुप्त से सालानः पचास हाथी, खाः ख़िराज

Digitized by Google

ख़ाः नज़र के तौर पर, लेने ठहराये. सल्यूकस ने अपनी बेटी की शादी चन्द्रगुप्त के साथ कर दी और बाबुल और पाटलिपुत्र के दौलतों में, मइत्मत और मेल रखने के लिये, मेगस्थनीस को भेजा कि वह उस की तरफ़ से एलची की तरह चन्द्रगुप्त के दरबार में रहाकरे. मेगस्थनीस से, पुराने तारीख़-लिखनेवालों ने हिन्दुस्तान का हाल ज़ियादः पाया है, अगर्चिः वह कभी कभी ऐसी बातें लिखता है जिनपर एत्मतमाद न होसके, पर हिन्दुस्तान के बाब में, उस का बयान बहुत दुरुस्त है और उस की बहुतेरी बातें औरों से साबित होती हैं; पर बड़े अफ़सोस की बात है कि उस का असली रोज़नाम्चः खो गया और उस में से सिर्फ़ वही अक़्वाल हमारे हाथ आये जो कि पिछले तवारीख़ लिखनेवालों ने नक़ल करलिये हैं.

जो सब से सच्ची लिखावटें हमें मिलती हैं, उन से मअलूम होता है कि चन्द्रगुप्त ने चौबीस बरस राज किया. वह ईसवी सम्वत् के दोसौ बाइसवे बरस पेश्तर मरगया, और उस के बअद उस का बेटा बिन्दुसार राजगद्दीपर बैठा.

मगध के राजा जो कि हिन्दुस्तान के उस हिस्से में राज करते थे जिस में गङ्गा बहती है, और जिन का राज कई खानदानों में, आठसौ बरस बअद ईसवी सम्वत् के तीन-सौ पचास बरस पेश्तर से लेकर, चारसौ पचास बरस पीछे तक रहा, वे हिन्दुस्तान के राजाओं में बड़े अक़्लमन्द थे और उन में चन्द्रगुप्त का खानदान मश्हूर था. अगर्चिः

बुख़ारे की तरफ़ से लगातार चढ़ाईयां होती थीं पर कहते हैं कि चन्द्रगुप्त के जानशीनों के वक़्त में, मुल्क ऐसा आबाद और इस कदर खुश कि पेश्तर कभी ऐसा न हुआ था. राजा और परजा दोनों अमन् ओ अमान् में खुश गुज़रान् थे. आपस में तिजारत अच्छीतरह होती और बाहर की सौदागरी ज्यादती से जारी थी, और जो बंगाले का सूबा समन्दर के कनारेपर है, उन के ताबेअ् था, इस सबब से मअ्लूम होता कि वे समन्दर की राह से उन सब देशों में जो हिन्द के समन्दर के आसपास हैं, तिजारत किये होंगे. पाटलिपुत्र से लेकर सिंधुतक एक आही सड़क बनी थी और हरएक मञ्जिलपर एक छोटासा मनार बना हुआ था. पाटलिपुत्र से बरोच को जो बम्बई के पास है, एक और राह जाती थी. वे अपने मक़दूरभर, इल्म की तरक्क़ी में मशगूल थे और आम लोगों की ज़बान में किताबें बनवाकर, उस के फैलाने में कोशिस करते थे. जबकि मगध के राजा आम ज़बानों के सुधारने की तदबीर में लगे थे, तो उसी वक़्त में कहते हैं कि संस्कृत ज़बान भी निहायत दर्जेतक सुधर गई.

जिन दिनों में कि मगध के राजा अपने राज को बुख़ारे के बादशाहों की चढ़ाईयों से बचाते थे, उस वक़्त की किताबों से मअ्लूम होता है कि मगध के राजखानदान में भी बिगाड़ था. उन चढ़ाईयों और आपस के झगड़ों से उन की ताकत कम होगई और उन के मुल्क और मज़हब का इन्तिजाम

Digitized by Google

बिगड़चला. मअ़लूम होता है कि वे बुद्धके मतपर थे; जबतक कि उन का दख़तियार रहा तबतक ब्राह्मण, जिन्हों का बस क़ानौज में चलता था, हिन्दुस्तान में अपना दख़ल न करसके. हमेशः से यह बात मअ़ल्लर है, कि बुद्धवालों से बड़तेरी सख़्त लड़ाइयों के पीछे, ब्राह्मणों का मज़हब ज़बर्दस्त हुआ. उन से कितने सैकड़े बरसोंतक बौद्धधर्म्म रफ़्तः रफ़्तः हिन्दुस्तान से निकाला जाता था. उस वक़्त का हाल ऐसा गड़बड़ है कि उस के बयान से कुछ फ़ाइदः हासिल नहीं हो सक्ता है. उन्हीं दिनों में राजपूतों की कईएक छोटी छोटी रियासतों ने, न सिर्फ़ राजपुतानही में, बल्कि हिन्दुस्तान के उत्तरतरफ़ भी बरपा होकर तरक्क़ी पाई थीं. उन में से कितने एक राज अबतक भी हैं, जैसे मेवाड़ या उदयपुर, जोधपुर या मारवार, और इन राजाओं के खानदानों में जो तवारीखें मौजूद हैं, उन से उन के पुराने अहवाल दर्याफ़्त किये जा सकते हैं.

इन राजपूतों की रियासतों में, अक्सर ब्राह्मणों का मज़हब जारी था, और इस में कुछ शक़ नहीं है कि ब्राह्मण जो हिन्दुस्तान में अपना दख़तियार पैदा करने के लिये कोशिश् करते थे, इन राजपूतों से उन को जियादः मदद मिली. शायद वह अग्निकुल का किस्साः इस बात से तअ़ल्लुक़ रखता हो जो पुराण में लिखा है, यज्ञने राजपूतों के बुज़ुर्ग इस लिये पैदा कियेगये थे, कि वेद के न माननेवालों को हिन्दुस्तान से निकालें. वह किस्साः यह है कि जब ऋषियों

Digitized by Google

ने, जो आबू के पहाड़पर रहते थे, शिकायत की कि वेद पैरों के नीचे डाले गये और ज़मीन राक्षस याने बुद्ध पंथियों के क़ब्ज़े में है, तब उनों ने ब्रह्मा से हुक्म पाया कि क्षत्रियों की क़ौम को, जो परशराम ने नेस्त ओ नाबूद किया, नयेसिरेसे पैदा करें. उन्हों ने उस हुकुम को इस तरह से बजाया कि गङ्गाजल छिड़ककर, अग्निकुण्ड को पाक किया; तब उस में से चार बहादुर आदमी निकले जो अग्निकुल यज्ञने आगसे पैदाहुये कहलाये. इन दिनों के राजपूतों के कितने खानदान दावा करते हैं कि हम उन अग्निकुलों की नसल में, जो ब्रह्मा के मज़हब को फैलाये थे, चले आये हैं.

अब हम उन मन्दिरों का ज़िक्र करते हैं जिन को बौद्ध मज़हबवालों ने हिन्दुस्तान में पहाड़ काटकर बनाया था. जबकि ब्राह्मणों ने बुद्धपंथियों को हिन्दुस्तान से निकाल दिया और वे लङ्का को चलेगये, तब उन्हों ने वहां ऐसी एक इमारत बनाई कि जो ज़मीनभर की इमारतों से बहुत बड़ी है. उन्हों ने पहाड़ों को काट काट कर, पास पास कई मन्दिर बनाये, जिन में सब से बड़ा मन्दिर साढ़े छयालिस गज़ लम्बा, तीस गज़ चौड़ा और पन्द्रह गज़ उंचा है, जिस में बुद्ध का पुतला दश गज़ लम्बा लेटाया हुआ रक्खा है.

जिन मन्दिरों को बुद्धवाले छोड़कर चले गये थे, उनपर ब्राह्मणों ने तुर्त्त अपना क़ब्ज़ः करलिया और बुद्ध के पुतले की जगह विष्णु और शिव की मूरतें रक्खीं. ब्राह्मणों ने इस

Digitized by Google

शिव के मन्दिरों के बनाने में ज़ियादःतर रौनक़ दी और बुद्धवालों के मकानों के सिवा और जगह चुनकर, चन्द मन्दिर बनाये. इलोरा के पहाड़ों में जो दक्खन में समन्दर से थोड़ी दूर हैं, उन्हों ने ऐसे मन्दिर खुदवाये जो कि हिन्दुस्तान की सब इमारतों से अच्छे हैं; मगर एक पहाड़ में जो पांच मीलतक नम्बर की सूरत है, और और मन्दिर कोई देखने कोई लिखने बने हैं, जिन में सब से उमदः कैलाश नाम मन्दिर थाने महादेव का शिवाला है. जितनी तम्बर्जुब की कारीगरी घरबनाने और मूरत के गढ़ने में ख़ासकी, उतनी वहां ज़ाहिर की गई है. पहाड़ को खोदकर पुल, सीढ़ी, पूजाघर, खम्भे, बरामदे, मनार और बड़ी बड़ी मूरतें बनाई हैं; कोठड़ियों की दीवारोंपर हिन्दुओं के देवताओं की मूरतें और महाभारत रामायण की खड़ाईयां खुदी हुई हैं. सब हिन्दुओं के देवताओं में से जो कि हिन्दुस्तान में मशहूर हैं, कोई ऐसा देवता न होगा जिस की मूरत इलोरा में मौजूद नहीं होगी. उन मन्दिरों के बनाने का ठीक वक़ जानना मालुमकिन है, लेकिन् चाहिये कि वे उस दश या ग्यारहसौ बरस के अन्दर, जो हिन्दुमज़हब के दक्खन में फैलने से लेकर मुसल्मानों के इस देश में आनेतक का है, बनेहों, जबकि हिन्दुओं के मतकी तरक्की थी और ब्राह्मणों का कोई दुश्मन नज़र में न आता था और राजाओं को ऐसी ऐसी इमारतें बनाने का हौसला और फुर्सत थी. इति॥

Digitized by Google

चौथा बाब।

हिन्दुस्तान से बुद्धमज़हब उठजाने के पीछे, राजा विक्रमादित्य का सम्वत जुआ. चूंके इस नाम के राजा आठ से कम नहीं हुये हैं, इसलिये नामी विक्रमादित्य का जानना मुश्किल है, मगर कहानी और कहावतों से मअ़लूम होता है कि वह विक्रमादित्य जिस का इस किताब में ज़िकर है, ज़बर्दस्त देव शालिवाहन के हाथ से मारागया. चूंकि इस नाम का राजा जो उज्जैन में राज करता था, उसी से सम्वत् का हिसाब शुरूअ़ होता है, इस वास्ते यही मुनासिब है कि उस को राजा विक्रमादित्य ठहरावें. विक्रमादित्य प्रमरा की कौम में था जिस को अब मुख़्तसर करके पवांर कहते हैं. अगर्चि: इस नसल् का हाल साफ़ नहीं लिखा है, पर इतना दर्याफ़्त होता है कि इस नसल् के राजा हिन्दुस्तान में बहुत से देशों पर राज करते थे और विक्रमादित्य के वक़्त से बहुत पेश्तर, अवन्ती यअ़ने उज्जैन उन की राजधानी थी. कोई कहते हैं कि विक्रमादित्य उज्जैन में राज करता था, और कोई कोई लिखते हैं कि वह मोरी के नसल् के राजाओं में से मगध का आठवां राजा था, और पाटलिपुत्र नाम

Digitized by Google

नगर उस की राजधानी थी; इस इख़्तिलाफ़ की वजः हम नहीं बयान करसक्ते हैं. विक्रमादित्य ईसवी सम्वत् के कुप्पन बरस पेश्तर सिंहासनपर बैठा. वह अपने ज़माने के राजाओं के बीच लड़ाई और सुलह में सब से नामी था, और शाइरों ने उस की शान ओ शौक़त की बहुत तारीफ़ की है और उस के प्रताप के बाब में निहायत ज़ियादः लिखा है, यहांतक कि उस के हुक्म के बग़ैर, चुम्बक लोहे को और कहरुवा घास को नहीं उठासक्ता था. वह ऐसा परहेज़गार और बेतकल्लुफ़ था कि महाराज होता, चटाईपर सोता और अपनी कोठड़ी में पानी का घड़ाछोड़, कोई और सामान नहीं रखता था. अपने बड़ों की निसबत् इल्म बढ़ाने में ज़ियादः कोशिश करता था. हिन्दुस्तान की हरएक तरफ़ से पण्डित बुलाये जाते और वे बहुत सी दनअम पाते थे. उस ज़माने के बड़े बड़े आलिमों में से, चौदह पण्डित उस के दरबार में थे, जिन में कालिदास शाइर बड़ा नामी था. विक्रमादित्य के वक़्त में संस्कृत ज़बान कमाल को पहुंची थी. कहते हैं कि विक्रमादित्य आप एक ईश्वर को मानता था, लेकिन् वह देवता और देवियों की पूजा का मददगार था जो बौद्धों के निकाले बअद, आम लोगों में जारी थी और उस ने महाकाल नाम शिव की एक बड़ी मूरत, अपनी राजधानी उज्जैन नगर में थापी थी. यह मूरत उन आठ बड़ी मूरतों में से थी जो शिव की पूजा राइज होने के

Digitized by Google

वक़्, हिन्दुस्तान की कई जगह में रक्खी गई थीं. बिक्रमादित्य बुढ़ापे में, शालिवाहन नाम बड़े बहादुर राजा के हाथ से मारा गया; शालिवाहन ने दक्खन के इतने देश फ़तेः करलिये कि उस तरफ़ बिक्रम का सम्वत् भूलने लगा और शालिवाहन का फैलने.

राजा बिक्रमादित्य के वक़् से थोड़े दिन पेश्तर, सौमित्रि जो राम के नसल में और सूरजवंशी राजाओं में सब से पिछला था, मरगया और सूरजवंश का दुख़्तियार गङ्गापर के देशों से जातारहा जहां इक्ष्वाकु के वक़् से दो हज़ार बरस से जियादः तक क़ाइम था. हिन्दूशास्त्रों में लिखा है कि राम से लेकर सौमित्रि तक, छप्पन राजा हुये और हम को आगे मअ़लूम होगा कि राजपूतों में, इस पुराने घराने का नाम फिर नवेंसिरसे ज़ाहिर होनेलगा. मेवाड़ के राना जिन को अब गेहलोत कहते हैं, अपने को सूरजवंश में से दावा करते हैं. राठौर भी, जिन्हों ने कनोज में मुसल्मानों की चढ़ाई से थोड़े वक़् पेश्तर एक नया राज बनाया था, अपने तईं रामचन्द्र के दूसरे बेटे कुश की औलाद कहते हैं. बारहसौ ईसवी सम्वत् में, उन को मुसल्मानों ने कन्नोज से निकाल दिया और वे मेवाड़ में आ, बसे जहां उन्हों ने मुसल्मानों को इतनी मदद दी कि हिन्दुस्तान में जो जो फ़तेः पाई हैं, उन में बहुतेरी राठौरों की तलवार के ज़ोर से हासिल की थीं. कुश की दूसरी औलाद कछवाहे हैं जिस

Digitized by Google

घराने में राजा नल हुआ जो नलदमन के किस्से में मशहूर है. नल की नसल के राजाओं के क़ब्जे में, नरवर का बड़ा नामी क़िला था. अगर्चि: पन्द्रहसौ बरस तक, राजाओं में बहुतेरी उलट पुलट होती रही, पर उन का दखल वहां बनारहा. आख़िर कुछ थोड़ावक़्त गुजरा होगा कि सेन्धिया ने उन से उस क़िले को छीनलिया. जैपुर में आजकल के राजा कछवाहे के घराने में हैं; इसी तरह उत्तर हिन्दुस्तान के जो दो चार राजा बाक़ी रहे, वे भी राम की नसल में अपने तईं गिनते हैं.

उस वक़्त के क़रीब, उज्जैन का एक राजा था जिस को यूनानी तवारीख लिखनेवाले पोरस कहते हैं जो बेशक प्रमरा या पवांर होगा, और बयान करते हैं कि इसी राजा उस के तावेअ में थे. उस ने इसके बादशाह आगस्तस् के पास एक एलची भेजा और यह बात बड़े तअज्जुब की है, कि उस ने जो ख़त भेजा, वह यूनानी ज़बान में लिखा था. इस से बेशक मअलूम होता है कि यूनानी लोग, खा: बुखारा की सलतनत के सबब खा: समन्दर की तिजारत के बाईस से, हिन्दुस्तान में बहुत फैले थे.

अगर्चि: उज्जैन के राजा जो प्रमरा की कौम में से थे, विक्रमादित्य के वक़्त से लेकर मुसल्मानों की पहली चढ़ाई तक, हिन्दुस्तान में बड़े नामी थे, लेकिन् मअलूम होता है कि अन्धकी नसल के राजा जो हिन्दुस्तान में उत्तरतरफ

Digitized by Google

राज करते थे, जहां गङ्गा बहती है, उस वक़ से सब इखतियार पानेलगे. उन की राजधानी पाटलिपुत्र थी. उन के राज का ठीक हाल हमें नहीं मिलता, लेकिन यक़ीन है, कि उन का राज बढ़ाऊआ होगा, क्योंकि उस घराने की तअरीफ़ हम तक पहुंची थी और वहां उन की राजधानी अन्ध्रहिन्दू की राजधानी कहलाती थी. उसवक़ के हमी तवारीखवाले कहते हैं, कि उस घराने के राजा हिन्दुस्तान में सब से ज्यादः इखतियार रखते थे. जितना कि हम उसवक़ की अबतर तवारीख से ठीक ठहरासके, उस के मुआफ़िक़ मअलूम होता है, कि उस घराने के राजा मगध के सिंहासनपर ईसवी सम्वत् से बीस बरस पेश्तर बैठे और तीस राजाओं के वक़ में गुज़रेहुये साढ़े चारसौ बरस से ज्यादःतक, हिन्दुस्तान के राजाओं में महाराजा रहे; पर उसवक़ की सब तवारीखें ऐसा शुबहः से भरी हैं, कि हम नहीं दर्याफ़्त करसके कि ये राजा और घराने किस तरतीब से होतेगये. मअलूम होता है, कि उस ज़माने के आख़िर में, कनवां के घराने के चार राजा हुये जो उन देशोंपर हुकूमत करते थे, लेकिन हम यह नहीं कहसके हैं, कि ये राजा अन्ध्र के घराने में से थे, या नहीं. कहते हैं, कि कनवां घराने के पिछले राजा को, उस के दीवान सिपरिक ने मरवाडाला और आप एकसौ एकावन ईसवी में मगध के सिंहासनपर बैठा. चालीस बरस पीछे मुद्रक राजा हुआ; जो किताबें हमें मिलसकी हैं,

Digitized by Google

उन से मअ़लूम होता है, कि हिन्दुस्तान के राजाओं में से यह राजा बड़ानामी था. उस ने अन्धजातिक ख़ानदान को, ख़ाइम किया जो किसी किसी के कहने के मुआ़फ़िक़, पिछला घराना था और हिन्दुस्तान में सबपर बड़ाई रखता था. हिन्दुओं के इतिहासों में, गृहद्रक को करणदेव या महाकरण लिखा है. थोड़ाही वक़ गुज़रा है, कि काशी में ज़मीन खोदने से एक पत्र निकला, जिस में उस राजा के ज़मीन देने का हाल लिखा था और उस में उस राजा को तीनों कलिङ्गों का मालिक बयान किया था. जो यह मुबालग़ः न समझा जाय, तो साबित होगा कि मगध के राजा करण का राज, एक तरफ़ तेलिङ्गातक और बङ्गाले की खाड़ी के उसपार आराकानतक और बङ्गाले में समन्दर कनारेतक था, क्योंकि तवारीख़—लिखनेवालों ने तीनों कलिङ्गों की हद्द यही बयान किया है. करण ने अठारह बरस राज किया. तिस के पीछे उस का भाई राजगद्दीपर बैठा. करण के पीछे छः राजा लगातार हुये, जिन्हों का करण ही नाम होता रहा; इस को छोड़कर, उन के बाब में हम और कुछ नहीं जानते, लेकिन इतना हीं मअ़लूम होता है, कि करण का नाम न सिर्फ़ हिन्दुस्तान बल्के पूरब के टापूओं में बड़े अदब से याद करते हैं. इस से यह बयान होसक्ता है, कि हो न हो, उन करण नाम राजाओं ने जो समन्दर के तीन हिस्सों के मालिक थे, जहाज़ बनाये हों, और पूरब के द्वीपों में अपना दख़ल कर

Digitized by Google

लिया है. हिन्दुस्तानी लोग जबकि सख़ी आदमी की तारीफ़ करते हैं, तो उस को करण की मिसाल देते हैं, और हमारे ख़याल में तो इस से मगध देश के राजा करण से मुराद होगी जो बहुत पीछे हुआ है; न कदीम करण जिस का महाभारत में ज़िकर लिखा है.

मअ़लूम होता है, कि आन्ध्र नाम के राजा अपने घराने के राज के आख़ीर में, चीन से राबरत्त रखते थे, और चीन-वालों ने एक बार, जब कि हिन्दुस्तान में झगड़ा हुआ था, उन की मदद के लिये कुछ फ़ौज भेजी थी. पुराणों के मुताबिक आन्ध्र का ख़ानदान ईसवी सारसौ छत्तीस के क़रीब में होचुका, इसलिये हम बअ़ज़े बअ़ज़े पुराणों की तस्नीफ़ होनी, उसवक़्त में क़रार देसक्ते हैं. ज़िकर करते हैं कि इस ख़ानदान की नसल पुलोम से चलती है जो सब हिन्दुस्तान के राजाओं में नामी था और शायद उस के पीछे कोई ऐसा राजा न हुआ होगा. कहते हैं कि पुलोम ने बिलकुल हिन्दुस्तान को फ़तेः करलिया था, जिस से हम इतने हीं माने निकालते हैं कि वह अपने ज़माने में बहुत बड़ा राजा होगा. पूरब की तरफ़ उस ने हिन्दुस्तान की हद्द के बाहिरतक, देश जीत लिये थे और अग़लब है कि चीन-तक उस का अमल दख़ल हुआ हो. चीनवालों में उस का नाम इतना मशहूर था कि उन्हों ने हिन्दुस्तान का नाम पुलोमैन्ज़ोफ़् यअ़ने पुलोमा का देश रक्खा है. जब उस का

Digitized by Google

राज कमाल तरक्क़ी को पहुंचा, तब वह मुक्ति की आशा से छःसौ अड़तालीस ईसवी सम्वत् में, गङ्गा के बीच आपही आप डूबमरा.

फ़िरिश्तः की तवारीख़ में, उसवक़्त के एक बड़े राजा रामदेव की चढ़ाईयों का बयान लिखा है; मअ्लूम होता कि यह हिन्दुस्तान के किसी राजा का सिपःसालार था और अपने मालिक के मरनेपीछे राजगद्दीपर बैठा. शायद यह राजा पुलोम का जानशीन हो. उस ने बंगालेपर हमला किया और बंगाले की राजधानी को लूटा जहां बहुतसी दौलत उस के हाथ लगी. दूस के चार बरस पीछे वह मालवे को गया और उस को अपने ताबेअ् करके, हिमालय पहाड़ की तरफ़ अपनी फ़ौज लेगया. इस के बअ्द वह कश्मीर में गया और सब पहाड़ी राजाओं से ख़िराज ठहरालिया. उस का राज सत्तावन बरसतक रहा, जिस में हमेशः उस के मन की मुरादें हासिल होती रहीं. उस के मरनेपीछे उस के बेटों में झगड़ा पैदा हुआ और उस की फ़ौज का सेनापति प्रतापचन्द्र यह मौक़ा पाकर, आप सिंहासनपर कब्ज़ः करलिया और अपने स्वामी की भांति, आप भी लड़ाईयों में नामी हुआ. आख़िर जब उस ने ईरानियों के मअ्मूली ख़िराज देने में इन्कार किया, तब उन्हों की फ़ौज हिन्दुस्तानपर चढ़ आई और उस से न फ़क़त सब पिछला ही ख़िराज लिया बल्के कुछ और भी आगे को ठहराया. कहते हैं कि उस

Digitized by Google

के मरनेपीछे, उस के हर-एक सेनापति ने एक एक सूबे को अपने क़ब्ज़े में करलिया और इसी तरह से उस का राज जातारहा. हम इस बयान को और लिखावटों से मिला नहीं सके, मगर यह बात हो सकी है कि पच्छिमतरफ़ की चढ़ाई से नौशेरवां के हमले से मुराद हो, जिस ने बम्भनों के कौलपर, हिन्दुस्तान में क़न्नौजतक देश फ़तेः करलिये थे.

बिष्णुपुराण में जो मुसल्मानों की पहिली चढ़ाई के वक़ का बना है, इस पिछले खानदान की शिकस्त होने से, जो परेशानी हिन्दुस्तान पर पड़ी थी, उस का हाल इस तरहपर लिखा है कि चचियों की क़ौम अक्सर बरबाद होगई, और बड़तेरी क़ातों ने ब्राह्मणों से लेकर पुलिन्दों अपने पहाड़ी जंगली क़ातों तक, मगध, प्रयाग, मथुरा, कान्तीपुर, काशीपुर, कन्नौज और उन देशों में जहां गंगा बहती है, खाधीन होकर राज किये. गुप्त जो क़ौम शूद्र हैं, मगध के एक हिस्से में हुकूमत करते हैं. द्वारवत, कलिंगा के उन देशों में राज करता है जो कि समन्दर के कनारेपर वाक़ेअ हैं, और कलिंगा के दुसरे हिस्से में गोलों का राज है; मूमधानों ने जो देश बनारस और बंगाले की पूरब तरफ़ हैं, उन में दखल किया, सूरत और मारवार और नर्बदा के तीर के देशों में, शूद्र और अहीर राजा हुये और सिन्धुनदी के कनारे के देशोंपर मलेछोंने अपना क़ब्ज़ः किया. इति॥

Digitized by Google

पांचवां बाब।

अन्ध्र का ख़ानदान बिगड़ने के बअद, जैसा कि हम अभी पिछले बाब में बयान करचुके हैं, हिन्दुस्तान के उत्तरतरफ़ में हरएक मुल्क का सूबादार आप राजा बनबैठा. हिन्दुस्तान में फिर भी ख़राबी और परेशानी आनपड़ी और सिन्धुनदी के कनारेपर एक नया दुश्मन आपहुंचा, जो और दुश्मनों की निस्बत जिन्हों ने उस वक़्तक सिन्धुदर्या के पार हो हिन्दुस्तान को वीरान किया, ज्यादःतर जबर्दस्त था. ये दुश्मन मुसल्मान थे जिन्हों ने, पहले, पच्छम के देशों गुजरात और राजपुताने पर चढ़ाई की. अब हम पूरब के सूबों के बयान को छोड़ देते जिन में कोई ऐसी बात नहीं पाईजाती जो याद करने के लाइक हो और उन क़ौमोंपर तवज्जुः करते हैं, जो सिन्धुनदी के पास रहते हैं.

मुसल्मानों की चढ़ाई से मेवाड़ यअने उदयपुर के राजा, जो उस वक़्त चित्तोड़ में राज करते थे, फ़िथाद: मचक्कर होनेलगे. यह राज-ख़ानदान जो अब हिन्दुस्तान में बड़ुत नामी है, नविश्तों की सनद और पच्छमवाले हिन्दुओं के इक़रार से, राम के बड़े बेटे लव की नसल् अपने को समझते हैं. वे पेश्तर सूरत में जाकर बसे थे और बलभीपुर को, जो कम्बे की खाड़ी में है, अपनी राजधानी की. ईसवी सम्वत् ५२४ में यह नगर ग़ारत हुआ और किसी एक दुश्मन ने

Digitized by Google

उस के बाशिन्दों को तितरबितर करदिया. ऐसा मअ़लूम होता हैं, कि यह दुश्मन तो नोशीज़ाद नाम इरान् के बादशाह नौशेरवान आदिल का बेटा होगा. इस बड़ी मुसीबत में फ़क़त पुष्पावती नाम रानी बचकर, मलिआ पहाड़ की खोह में छिप रही, जहां उस के गूह नाम एक बेटा पैदा हुआ. जब वह लड़का बड़ा हुआ तब उस ने ईदर देश को अपने इख़तिआर में लाकर, वहां अपनी सल्तनत मुक़र्रर की. उसी की नसल् में अब के उदयपुर के राजा हैं, जो सूरजवंश के बड़े ख़ानदान में होने से, बारहसौ बरस से हिन्दू राजाओं में औव्वल कहलाते हैं. उदयपुर के राजा को हिन्दू राजाओं का सूरज कहते हैं, मगर मुअ़तबर गवाहियों से यह ताअ़ज्जुब की बात दर्याफ़्त होती है, कि उन बड़े राजाओं का कुनबा, मा की तरफ़ से, एक ईसाई राजकन्या की नसल् में है. राजपूतों की तवारीख़ लिखनेवाला कहता है, कि यह बात मशहूर है, कि उदयपुर के राजा सब हिन्दू राजाओं में औव्वल हैं. हिन्दुओं के औरराजा, गद्दीपर बैठने से पेश्तर, उदयपुर के राजा से अ़दब और तअ़ज़ीम् के साथ तिलक लेते हैं, जो कि राज मिलने का निशान है. यह तिलक माथेपर आदमी के लहू से लगाया जाता है. उन का ख़िताब राणा है, और वे अपने को नौशेरवान आदिल् की नसल् में कहते हैं, जिस का बेटा, बाप से सरकशी करके, लड़ाई में मारागया, मगर उस की औलाद हिन्दुस्तान में रहती आई है, जिस से उदयपुर

Digitized by Google

के राणा पैदा हुये. इस बात को और लोग भी गवाही देते हैं, कि नौशेरवान् की एक बेटी उदयपुर के राजघराने में ब्याही थी. नौशेरवान् की बेगम मारिस नाम कुसतुंतुनिया के ईसाई बादशाह की बेटी थी. इस से एक बड़े अचम्भे की बात निकलती है, कि सूरजवंशी उदयपुर के राजा जो राम की औलाद होने का दम्भ करते, एक ईसाई राजकन्या की नसल् हैं.

गुह के पीछे, ईडर के सिंहासनपर आठ राजा बैठे, जिन में सब से पिछले राजा को, उस के बेटों ने शिकार करते वक्त मारडाला, पर उस का छोटा बेटा जिस का नाम बापा था, भाण्डीर के गढ़ में पहुंचायागया. वहां वह गड़रियों में पला और उस के लड़कपन और जवानी की बहुतेरी तअज्जुब की कहानियां कहते हैं. बापा से उस की माने कहा कि तुम चित्तोड़ के राजाओं से जो प्रमरा की जात हैं, रिश्तः रखते हो. इस बात के सुनने से उस के दिल में हिम्मत पैदाहुई और उस ने उस ओछे काम के छोड़ने का इरादः किया. वह अपने कई दोस्तों को जमाकर, क़रीब सातसौ ईसवी सम्वत में चित्तोड़ की तरफ़ चला, जहां का राजा उस की रिश्तेदारी का हाल मअलूम कर, मिहरबानी के साथ पेश आया, लेकिन रईसों को एक अजनबी लड़केपर इतनी मिहरबानी करनी बहुत बुरी मअलूम पड़ी और निहायत नाराज़ हुये. इसी अर्से में एक बड़ा दुश्मन आन पहुंचा और सब अमीरों को अपनी अपनी फ़ौज लेकर आने का हुकम हुआ, लेकिन सबों

Digitized by Google

ने सलाहकर, इस बात को इन्कार किया और निन्दा के साथ राजा को कहलाभेजा कि अपने नये दोस्त से मदद मांगो. बापा ने तुर्त फ़ौज का सिपःसालार होना क़बूल किया. ये दुश्मन मुसल्मान थे, जो इस दफ़अ पहलेहीपहल हिन्दुस्तान में आये थे और चन्द मुद्दत के बअद उसे अपनी सल्तनतनगः बनाई.

अब हम मुसल्मानों का बयान करते हैं, जो हिन्दुस्तान के ऐसे बड़े दुश्मन थे, कि उन के बराबर आजतक दूसरा नहीं उअ्आ. मुहम्मद जो मुसल्मानों के मज़हब का क़ायम करनेवाला था, मक्कः में जो अरब में वाक़अ है, पांचसौ उनहत्तर ईसवी में पैदाउअ्आ था, उस ने चालीस बरस की उ़मर में, अपने को पयग़म्बर मशहूरकिया और तलवार के ज़ोर से आदमीओं को इस्लाम में लाना, ख़ुदा का उ़क्म ज़ाहिरकिया. अपनी फ़साहत और लिआक़त से अरब के बहुतेरे लोगों को अपने मज़हब में लाकर और क़ौमों को भी अपने क़ाबू और दीन में लाने के लिये फ़ौज इकट्ठी की, और अपनी ज़िन्दगी में उस फ़तेः की राह निकाली जिसपर उस के जानशीन उस के बअद कामयाबी से चलेआये. उस के मरने के पीछे, जो जो उस की खिलाफ़त के मालिक होते गये, वे भी उतनी ही कोशिश और मज़हब का पास करते थे, और उन्हीं ने दाहने बांयें तरफ़ के मुल्क इतना जल्द फ़तेः करलिये कि किसी और ने कम कियेहोंगे. एक एक सूबा

Digitized by Google

उन के तावेअ होतागया और एक एक सल्तनत उन के बुद्धिबल से अिकस्त पातीगई. पचास बरस के बीच में, उन्हों ने पच्छम के तमाम मुल्की इन्तिज़ाम को बरबाद करदिया. इसलाम के शुरुअ होने के दिन से, मुसल्मानों की यह कोशिश रही, कि सारी ज़मीनपर उन्हों की एक बादशाहत मुकर्रर होजाय और सब लोग एकही मज़हब और एकही पयग़म्बर और एकही मुल्की मज़हबी आईन को मानें. जबकि मुसल्मानों ने इबरा और शाम को फ़तेः करलिया और ईरानीयों की सल्तनतको बिगाड़डाला, बल्कि यूरप को भी अपना ही समझाहोगा, तो ऐसी हालत में यह बात कब खयाल में आसक्ती है कि हिन्दुस्तान के दौलतमन्द देश उन के हाथ से बच रहे. इसलिये मुहम्मद के खलीफों ने, अपनी सल्तनत मुसहक्कम होतेही, इस दौलतमन्द मुल्कपर क़सद्किया.

महम्मद के मरने के चन्द बरस बअद, दूसरे खलीफः उमर ने ईरान् को फ़तेः करके, दज़ला और फ़रात नदी के मोहाने पर बसरा नगर इस ग़रज़ से बसाया, कि मुसल्मान गुजरात और सिन्धु से, जो सिन्धुनदी के पूरब वाक़अ है, तिजारत कर सकें. उस ने अबुलआस को एक बड़ी फौज के साथ हिन्दुस्तानपर चढ़ाई करने को भेजा, लेकिन् वह सिन्ध के बीच आरोर की पहली लड़ाई में मारागया. उसमान, उमर के पीछे खलीफ़ा हुआ; उस ने सिन्धुदर्या के कनारे के मुल्कों पर हमलः करने के इरादे से, वहां का हाल जानने के लिये

Digitized by Google

लोग भेजे, मगर कई वारदातों के सबब से उस की मुराद पूरी न होसकी. चौथे ख़लीफः अली ने सिन्धु का कुछ मुल्क लेलिया जो उस की वफ़ात के बअद, मुसल्मानों ने आपही छोड़दिया. इसी तरह अपने ज़माने के औव्वल से, मुसल्मान हिन्दुस्तानपर नज़र रखते थे, पर वलीद के वक़्तक चढ़ाई का अच्छा मौक़अ न पासके. सातसौ पांच और सातसौ पन्द्रह ईसवी सम्वत् के बीच, उस ने, न फ़क़त सिन्धुदेश को फ़तेः किया, बल्के अपनी फ़ौज को गङ्गा-कनारे तक लेगया, और सारेमुल्क को खिराज-गुज़ार करलिया. इसी खलीफ़ः के सिपःसालारों ने जिब्राल्टर की राह से समन्दर पारहोकर, यूरप में अपना निशान खड़ाकिया, और अन्दलुस के मुल्क को पहली दौड़ में अपने तावेअ में लाये. वलीद के ज़माने की चढ़ाई से बिलकुल उत्तर हिन्दुस्तान हिलउठा. हिन्दुओं की तवारीख में लिखा है, कि यदुभट्टी सिन्धुपार के बियाबान में भागगया; मानकराय चौहान जो अजमेर का बहादुर राजा था, लड़ाई में मारागया, और उस का छोटा बेटा कोटपर तीर से मारापड़ा, और जो जो ज़ेवर वह उस वक़्त पहने हुये था, अबतक राजपूत अपने लड़कों को नहीं पहनाते हैं. सूरत के राजाओं से सब देश छिनगया. इस विपत के डालनेवाले को हिन्दू तवारीख—लिखनेवाले, कभी देव और कभी जादूगर कहते हैं, मगर उस को मलेच्छ हमेशः कहाकरते हैं. अगर्चेः हिन्दुओं की तवारीखों से इस चढ़ाई

Digitized by Google

करनेवाले का बयान अच्छी तरह नहीं मअलूम होसक्ता है, पर यक़ीन है कि उत्तर हिन्दुस्तान के राजाओं में, यह परेशानी मुसल्मानों की चढ़ाई से पैदाहुई थी.

वलीद की फ़ौज गङ्गातक जाने से तीन बरस पीछे, उस के सिपःसालार काशम के बेटे महम्मद ने हिन्दुस्तानपर दूसरी बार चढ़ाई की. वह एक बड़ी फ़ौज लेकर, सिंधु में आया और दाहिर से, जो उस वक़्त गुजरात का मालिक था, बहुत लड़ाईयां लड़ा; आखिर को दाहिर ने शिकस्तपाई और मारागया. महम्मद इस फ़तेः के पीछे चितोड़ की तरफ़, जो हिन्दुओं की पनाह की जगह थी चला. उस वक़्त में बापा जिस का पेश्तर जिकर होचुका है, सेनापति हुआ. बावजूद कि अमीरों ने लड़ाई में शरीकहोने को इन्कार किया, तौभी जितनी फ़ौज वह जमा करसका, उतनीही के साथ लड़ाई के मैदान में आया और दुश्मनों का, जो अपनी पहली फ़तेः के सबब फूले अंग न समाते थे, सामनाकर, उन को बिलकुल शिकस्त दिया. महम्मद सिंधु और सूरत की राह होकर, उलटा फिरगया. बापा ने कम्बेतक, जो उस के घराने की राजधानी थी, उस का पीछा किया. वहां सलीम सिंहासन पर था; बापा ने उसे अपने तावेअ किया और उस की बेटी से शादी की. चित्तोड़ को फिरतेवक़्त, बापा ने अमीरों से मेलकर, उन की मदद से राजा को उतार, आप राजगद्दीपर बैठा. बापा के वक़्त में चन्द सुद्दत बअद, खलीफः

Digitized by Google

अलानसूर ने सिन्धु को फिर फ़तेः करलिया और उस की राजधानी का नाम पलटकर, मनसूरः रक्खा. चित्तोड़ के राजा बापा ने, जिस की नसल में उदयपुर के राणा हैं, अपने मुल्कपर बड़ुत कामयाबी से हुकूमत करके, अपने मुल्क और मज़हब को छोड़दिया, और अपनी फ़ौजसमेत सिन्धु के पार होकर, खुरासान में चलागया, जहां उस ने बड़तसी मुसल्मान औरतों से शादी की और बड़ुत औलाद छोड़कर मरगया. इस बात से मअलूमहोता है कि जियादः वक़ नहीं गुज़रा होगा कि तबतक हिन्दुस्तान में और सिन्धुनदी के पच्छिम तरफ़ के देशों में आना जाना जारी था.

चूंके हिन्दुस्तानपर मुसल्मानों की पहली चढ़ाई का बयान होचुका है, इसलिये अब यही कहना बाक़ी रहा कि उस वक़ थअने सातसौ पचास ईसवी में, दिल्ली का राज एक नये घराने के तुअतियार में था, जो पाण्डव की नसल में से बाक़ी रहा था. यह राज उस वक़ से खाली पड़ा था, जब से विक्रमादित्य ने सब से पिछले राजा को उठादिया, जिस बात को सातसौ बरस से ज्यादः गुजरचुके थे. उस ज़माने की दरम बरहमी से, उस घराने ने, जिस को अक्सर तवार कहते हैं, दिल्ली को अपने नये मुल्क की राजधानी बना लिया; उस दिन से अनङ्गपाल के वक़्तक, उसी घराने के एक्कीस राजा दिल्ली के तख़्तपर बैठे; अनङ्गपाल ने अपने नवासे पृथ्वीराज को, जो दिल्ली के हिन्दुराजाओं में सब से पिछला था, गोद

Digitized by Google

लिया, जिस के मरने बअद, मुसल्मानों का निशान, इस पुरानी राजधानीपर पांचसौ बरसतक उड़तारहा.

जब कि वलीद की फ़ौज हिन्दुस्तान में आई, उसी वक़्त के क़रीब प्रमरा का ख़ानदान, जिस ने उज्जैन में बहुत दिनों तक राजकिया था, घटनेलगा. तवार के ख़ानदान ने दिल्ली को अपने कब्जे में ला, एक बड़ा राज बनालिया. गुजरात स्वाधीन होगई, और वह पेश्तर चवरों के फिर पीछे सोलङ्कियों के हुकुम में रही जिन्हों ने नरवाला को अपनी राजधानी बनाई. गहलोटों ने चित्तोड़ में अपना राज ठहराया; कुछदिन पीछे क़न्नोज कौरवों के कब्जे में आया और कुछएक पहिलीसी रौनक़ हासिल करनेलगा. हिन्दुस्तान के उत्तरहिस्से की सूरत पलटगई. उज्जैन और पाटलिपुत्र के राज बरबादगये और नये नये राज पैदाहुये, जिन के मालिकों का अलग अलग ख़याल और ग़रज़ थी; होते होते आख़िर में मुसल्मानों की फ़तेः से, हिन्दुस्तान में एक और ही तौर का हाल होगया.

मअलूम होता है, कि बापा के ज़माने से कुछवक़्त पीछे तक, मुसल्मानों ने हिन्दुस्तानपर कोई और चढ़ाई न की; इस राजा के बेटे और पोते के राज में, ऐसी कोई बात न हुई जिसे हम यादकरें, मगर उस के बड़े बहादुर पड़पोते खमान को, सिंहासनपर बैठतेही, मुसल्मानों के साथ अपनी ताक़त का इम्तिहान करनापड़ा. खमान ने सम्वत्

Digitized by Google

आठसौ बारह ईसवी से, आठसौ छत्तीस के सम्वत् तक राज किया. हिन्दुस्तानपर मुसल्मानों की इस चढ़ाई का सिपःसालार महमूद, खुरासान का मालिक कहलाता है, लेकिन होसक्ता कि वह, मामून् बग़दाद के ख़लीफः हारुनुर रशीद का बेटा था, जिसे उस के बाप ने खुरासान का देश देदिया था. मामून बड़ी फ़ौज लेकर चित्तोड़पर आया, और जो हम उस की फ़ौज की ताकत को, उस लश्कर के शुमार से कयास करें जो चित्तोड़ के बचाने के लिये इकट्ठाहुआ था, तो हमें मअ्लूम पड़ेगा कि वह कैसी ज़बर्दस्त थी. हिन्दुस्तान के और राजा यह जानकर कि जो बला, चित्तोड़ पर है, वह हमारे लिये भी मौजूद है, सब इकट्ठे होकर चित्तोड़ के बचाने को चले. इस में कुछ शक नहीं है, कि उत्तर की सब फ़ौज उस दुश्मन् को एकबार्गी हटादेने के लिये इकट्ठी हुई जिस की बार बार की चढ़ाई की हद्द नहीं मअ्लूम होती थी. इन फ़ौजों की मदद से खमाण ने मुसल्मानों को शिकस्त दिया कहते हैं कि उस ने उन से चौबीस लड़ाईयों से कम न की होंगी. इन जंगों से, उस की शुहरत दूर दूर तक, दोस्त और दुश्मन् सबों में फैलगई और बहुत दिनोंतक, उस के देशवासियों के दिल में, मुसल्मानों के सङ्ग लड़ने के वक़्त उस का नाम लेने से जवांमर्दी पैदाहोती थी. लिखते हैं कि उस ने ब्राह्मणों के कहने से अपने बेटे को सिंहासनपर बैठाय राज सपुर्द करदिया, लेकिन् पीछे उस ने फिर अपना राज

Digitized by Google

लेलिया, और ब्राह्मणों के कहने में फरेब दर्याफ़्तकर, बज़्तेरों को मरवाडाला और उन्होंकी नसल के नाश्करने की कोशिश् की. आखिर खमान को उस के बेटे ने मारडाला, पर इस पिताघाती से, उस के बाप के अमीरों ने पलटा लिया.

उस वक़्त से डेढ़सौ बरसतक, मुसल्मानों ने हिन्दुस्तान पर कोई और चढ़ाई न की. उस ज़माने की हिन्दू तवारीख़ें पूरी और खातिर्ख़ाः नहीं हैं, मगर उन में एक बात लिखी है, जिस से बड़े नतीजे निकले. क़न्नोज के राजा ने, जहां हिन्दुओं के मज़हब ने परवरिश पाई, एक नये घराने के राजाओं के वक़्त में फिर रौनक हासिल की, और पहले के मुआफ़िक फिर उस की तरक्की होचली. महमूद ग़ज़नवी की चढ़ाई से कुछ वक़्त पेश्तर, याने अब से नौसौ बरस के अनुक़रीब, आदिसूर बंगाले के राजा ने, जो बैद्यों की नसल के राजाओं में से था और जिस की राजधानी नदिया थी, अपने ब्राह्मणों की मूर्खता के सबब नाराज़ हो, बैरासिंह देव कन्नोज के राजा से, ऐसे ब्राह्मणों को भेजने की दर्ख़ास्त की, जो कि मज़हब के रस्मात से बख़ूबी वाक़िफ़ हों. उस राजा ने पांच ब्राह्मण उस के पास भेजे जिन की नसल में अब के बंगाली ब्राह्मण, जिन का ख़ास वतन बंगाला नहीं है, अपने को बयान करते हैं और काय्यथ जो बंगाले में ब्राह्मणों के नीचे गिनेजाते हैं, अपनेतईं उन पांच सेवकों की नसल में बतलाते हैं, जो पांचो ब्राह्मणों के साथ बंगाले में आये थे. इति

Digitized by Google

छठवां बाब।

अब हम उस वक़्त के हालपर इल्तिफ़ात करते हैं, जिस से हिन्दुस्तान में मुसल्मानों की सल्तनत का शुरुअ हुआ. वलीद और हारुनुर रशीद के ज़माने में जैसी कि हम कहचुके हैं, हिन्दुस्तान लेने के लिये जितनी चढ़ाई हुई थीं, हिन्दू मुसल्मानोंपर फ़तेः पातेरहे. पिछली चढ़ाई से डेढ़सौ बरस बअ़दतक, मुसल्मानों ने कभी हिन्दुस्तानपर इरादः न किया, पर आख़िर में सिंधु से थोड़ी दूरपर, मुसल्मानों का एक नया घराना मुकर्रर हुआ, जिस ने हिन्दुस्तान लेने का क़स्द किया.

सम्वत् हिजरी के पहिले सैकड़े में, मुसल्मानों ने मावरा उन् नहर और ख़ुरासान के दौलतमन्द बड़े मुल्कों को फ़तेः करलिया था, और एकसौ अस्सी बरस से ज्यादः तक ख़लीफ़ों के आमिल उनपर हुकूमत करते रहे, लेकिन् हारुनुर रशीद के मरने बअ़द, ख़लीफ़ों की ताक़त घटती गई. एक एक मुल्क इन्हों के क़ब्ज़े से छुटता गया, यहांतक कि ख़लीफ़ों की बहुतबड़ी सल्तनत में, बग़दाद शहर और उस के नज़दीक के देहात छोड़ और ज्यादः कुछ न रहा. उन आमिलों में से जो उस वक़्त में स्वाधीन सूबादार होगये, इस्माईल सामानी, मावरा उन् नहर और ख़ुरासान का मालिक था, जो सम्वत् दोसौ तिरसठ हिजरी में, मुताबिक आठसौ बासठ

Digitized by Google

ईसवी के बादशाह बनबैठा और एक नया राज मुकर्रर किया जिस में उन दोनों मुल्कों के सिवा, काबुल, अफ़ग़ानस्तान, कन्दहार, ज़ाबुलिस्तान दाख़िल थे. बुखारा इस ख़ानदान की राजधानी हुई, और यह नसल तवारीख़ की किताबों में, सामानियों का ख़ानदान कहलाता है. चार बादशाहों ने नब्बे बरसतक नेकी और नामवरी के साथ सलतनत की. चौथे बादशाह ने अपने मरने के वक़्त, एक लड़के मनसूर नाम को मुल्क का वलीअहद किया, लेकिन सरदारों की राय में इसतिलाफ वाक़ै हुआ, जिन में से कितने एक मरहूम सुलतान के चचा को तख़त पर बैठाया चाहते थे. आख़िर इस बात में, अलपतगीन् खुरासान का मालिक जिस की राजधानी ग़ज़नी थी, शामिल ठहरा. उस ने चचाही के हक़ पर तज़वीज़ की, पर बुखारा में इस फ़ैसले के मअ़मूल होने से पेश्तर, दोनों फ़रीक़ों में तसफ़िया होगया था, और उन्हों ने मनसूर को तख़तपर बिठलादिया था. इस नौजवान बादशाह ने अलपतगीन् की ऐसी सलाह से ख़फ़ा होा, उस को बुखरा में बुलाया, लेकिन् वह इतना दानिशमन्द था, कि अपने दुशमन के हाथ न आया और तुर्त उस ने अपने तईं खाधीन करार दिया. मनसूर के सिपःसालार उस पर चढ़गये, पर वे दोबार लगातार लड़ाई हारे और अलपतगीन् खुरासान और ज़ाबुलिस्तान का, अमन ओ अमान से मालिक बनारहा जिन पर उस ने पन्द्रह बरसतक हुकूमत की और मरने के पीछे

Digitized by Google

अपने बेटे इसहाक़ को वारिस छोड़गया. बुखारा के अमीर ने उन फिरेहुये मुल्कोंपर अपना दावा नहीं छोड़ा था, इस लिये इसहाक़ ने तख़तपर बैठने से थोड़े दिन पीछे, अपने वाकिफकार सिपःसालार सुबुकतगीन् के साथ, मनसूर के मुल्क पर इस इरादे से चढ़ाई की कि मनसूर उसे स्वाधीन राजा मानने को मजबूर करै. सुबुकतगीन् की जीत हुई, और मनसूर से सुलह की, जिस से खुरासान का स्वाधीन होना ठहर गया. थोड़े दिनों बअद, इसहाक़ अपनी बदपरहेज़ी से फ़ौत हुआ, और फ़ौज ने उसी वक़ सिपःसालार सुबुकतगीन् को ग़ज़नी के तख़्त पर बैठाया. यह बादशाह अपने को उन ईरानी सुल्तानों की नसल में, जो सासानी कहलाते हैं कहता था, जिस नसल का आख़िरी बादशाह यज़दजुर्द अपने मुल्क से निकाला गया, जबकि मुसल्मानों ने उस के मुल्कपर चढ़ाई कर, अपने राज में मिलालिया. अगर्चेः सुबुकतगीन बादशाही नसल में था, तौभी वक़ की गर्दिश से, उस पर बड़ी ग़रीबी आगई, और लड़कपन में अलप्तगीन् के हाथ बिकगया, जिस ने उस की अक़्लमन्दी देखकर, दर्जः बदर्जः बड़ेबड़े ओहदे दिये, यहां तक कि आखिर में, वह सब अमीरों से इज़्ज़त और रुतबे में ब्यादः होगया. अपनी सलतनत के पहिले बरस, यअने सम्वत् नौसौ सतहत्तर ईसवी में, वह हिन्दुस्तान पर फ़ौज चढ़ा लाया. उस वक़ जैपाल नाम राजा लाहोर पर राज करता था. अलमनसूर के वक़ हिन्दुस्तान में मुसल्मानों की चढ़ाई

Digitized by Google

के पीछे, लाहौर के राजाओं ने सिंधु के पश्चिम कनारे के रहनेवाले अफ़ग़ानों से अहद और पैमान किये थे. उस समय से मुसल्मानों को हिन्दुस्तान में आने से रोक टोक रही, जिन को उस वक़्त से, सिंधु देश की राह के सिवा, किसी तरफ़ से आने की राह न थी. सुबुक्तगीन ने अफ़ग़ानों को हिन्दुओं से लड़वाकर, अपनी मदद करने के लिये मजबूर किया. इस तरह से सिंधु नदी के पार की हिफ़ाज़त जब जाती रही, तो लाहौर और मुलतान, चढ़ाई करनेवालों के तावेअ में अलबत्ह आगये. सुबुक्तगीन ने हिन्दुस्तान की पहली ही चढ़ाई में, कई क़िले लेलिये, और बहुतसी लूट लेकर, अपनी राजधानी को उल्टा फिरगया. जैपाल ने सुबुक्तगीन की फिर चढ़ाई करने के अन्देशः से, बहुतसी फ़ौज इकट्ठी की और सिंधु पार होकर, मुसल्मानों पर खुद उन्हीं के मुल्क में हमलः किया; पर उस की मुराद बर न आई, बल्के उस के तावेअ होना पड़ा और वह खिराज में इकसाठ रुपये और हाथी देने में मजबूर हुआ, पूरे वह तमाम खिराज एक ही बार न देनेसका, इस लिये उस ने मुअ्तमद ज़हदेदारों को कर लेने के लिये लाहौर तक अपने साथ भेजदेने की दर्ख़ास्त की. जैपाल जब अपनी राजधानी में आया और वहां अपने मुल्क को सुबुक्तगीन के उल्टा फिर जाने का हाल सुना, तब उस ने अपने फ़ौज के तोड़ने का इरादः किया. उस के दरबार में, उस के सेनापति बड़ी सिंहासन की बाईं तरफ और ब्राह्मण दाहनी ओर खड़े थे. क्षत्रियों ने उसे

Digitized by Google

याद करवाया कि सबक्तगीन दुश्मन के साथ लड़ने में कितनी मुसीबत उठानी पड़ी थी, और महाराज ने कर के देने का वचन दिया था, पर ब्राह्मणों ने कहा कि अब गज़नी से कुछ डर न रहा और कर बाज़ रखने की सलाह दी. अफसोस है, कि उस ने ब्राह्मणों का कहना क़बूल किया और रुपये लेने के लिये जो उहदेदार आये थे, उन को क़ैद किया. सुबक्तगीन ने इस बेवफ़ाई का हाल सुनकर, अपनी फ़ौज इकट्ठी की और जैपाल के देशपर तूफ़ान की तरह चढ़ आया. अर्थात् यह राजा अपने क़ौल के तोड़ने से दुश्मन को अपने ऊपर आप चढ़ा लाया था, पर तौभी उत्तर के हिन्दुराजाओं से उस चढ़ाई को रोकने के लिये, मदद हासिल की. दिल्ली, अजमेर, कालिंजर और कन्नोज के राजा एक लाख फ़ौज से उस के साथ आ मिले, और दोनों लश्कर लमग़ान के कनारे पर मुकाबिल हुए. हिन्दुओं ने हार पाई और नीलाब के कनारे तक उन का पीछा हुआ. यह लड़ाई सिंधु नदी के पच्छम तरफ़ हुई, क्योंकि उस ज़माने में, उस नदी के पार होने में कुछ गुनाह नहीं गिना जाता था. मअलूम होता है, कि इस लड़ाई के पीछे: सुबक्तगीन की सलतनत में, जो कि बाईस बरस तक रही, और लड़ाई हिन्दुओं से न हुई. सम्वत् नौवी सत्तान्नवे ईसवी में, सुबक्तगीन मरा और उस के बअद पहले उस का बेटा इस्माईल बादशाह हुआ, लेकिन दो चार महीने के पीछे, उस का भाई बड़ा नामी महमूद ग़ज़नवी तख़्तपर दखल किया.

Digitized by Google

महमूद ग़ज़नवी तीस बरस की उमर में अपने बाप के तख़्त और मुल्क का मालिक हुआ. अपने जुलूस के चार बरस बअदतक, वह अपनेही देश के बन्दोबस्त करने और बखेड़े मिटाने में मशग़ूल रहा. एक हज़ार एक ईसवी सम्वत् में, उस ने हिन्दुओं पर चढ़ाईयों का शुरूअ किया, और लगातार बारह मर्तबः से कम हिन्दुस्तान पर न आया. अगष्ट महीने में वह दश हज़ार आदमी लेकर ग़ज़नी से चला, और पेशावर में अपने बाप के पुराने दुश्मन जैपाल से मुकाबिल हुआ. हिन्दुओं की फ़ौज भागी; जैपाल आप क़ैद हुआ, और इस दूसरी शिकस्त के पीछे, उस ने राज अपने बेटे आनन्दपाल को दिया, और जीतेजी आप आगमे जलकर, संसार के दुख से छूटा. महमूद ने सिंधु नदी के पच्छम के देशों पर अपने मुसल्मान सूबादार मुक़र्रर किये, और आनन्द-पाल से खिराज ठहरा लिया, लेकिन छोटे छोटे राजाओं ने लाहोर के नये सूबःदार को, आनन्दपाल के सिखलाने से, कर के अपने अपने हिस्से देने का इनकार किया. उन फिरे हुये राजाओं में भटनेर का राजा बड़ा था जिस को सज़ा देने के लिये महमूद ने दूसरी चढ़ाई की. भटनेर का गढ़ जो बीकानेर के बीहड़ के ठीक उत्तर में है, तीन दिन के घेरने में फ़तेः कियागया, और राजा ने दुश्मन के हाथ से बचने के लिये अपने तईं आप तलवार से मार डाला. एक हज़ार पांच सम्वत् ईसवी में आनन्दपाल के बहकाने से

Digitized by Google

मुल्तान का दाउद नाम सूबादार फिरगया. महमूद ने फिर अपनी फ़ौज को सजाया और इस झगड़े उठानेवाले आनन्दपाल पर चला, जिस के ताबेअ होने पर, दाउद मज़कूर ने भी तावेदारी इख़्तियार की और बजुज़ ख़िराज देना ठहराया. एक हज़ार आठ सम्वत् ईसवी में, महमूद ने आनन्दपाल को दाउद के बाब में, बेइमानी करने के सबब, सज़ा देने का इरादः किया, और हिन्दुओं पर चौथी बार फ़ौज को चढ़ालाया. आनन्दपाल ने महमूद का यह क़सद सुनकर, सब हिन्दू राजाओं के पास ख़बर भेजी और मुसल्मानों को हिन्दुस्तान से निकालदेने के लिये आपस में मिलकर कोशिश करने की ज़रूरत बयान की. उज्जैन, ग्वालिअर, कालिञ्जर, कन्नोज, दिल्ली और अजमेर के राजा उस की मदद के लिये चले. उन की मिलीजुली फ़ौज से ऐसा एक लश्कर बना कि उस के बराबर कभी कोई फ़ौज मुसल्मानों से लड़ने के लिये इकट्ठी नहीं हुई थी. कहते हैं कि उसवक़्त में औरतों ने लड़ाई के ख़र्च के लिये अपने गहने उतार दिये थे. हिन्दुओं की फ़ौज सिंधु नदी की तरफ़ चली और पेशावर में डेरा किया, जहां मुसल्मान भी आये और दोनों लश्कर चालीस दिन तक आमने सामने पड़े रहे. आखिर को महमूद ने एक झुंड तीरन्दाज़ों का लेकर हमलः किया, लेकिन उन को गकरों ने, जो बेहत और सिंधु नदी के बीच में बसते और अब के घाटों के

Digitized by Google

बुज़ुर्ग थे, ऐसे ज़ोर से डटादिया कि पांच हज़ार मुसल्मान मारेगये, लेकिन जिस हाथीपर आनन्दपाल, हिन्दुओं का सेनापति सवार था, वह एकाएक चौंककर भागा जिस से हिन्दुओं की फ़ौज में झड़प मचगया और वे खेत में बीस हज़ार लाशें छोड़, इधरका भागचले.

दूसरे बरस में महमूद ने पांचवीं बार हिन्दुस्तानपर चढ़ाई की और नगरकोट जिसे भीम भी कहते हैं, और ज्वालामुखी के पास है, उस के लेने का इरादः किया. इस गढ़ में बड़ी दौलत थी और वह मज़बूती में लाजवाब था. हिन्दुस्तान के राजाओं ने उस की मज़बूती का भरोसा कर, उस में अपना अपना खज़ाना रक्खा था. वह महमूद के हाथ आसानी से आगया जो बिलकुल दौलत लूटकर ग़ज़नी में लेगया जहां उस ने एक बड़ा जश्न किया और अपनी प्रजा को हिन्दुस्तान की लूट दिखलाई.

एक हज़ार ग्यारह सम्वत् ईसवी में, महमूद ने हिन्दुओं की पुरानी दौलतमन्द शिवारतगाः थनेसर की खबर सुनकर, जिसे हिन्दू ऐसा मानते हैं जैसे मुसल्मान मक्के को, उस के लूटने का इरादः किया. महमूद ने अहदनामः के मुताबिक़ आनन्द-पाल से, अपनी फ़ौज को बेरोकटोक थनेसर आने के लिये दर्ख़ास्त की. कहते हैं कि आनन्दपाल ने फ़ौजसमेत महमूद की ज़ियाफ़त की और अपने भाई की ज़बानी महमूद को यह कहला भेजा कि हिन्दू थनेसर को बड़ी पाक जगह

Digitized by Google

जानते हैं; अगर आप के मज़हब में हिन्दुओं का मत ख़राब करना लाज़िम् है, तो नगरकोट के बिगाड़ने से आप ने वह अपना मज़हबी फ़रज़ अदाकर लिया, और जो आप थनेसर को छोड़ दीजिये तो आनन्दपाल ख़ुशी से आप को थनेसर का बरसवारी मब्लग़ सरसाल दियाकरेगा. महमूद के जवाब से उस की अमल ग़रज़ बख़ूबी दर्याफ़्त होती है, क्योंकि उस ने यह जवाब दिया कि मुसल्मानों के मज़हब में यह हुक्म है, कि जिसक़दर मुसल्मानी मज़हब फैले और मुसल्मान बुत्परस्ती के दूरकरने में कोशिश् करें, उसी क़दर उन को बिहिश्त का फल मिलेगा, और मुझको मुनासिब है कि बिल्कुल हिन्दुस्तान में से बुत्परस्ती की जड़ उखाड़ डालूं, तो फिर इस सूरत में थनेसर क्योंकर बचसक्ता है. इस जवाब से हिन्दुओं को महमूद से जब कुछ भरोसा न रहा, तब दिल्ली के राजा ने सब को थनेसर के बचाने के लिये बुलाया; पर उन के इकट्ठे होने से पहलेही, मुसल्मानों ने थनेसरपर हमलः करके, अक्षसर मूरतों को तोड़डाला और उन में से बहुत बड़ी मूरतों को ग़ज़नी में मुसल्मानों से पैमाल होने के लिये भेजा. उन के साथ दो लाख हिन्दू भी पकड़ कर भेजेगये, और ग़ज़नी में इतने हिन्दू दिखाई देनेलगे, कि वह एक हिन्दुओं का सा नगर नज़र आया.

थनेसर के फ़तेः होने के पीछे, कईएक बरसतक हिन्दुस्तान में आराम रहा, पर ईसवी सम्वत एक हज़ार सचह में, महमूद

Digitized by Google

एक लाख पैदल और बीस हज़ार सवार और बीस हज़ार मुसलमान, जो लूट के लालच से इस जहाद में शरीक थे, इस बल को साथ लेकर, फिर हिन्दुस्तान पर चला. कहते हैं कि पहले इस ने मीरठ शहर को लिया, और यह नगर फ़क़त बहुत के रुपये देने के सबब लूट से बचा. यहां से वह महावन को गया जो इन्द्रावन के राजा की राजधानी थी; वहां के राजा ने शिकस्त पाई और अपनी रानी को साथ लेकर भागा, लेकिन् दुश्मन के पीछा करने से लाचार हो, उस ने अपनी रानी को उस की इज़्ज़त बचाने के लिये तलवार से मारडाला और अपनेतईं भी हलाक किया. उस के बअद मुसलमानों की फ़ौज मथुरा को चली जहां कृष्णचन्द्र पैदा हुआ था. यह नगर मन्दिरों से भराहुआ था, जिन में रतन बहुतायत से जगमगाते थे. महमूद ने तलवार हाथ में लिये नगर में पैठ, मूरतों को बिगाड़ा और जो सोने चान्दी की थीं, उन को गलवाडाला. सिर्फ़ थोड़े से मन्दिर बचरहे, क्यः मज़बूती या खुशनुमाई के सबब से. महमूद ने इस नगर के राजा के हाकिम को एक रुक्के में यह लिखभेजा कि यहां बेशुमार मन्दिरों को छोड़कर और भी हज़ारों इमारतें हैं, जिन में बहुत से संगमरमर के हैं; यह नगर हज़ारों दीनार खरच करने से तयार हुआ होगा; ऐसा शहर दोसौ बरस से कम में नहीं बनसका है. इस नगर की लूट में, पांच मूरतें सोने की जिन की आंखों में लाल जड़े थे, पाईगईं. एक और

Digitized by Google

मूरत में बड़े मोल का नीलम था और इन को छोड़ और एक-सौ मूरतें चान्दी की, जो सौ ऊटों पर लाद लेगये मिली थीं.

महमूद छब्बिस दिन मथुरा में रहकर, बड़ा नुकसान करतारहा और वहां से कन्नोजपर चला. वहां उस ने ऐसा एक नगर देखा जो मुसल्मान तवारीख लिखनेवालों के मुताबिक उच्चाई में आस्मान से बातें करता था. यह नगर दो हज़ार बरस से ज़ियादः हिन्दूमत का ख़ास मक़ाम था, और उस की आबादी पन्द्रह कोशतक थी. उस की खूबी का जो बयान लिखा है, सो मुश्किल से मन में आसक्ता है. वहां के राजाओं के पास इतनी फ़ौज थी कि कूच के वक़्त जबतक पीछे की सेना के डेरे भी न उखड़ते थे, तबतक अगली सेना मञ्जिल पर पहुंच जाती थी. कहते हैं कि कन्नोज में जो फ़ौज हमेशः रहती थी, उस में अस्सी हज़ार पैदल और तीस हज़ार सवार झिलिम् पहने हुये, और तीन लाख पैदल और दो लाख तीरन्दाज़ और परशेवाले थे, और उन के सिवा एक हाथियों का दल था. इस शहर की शान इस बात के कहने से कुछएक मअ़लूम होगी कि इस में फ़क़त तंबोलियों की तीस हज़ार दूकानें थीं, और कलावंतों के साठ हज़ार घर थे. इस नगर का राजा कुंअरराय था जो बड़ी धूमधाम से रहाकरता था; लेकिन् उन तीनों बड़े नगरों की हालत देख, जिन को महमूद ने तबाह किया था, कुंअरराय भी उस के तअबे होने के इरादे से, वह अपनी औरत और लड़कों समेत, मुसल्मानों की

Digitized by Google

में भागगये. महमूद सोमनाथ में पैठा और मन्दिर के पास पहुंचकर, पत्थर की एक बड़ी मजबूत इमारत देखी जहां एक दालान था जिस में छप्पन खम्भे ऊंचे लगे थे. उस में एक मूरत सोलह फूट ऊंची थी जिस में से छः फुट: धरती में गड़ी हुई थी, और उस के उपर एक बहुमूल्य रतन जड़े हुये छः चोबोंघर खड़ा था. उस ने मूरत को तोड़वाडाला और उस के टुकरों को जामेअ मसजिद के आगे डालदेने के लिये गजनी में भेजे, और कुछ टुकड़े फ़ते: की निशानी के तौर पर मक्के और मदीने में भेजने का हुक्म दिया. एक किस्सा: मशहूर है कि जब महमूद से मूरत के तोड़ने का हुक्म हुआ, तब ब्राह्मणों ने उस को इस जुल्म के रोकने के लिये उसे बहुत सी दौलत देने कहा, पर महमूद ने उन की दर्खास्त न सुन, मूरत के तोड़ने की आज्ञा की, और मालूम हुआ कि जितना माल ब्राह्मणों ने इस मूरत की एवज में देना ठहराया था, उस से भी जियाद: उस के अन्दर से निकला.

उस वक़ सोमनाथ हिन्दुस्तान के और सब देवस्थानों से ज्याद: मालदार और मशहूर था. कहते हैं कि ग्रहण के वक़ में, वहां दो तीन लाख यात्री जमा होजाते थे, और उस मन्दिर के खरच के लिये दो हज़ार गांव थे. हररोज़ मूरत को गङ्गाजल से नहलाते, जो पांचसौ कोस से आता था. दो हज़ार ब्राह्मण पुजारी हररोज़ हाज़िर रहाकरते थे; पांचसौ गानेवाली कंचनियां और तीनसौ कलावंत

मन्दिर के नौकर थे, और तीनसौ ब्राह्मण पाचियों की ब्राह्मणत के लिये आयाकरते थे. मन्दिर में फ़क़त एक ही चिराग़ जलता था, जिस की रौशनी वहां के सब रत्नों पर पड़ती और उन की जोत से सारे मन्दिर में जगाजोत होजाती थी. महमूद ने वहां से इतना माल लिया कि उस वक़ किसी बादशाह के खज़ाने में न था. कहते हैं कि उसे इस जगह की खुशनुमाई ऐसी पसन्द आई कि उस ने उस को अपनी राजधानी बनाने का क़स्द किया, मगर अमीरों ने उसे उस इरादः से बाज़ रक्खा, और कहा कि यह जगह आप के पच्छमदेश की हद से, जहां बड़ा डर रहता है बहुत दूर है. महमूद सिंधु की राहसे ग़ज़नी को चला, जिस के बीहड़ में उस की फ़ौज ने बहुत तक्लीफ़ उठाई. उस से पांचबरस पीछे ईसवी सम्वत् एक हज़ार तीस में, यह बड़ा बिजई बादशाह अपनी तिरसठ बरस की उमर में मरगया.

किसी चढ़ाई करनेवाले ने हिन्दुस्तान पर कभी इतना जुलम नहीं किया जितना महमूद के हाथ से हुआ. उत्तर में हिन्दुओं के सब मुल्की इन्तिज़ाम में खलल आगया; अच्छे से अच्छे नगर लूटे और जलादियेगये और अच्छे से अच्छे देश उजाड़ हुये, बच्चे हज़ारों ग़रीब बाशिन्दे ग़ैर मुल्क में भेजेगये. मरने से दो दिन पेश्तर, उस ने सब चान्दी सोने और रतन को जो हिन्दुस्तान से लूटलेगया था, अपने सामने फैलाने का हुक्म दिया ताकि उन के देखने से अपनी आंखों को

Digitized by Google

ताज़गी देवे. महमूद थोड़ी देर तक ख़ूब ग़ौर से उन को देखता रहा और फिर आंसू भरलाया, मगर बावजूद कि वह ख़ूब जानता था कि जल्द छोड़ना पड़ेगा, उस में से ग़रीब गुर्बों को कुछ तक्सीम न करवाया. दूसरे दिन उस ने तमाम फ़ौज सवार, पैदल और हाथियों को अपने सामने लाने के लिये हुक्म दिया और उन को छोड़जाने के ख़याल से, फिर आखों में आंसू भरलाया. उन सूबों को छोड़कर जो कि सिंधु नदी के पूरब कनारे पर हैं, महमूद ने उन मुल्कों में जिन को उस ने बड़धा बरबाद किया था, कहीं पायेदार मकाम न पकड़ा, लेकिन् अपनी राजधानी से जो सिंधु नदी के पार पहाड़ों में है, कभी कभी इस तरह से हिन्दुस्तान पर चढ़ाई करता था, जैसा कि बाज़ अपने शिकारपर झपटता हो, और वहां से लूट लेजाता. उस का बाप सुबुक्तगीन ग़ज़नी, काबुल, बलख़ और थोड़ासा क़न्दहार का राज, उस के लिये छोड़ गया था, पर उस ने ऐसी जल्दी से दूर २ तक फ़तेः पाई थी कि तीस बरस के अर्से में, उस ने फ़ारस की खाड़ी से लेकर, आरल समन्दर तक और हुर्दिस्तान के पहाड़ों से सतलज़ तक सब देश अपने क़ब्ज़ः करलिये. बावजूद इतनी बड़ी सल्तनत के तौभी बुतशिकन् के ख़ताब से, नामज़द होने में ज्यादः फ़ख़र समझता था. इति ॥

समाप्तः ॥

Digitized by Google

سني تهي - اب تم دونون بهي جو باقي رہے هو يهه سمجهو که هم
اُسي مکان مين بيٹهے هين اور مجهے اپنا خادم اور اِس گهر کو اپنا
تکيه جانو • ہے وسواس اپني اپني سير کا احوال کهو اور
چندے ميرے پاس رهو •

Digitized by Google

کھینچ کر میں اِس توقع پر آیا تھا کہ اِس سوداگر بچے کو مُتبنّی کرکر اپنا فرزند کرونگا اور اپنے مال و متاع کا اِسکو ہبہ نامہ لکھہ دونگا تو میرا نام رہیگا اور سارا عالم اُسے خواجہ زادہ کہیگا - سو میرا خیال خام ہوا اور بالعکس کام ہوا * اِن نے عورت ہوکر مجھہ مرد پیر کو خراب کیا - میں رنڈي کے چرتر میں پڑا - اب میري وہ کہاوت ہوئي - گھر میں رہے نہ تیرتھہ گئے - موند مُنڈا فضیحت بھئے *

القصہ مجھے اُسکي بے قراري اور نالہ و زاري پر رحم آیا * خواجہ کو نزدیک بلایا اور کان میں مژدہ اُسکے وصل کا سنایا کہ غمگین مت ہو - اِسي سے تیري شادي کردینگے - خدا چاہے تو اولاد تیري ہوگي اور یہي تیري مالک ہوگي * اِس خوش خبري کے سُنّے سے في الجملہ اُسکو تسلي ہوئي - تب میں نے کہا کہ وزیر زادي کو محل میں لیجاؤ اور وزیر کو بندي خانے سے لے آو - حمام میں نہلاو اور خلعت سرفرازي کي پہناو اور جلدي میرے پاس لاو * جسوقت وزیر آیا لب فرش تک اُسکا استقبال فرمایا اور اپنا بزرگ جان کر گلے لگایا اور نئے سر سے قلمدان وزارت کا عنایت فرمایا اور خواجہ کو بھي جاگیر و منصب دیا اور ساعت سعید دیکھکر وزیر زادي سے نکاح پڑھوا کر منسوب کیا * کئي سال میں دو بیٹے اور ایک بیٹي اُسکے گھر میں پیدا ہوئے * چنانچہ بڑا بیٹا ملک التجار ہی اور چھوٹا ہمارے سرکار کا مختار ہی * اي درویشو ! میں نے اِسلئے یہہ نقل تمہارے سامھنے کي کہ کل کي رات دو فقیرونکي سرگذشت میں نے

مرگیا * میں اِس وفادار کُتّےکو اور سب مال خزانہ جواہر ساتھہ لیکر نیشاپور میں آ رہا اِسواسطے کہ میرے بھائیوں کے احال سے کوئي واقف نہ ہووے * میں خواجۂ سگ پرست مشہور ہوا اور اِس بدنامي میں دُگنا محصول آج تک پادشاہ ایران کي سرکار میں بھرتا ہوں *

اِتّفاقاً یہي سوداگر بچہ وہاں گیا - اُسکے وسیلے سے جہاں پناہ کا قدم بوس کیا * میں نے پوچھا کیا یہہ تُمہارا فرزند نہیں ؟ خواجہ نے جواب دیا - قبلۂ عالم ! یہہ میرا بیٹا نہیں آپ ہي کے رعیت ہی لیکن اب میرا مالک اور وارث جو کچھہ کہئے سو یہي ہی * یہہ سُنکر سوداگر بچے سے میں نے پوچھا کہ تو کِس تاجر کا لڑکا ہی اور تیرے ماں باپ کہاں رہتے ہیں ؟ اُس لڑکے نے زمین چومي اور جانکي امان مانگی اور بولا کہ یہہ لونڈي سرکار کے وزیر کي بیٹي ہی - میرا باپ حضُور کے عتاب میں بہ سبب اِسي خواجہ کے لعلوں کے پڑا اور حکم یوں ہوا کہ اگر ایک سال تک اِسکي بات کُرسي نشین نہوگي تو جان سے مارا جاویگا * میں نے سُنکر یہہ بھیس بنایا اور اپنے تئیں نیشاپور پہنچایا * خُدا نے خواجہ کو بمعۂ کُتّے اور لعلوں کے حُضُور میں حاضر کردیا * آپ نے تمام احوال سُن لیا - اُمیدوار ہوں کہ میرے بوڑھے باپ کی مُخلصی ہو *

یہہ بیان وزیرزادي سے سُن کر خواجہ نے ایک آہ کی اور بے اختیار گر پڑا * جب گُلاب اُس پر چھڑکا گیا تب ہوش میں آیا اور بولا کہ ہاے کم بختي ! اِتني دور سے یہہ رنج و مِحنت

اور کِس طرح یہان سے نِکلینگے ؟ وہ بولي خُدا نِکالے تو نکلین نہین تو ایک روز یونہین مر جائینگے * مجھے اُسکے کہنے پر اور اپنے رہنے پر کمال رِقّت آئي - روتے روتے سو گیا - ایک شخص کو خواب مین دیکھا کہ کہتا ھی پر نِالے کي راہ سے نکلنا ھی تو نِکل * مین مارے خوشي کے چونک پڑا اور جورو کو کہا لوٹے کي میخین اور سیخین جو پُرانے صندوقون مین ھین جمع کرکر لے آؤ تو اِس کو کُشادہ کرون * غرض مین اوس موري کے مُنہہ پر میخ رکھکر پتّھرون سے ایسا ٹھونکتا کہ تھک جاتا * ایک برس کي محنت مین وہ سوراخ اِتنا بڑا ھوا کہ آدمي نِکل سکے *

بعد اُسکے مُردون کے آستینون مین اچھے اچھے جواھر چُنکر بھرے اور ساتھہ لیکر اُسي راہ سے ھم تینون باھر نِکلے * خُدا کا شکر کیا اور بیٹے کو کاندھے پر بیٹھا لیا - ایک مہینا ھوا ھی کہ سرراہ چھوڑ کر مارے ڈر کے جنگل پہاڑون کي راہ سے چلا آتا ھون * جب گُرسنگي ھوتي ھی گھاس پات کھاتا ھون - قوت بات کہنے کي مُجھہ مین نہین * یہہ میري حقیقت ھی جو تُم نے سُني * بادشاہ سلامت ! مین نے اُس کي حالت پر ترس کھایا اور حمّام کرواکر اچّھا لِباس پہنوایا اور اپنا نائب بنایا اور میرے گھر مین ملِکہ سے کئي لڑکے پیدا ھوئے لیکن خورد سالي مین مر مر گئے * ایک بیٹا پانچ برس کا ھوکر مُوا - اُسکے غم مین ملِکہ نے بھي وفات پائي * مجھے کمال غم ھوا اور وہ مُلک بغیر اُس کے کاٹنے لگا - دِل اُداس ھوگیا اِرادہ عجم کا کیا * بادشاہ سے عرض کرکر خِدمت شاہ بندر کے اُس جوان کو دِلوادي * اِس عرصے مین بادشاہ بھي

Digitized by Google

لگا * مُدّت تک یہي میرا کام تھا کہ جو زندہ مُردے کے ساتھہ آتا اُسے میں مارڈالتا اور کھانے کا اسباب لیکر بفراغت کھاتا *

بعد کتني مدّت کے ایک مرتبہ ایک لڑکي تابوت کے همراہ آئي نہایت قبول صورت - میرے دل نے نہ چاہا کہ اُسے بھي ماروں * اُن نے مجھے دیکھا اور مارے ڈر کے بیہوش ہو گئي * میں اُنکا بھي آزوقہ اٹھاکر اپنے پاس لے آیا لیکن اکیلا نہ کھاتا * جب بھوکھہ لگتي کھانا اُسکے نزدیک لیجاتا اور ساتھہ ملکر کھاتا - جب اوس عورت نے دیکھا کہ مجھے یہہ شخص نہیں ستاتا دن بدن اوسکي وحشت کم ہوئي اور ارام ہوتي چلي - میرے مکان میں آنے جانے لگي * ایک روز اوسکا احوال پوچھا کہ کون ہی ؟ اوسنے جواب دیا کہ میں پادشاہ کے وکیل مُطلق کي بیٹي ہوں - اپنے چچا کے بیٹے سے منسوب ہوئي تھي - شب عروسي کے دن اوسے قولنج ہوا - ایسا درد سے تڑپنے لگا کہ ایک آن کي آن میں مر گیا - مُجھے اُسکے تابوت کے ساتھہ لاکر یہاں چھوڑ گئے ہیں * تب اُسنے میرا احوال پوچھا میں نے بھي تمام و کمال بیان کیا اور کہا - خدا نے تُجھے میري خاطر یہاں بھیجا ہی * وہ مُسکراکر چُپکي ہو رہي *

اِسي طرح کئي دن میں آپس میں محبّت زیادہ ہوگئي * میں نے اوسے ارکان مُسلماني کے سکھاکر کلمہ پڑھایا اور اپني بی بی بناي * چند روز میں وہ حاملہ ہوئي - ایک بیٹا پیدا ہوا * قریب تین برس کے اِسي صورت گُذري - جب لڑکے کا دودھہ بڑھایا ایک روز بیبي سے کہا کہ یہاں کب تلک رہینگے -

خیر جو تیري قسمت مین تھا سو ہوا - اب خُدا کے کرم سے اُمیدوار رہ - شاید اللہ تُجھے یہان سے جیتا نکالے *

آخر سب مُجھے تن تنہا چھوڑ کر اُس حِصار سے باہر نکلے اور دروازہ پھر مقفل کردیا * اُسوقت مین اپني تنہائي اور بے بسي پر بے اختیار رویا اور اُس عورت کي لوتھہ پر لاتین مارنے لگا کہ ای مُردار اگر تُجھے جنتے ہي مرجانا تھا بیاہ کاہے کو کیا تھا اور پیٹ سے کیون ہوئي تھي ؟ مارمور کر پھر چُپکا بیٹھا * اِس مین دِن چڑھا اور دھوپ گرم ہوئي - سرکا بھیجا پکنے لگا - اور تعفّن کے مارے روح نکلنے لگي * جدھر دیکھتا ہون مردون کي ہڈیان اور صندوق جواہر کے ڈھیر لگے ہین * تب کئي صندوق پرانے لیکر نیچے اُوپر رکھے کہ دِن کو دھوپ سے اور رات کو اوس سے بچاؤ ہو اور آپ پاني کي تلاش کرنے لگا - ایک طرف جھرنا سا دیکھا کہ قلعہ کي دیوار مین پتّھر کا تراشا ہوا گھڑے کے مُنہہ کے مُوافق ہی * بارے کئي دِن اُس پاني اور کھانے سے زندگي ہوئي *

آخر آزوقہ تمام ہوا - مین گھبرایا اور خداکي جناب مین فریاد کي * وہ ایسا کریم ہی کہ دروازہ کوٹ کا کُھلا اور ایک مردے کو لائے اُسکے ساتھہ ایک پیر مرد آیا * جب اُسے چھوڑ کر گئے - یہہ دل مین آیا کہ اِس بوڑھے کو مار کر اِسکے کھانے کا صندوق سبکا سب لے لے * ایک صندوق کا پایا ہاتھہ مین لیکر اُسکے پاس گیا - وہ بچارا سرزانون پر دھرے حیران بیٹھا تھا - مین نے پیچھے سے آکر اُسکے سر مین ایسا مارا کہ سرپھٹ کر مغز کا گودا نکل پڑا اور فی الفور جان بحق تسلیم ہوا * اُس کا آزوقہ لیکر مین کھانے

Digitized by Google

صندوق میں رکھکر صندوق آزوقے کا ایک اُونٹ پر لدوایا اور مُجھے سوار کیا اور صندوقچہ جواہر کا میرے بغل میں دیا اور سارے برھمن آگے آگے بھجن کرتے سنکھہ بجاتے چلے اور پیچھے ایک خلقت مُبارک باد کہتي ہوئي ساتھہ ہولي * اِس طور سے اُسي دروازے سے کہ میں پہلے روز آیاتھا شہر کے باھر نکلا * جونہیں داروغہ کي نگاہ مُجھہ پر پڑي رونے لگا اور بولا کہ ای کم بخت اجل گرفتہ میري بات نہ سُني اور اس شہر میں جاکر مُفت اپني جان دي - میری تقصیر نہیں - میں نے منع کیا تھا * اُسنے یہہ بات کہي لیکن میں تو ھکّا بکّا ہورھا تھا - نہ زبان یاري دیتي تھي کہ جواب دوں نہ آوسان بجا تھے کہ دیکھئے انجام میرا کیا ہوتا ھی *

آخر اُسي قلعے کے پاس جِسکا میں نے پہلے روز دروازہ بند دیکھا تھا لیگئے اور بہت سے آدمیوں نے مِل کر قفل کو کھولا اور تابوت اور صندوق کو اندر لے چلے * ایک پنڈت میرے نزدیک آیا اورسمجھا نے لگا کہ مانُس ایک دِن جنم پاتا ھی اور ایک روز ناس ہوتا ھی - دُنیا کا یہي آواگون ھی * اب یہہ تیري اِستري اور پوت اور دھن اور چالیس دِن کا اسباب بھوجن کا موجود ھی - اِسکولے اور یہاں رہ جب تلک بڑا بُت تُجھپر مہربان ہووے * میں نے غُصّے میں چاھا کہ اُس بُت پر اور وھاں کے رہنے والوں پر اور اِس ریت رسم پر لعنت کروں اور اُس باھمن کو دھول چھکّر کروں * وھي مرد عجمي اپني زبان میں مانع ہوا کہ خبردار ہرگز دم مت مار - اگر کُچھہ بھي بولا تو اِسي وقت تُجھے جلا دینگے *

Digitized by Google

جچا کر چڑھا - وہ بھي مرگئي * مين مارے غم کے ديوانہ ہوگيا کہ يہہ کيا آفت ٹوٹي ! اُسکے سرہانے بيٹھا روتا تھا - يکبارگي رونے کي آواز سارے محل مين بلند ہوئي اور چارون طرف سے عورتين آنے لگين * جو آتي تھي ايک دوہتڑ ميرے سر پر مارتي اور رونا شروع کرتي * اِتني رنڈيان اِکٹھي ہوئين کہ مين اُن مين چھپ گيا - نزديک تھا کہ جان نکل جاوے * اِتنے مين کِسونے پيچھے سے گريبان ميرا کھينچکر گھسيٹا - ديکھون تو وہي مرد عجمي ہي جِسنے مجھے بياہاتھا * کہنے لگا کہ احمق تو کِس لئے روتا ہي ؟ مين نے کہا اي ظالم يہہ تونے کيا بات کہي ؟ ميري پادشاہت لُٹ گئي - آرام خانہ داري کا گيا گُذرا - تو کہتا ہي کيون غم کرتا ہي ! وہ عزيز تبسّم کرکے بولا - کہ اب اپني موت کي خاطِر رو * مين نے پہلے ہي تجھے کہا تھا کہ شايد اِس شہر مين تيري اجل لے آئي ہي - سوہي ہوا - اب سواے مرنيکے تيري رہائي نہين * آخر لوگ مُجھے پکڑ کر بتخانے مين لیگئے - ديکھا تو پادشاہ اورآمرا اور چھتيس فِرقہ رعيّت پرجا وہان جمع ہين اور وزيرزادي کا مال اموال سب دھرا ہي - جو چيز جِسکا جي چاہتا ہي ليتا ہي - اُسکي قيمت کے روپے دھر ديتا ہي *

غرض سب اسباب کے نقد روپے ہوئے - اُن روپيون کا جواہر خريدا گيا اور ايک صندوقچہ مين بند کيا اور ايک دوسرے صندوق مين نان و حلوا اور گوشت کے کباب اور ميوۂ خشک و تر اور کھانے کي چيزين ليکر بھرين اور لاش اُس بيبي کي ايک

Digitized by Google

هماري بندگي مين آيا - اب هماري رحمت اور عنايت کا اميدوار رہ - يہہ سنکر سب خلقت نے سجدہ کيا اور زمين مين لوٹنے لگے اور پکارے - دهن هی کيون نہ هو - تم ايسے هي تهاکر هو * جب شام هوئي پادشاہ اور وزير سوار هوکر وزير کے محل مين داخل هوئے اور وزير کي بيٹي کو اپنے طور کي ريت رسم کرکے ميرے حوالے کيا اور بہت سا دان دهيز ديا اور بہت منّتوار هوئے کہ بموجب حکم بڑے بت کے اُسے تمهاری خدمت مين ديا هی * ايک مکان مين هم دونونکو رکها - اُس نازنين کو جو مين نے ديکها تو في الواقع اُسکا عالم پري کا سا تها - نکهہ سکهہ سے درست * جو جو خوبيان پدمني کي سُني جاتي هين سو سب اُس مين موجود تهين - مين اُسکو ديکهکر بہت خوش هوا * رات کو سو رها اور صُبح کو بادشاہ کے مُجرے مين حاضر هوا * پادشاہ نے خلعت دمادي کي عنايت کي اور حکم فرمايا کہ هميشہ دربار مين حاضر رها کرے * آخر کو بعد چند روز کے پادشاہ کي مُصاحبت مين داخل هوا *

پادشاہ ميري صحبت سے نہايت محظوظ هوتے اور اکثر خلعت اور اِنعام عنايت کرتے اگرچہ دنيا کے مال سے مين غني تها - اِسواسطے کہ ميرے قبيلے کے پاس اِتنا نقد و جنس اور جواهر تها کہ جسکي حد و نہايت نہ تهي * دو سال تک بہت عيش و آرام سے گُذري * اِتّفاقًا وزير زادي کو پيٹ رها - جب ستوانسا هوا اور آنگنا مہينا گُذرکر پورے دن هوئے پيڑين لگين - دائي جنائي آئي تو موا لڑکا پيٹ مين سے نکلا - اُسکا بس

اور اکابر یہان کے میری قدر کرتے ہین * اور درمیان ایک ہفتے کے دو دن بتکدے مین زیارت کو جاتے ہین اور عبادت بجا لاتے ہین چنانچہ کل سب جمع ہوینگے مین تجھے لیجاؤنگا * یہہ کہکر کھلا پلا کر سلا رکھا - جب صبح ہوئي مجھے ساتھہ لیکر بتخانیکي طرف چلا - وہان جاکر جو دیکھا تو آدمي آتے جاتے ہین اور پرستش کرتے ہین *

پادشاہ اور امیر بت کے سامہنے پنڈتون کے پاس سر ننگے کیئے ادب سے دو زانو بیٹھے تہے اور ناکتخدا لڑکیان لڑکے خوبصورت جیسے حور و غلمان چارون طرف صف باندھے کہڑے تہے * تب وہ عزیز مجھسے مخاطب ہوا کہ اب مین جو کہون سو کر * مین نے قبول کیا کہ جو فرماؤ سو بجالاؤن * بولا کہ پہلے بادشاہ کے ہاتھہ پاون کو بوسہ دے بعد آسکے وزیر کا دامن پکڑ - مین نے ویساہي کیا * بادشاہ نے پوچھا کہ یہہ کون ہی اور کیا کہتا ہی ؟ اس مرد نے کہا یہہ جوان میرے رشتے مین ہی بادشاہ کي قدم بوسي کے آرزو مین دور سے آیا ہی اس توقع پر کہ وزیر آسکو اپني غلامي مین سربلند کرے اگر حکم بت کلان کا اور مرضي حضور کي ہووے * بادشاہ نے پوچھا کہ ہمارا مذہب اور دین و آئین قبول کریگا تو مبارک ہی * و وہین بت خانیکا نقار خانہ بجنے لگا اور بہاري خلعت مجھے پہنائي اور ایک رسّي سیاہ میرے گلے مین ڈالکر کھینچتے ہوئے بت کي سنگہاسن کے آگے لیجا کر سجدہ کرواکر کہڑا کیا *

بت سے آواز نکلي کہ ای خواجہ زادے ! خوب ہوا کہ تو

Digitized by Google

چکا ہوں - اب تو قسمت لے آئی - لیکن شفقت فرماکر یہانکی راہ و رسم سے مطّلع کیجئے تو معلوم کروں کہ اِسواسطے تُمنے اور تُمھارے بھائی نے مُجھے منع کیا * تب وہ جوان مرد بولا کہ پادشاہ اور تمام رئیس اِس شہر کے راندے ہوئے ہین - عجب طرح کا اُنکا رویّہ اور مذہب ہی * یہان بُتخانے مین ایک بُت ہی کہ شیطان اُسکے پیٹ مین سے نام اور ذات اور دین ہر کِسوکا بیان کرتا ہی - پس جو کوئی غریب مُسافر آتا ہی پادشاہ کو خبر ہوتی ہی - اُسے مذہب مین لیجاتا ہی اور بُت کو سجدہ کرواتا ہی * اگر ڈنڈوت کی تو بہتر نہین تو بیچارے کو دریا مین ڈبوا دیتا ہی - اگر وہ چاہے کہ دریا سے نِکل کر بھاگے تو اُسکے اعضا ایسے پھول جاتے ہین کہ چل نہین سکتا - ایسا طِلسم اس شہر مین بنایا ہی * مجھکو تیری جوانی پر رحم آتا ہی مگر تیری خاطِر ایک تدبیر کرتا ہون کہ بھلا کوئی دِن تو تو جیتا رہے اور اِس عذاب سے بچے *

مین نے پوچھا وہ کیا صورت تجویز کی ہی ؟ ارشاد ہو * کہنے لگا تجھے کتخدا کروں اور وزیر کی لڑکی تیری خاطِر بیاہ لاؤن * مین نے جواب دیا کہ وزیر اپنی بیٹی مُجھہ سے مُفلس کو کب دیگا مگر جب کہ اُنکا دین قبول کروں ؟ سو یہہ مُجھہ سے نہوسکیگا * کہنے لگا اِس شہر کی یہہ رسم ہی کہ جو کوئی اُس بُت کو سجدہ کرے اگر فقیر ہو اور پادشاہ کی بیٹی کو مانگے تو اُسکی خوشی کی خاطر حوالے کریں اور اُسے رنجیدہ نکریں * اور میرا بھی پادشاہ کے نزدیک اعتبار ہی اور عزیز رکھتا ہی - لہذا سب ارکان

Digitized by Google

میرا بڑا بھائي ھی * اُسکو یہہ چھاپ دیجیو تو وہ تیري خبرگیري کریگا اور جو کچھہ وہ کہے اُسي موافق کام کیجیو نہین تو مُفت مارا جائیگا اور میرا حُکم یہین تلک ھی - شہر مین میرا دخل نہین * تب مین نے وہ خاتم اُس سے لي اور سلام کرکر رُخصت ھوا * شہر مین گیا بُہت خاصہ شہر دیکھا کوچہ و بازار صاف اور زن و مرد بے حجاب آپس مین خرید و فروخت کرتے سب خوش لباس * مین سیر کرتا اور تماشا دیکھتا جب چوک کے چوراہے مین پُہنچا ایسا اژدھام تھا کہ تھالي پھینکتے تو آدمیون کے سر پر چلي جاے * خلقت کا یہہ تہّہ بندھہ رھاتھا کہ آدمي کو راہ چلنا مشکل تھا * جب کُچھہ بھیڑ چھٹّي مین دھکّم دھکّا کرتا ھوا آگے گیا * بارے اُس عزیز کو دیکھا کہ ایک چوکي پر بیٹھا ھی اور ایک جوان چُماق روبرو دھرا ھی * مینے جاکر سلام کیا اور وہ مُہر دی - نظر غضب سے میري طرف دیکھا اور بولا - کیون تو یہان آیا اور اپنے تئین بلا مین ڈالا ؟ مگر میرے بیوقوف بھائي نے تجھے منع نکیا تھا

مین نے کہا - اُنہون نے تو کہا لیکن مین نے نہ مانا اور تمام کیفیت اپني اِبتدا سے اِنتہا تک کہہ سُنائي * وہ شخص اُٹھا اور مُجھے ساتھہ لیکر اپنے گھر کي طرف چلا - اُسکا مکان پادشاھونکاسا دیکھنے مین آیا اور بُہت سے نوکر اُسکے تھے * جب خلوت مین جاکر بیٹھا بملایمت بولا کہ ای فرزند ! یہہ کیا تونے حماقت کي کہ اپنے پاونسے گور مین آیا ؟ کوئي بھي اِس کم بخت طلسماتي شہر مین آیا ھي ؟ مین نے کہا مین اپنا احوال پیشتر کہہ

Digitized by Google

ملک پہنچایا اور تو کہتا ہی کیون آیا * کہنے لگا اب تو آرام کر - کل جو کہنا ہوگا کہونگا *

جب صبح ہوئي بولا کوٹھري مین پھاوڑا اور چھلني اور توبڑہ ہی باہر لے آ * مین دل مین کہا کہ خدا جانے روٹی کھلا کر کیا محنت مجھہ سے کروائیگا * لاچار وہ سب نکالکر اُسکے روبرو لایا * تب اُسنے فرمایا کہ اُس ٹیلے پر جا اور ایک گز کے موافق گڑھا کھود وہان سے جو کچھہ نکلے اِس چھلني مین چھان - جو نہ چھن سکے اُسے توبڑے مین بھر کر میرے پاس لا * مین وہ سب چیزین لیکر وہان گیا اور اُتنا ہي کھود کر چھان چھون کر توبڑے مین ڈالا - دیکھا تو سب جواہر رنگ برنگ کے تھے - اُنکي جوت سے آنکھین چوندھیا گئین * اُسیطرح تھیلے کو مونہا مُنہہ بھر کر اُس عزیز کے پاس لیگیا - دیکھکر بولا کہ جو اِس مین پڑا ہی تو لے اور یہان سے جا کہ تیرا رہنا اِس شہر مین خوب نہین * مین نے جواب دیا کہ صاحب نے اپنی جانب مین بڑي مہربانگي کي کہ اِتنا کچھہ کنکر پتھر دیا لیکن میرے کس کام کا ؟ جب بھوکا ہونگا تو نہ اِنکو چبا سکونگا نہ پیٹ بھرونگا - اگر اور بھي دو تو میرے کس کام آئینگے ؟ وہ مرد ہنسا اور کہنے لگا کہ مجھکو تجھہ پر افسوس آتا ہی کہ تو بھي ہمارے مانند مُلک عجم کا متوطن ہی اِسلئے مین منع کرتا ہون نہین تو توجان - اگر خواہ نخواہ تیرا یہي قصد ہی کہ شہر مین جاؤن تو میري انگوٹھي لیتا جا - جب بازار کے چوک مین جاوے تو ایک شخص سفید ریش وہان بیٹھا ہوگا اور اُسکي صورت شکل مُجھہ سے بہت مُشابہ ہی

بعد دیر کے جب جاگا اُن مین سے ایک شخص میرے نزدیک آیا اور راہ دِکھانے لگا * مین نے تھوڑے سے چنے اُٹھا لئے اور اُس راہ پر چلا * ایک کف دست میدان تھا گویا صحراے قیامت کا نمونہ کہا چاہئے - وہی بونٹ کھاتا ہوا چلا جاتا تھا * بعد چار دِن کے ایک قلعہ نظر آیا - جب پاس گیا تو ایک کوہ دیکھا بہت بلند تمام پتّھر کا اور ہر ایک الگ اُسکی دو دو کوس کی اور دروازہ ایک سنگ کا تراشا ہوا ایک قُفل بڑا سا جڑا تھا لیکن وہان اِنسان کا نشان نظر نہ پڑا * وہان سے آگے چلا ایک ٹیلا دیکھا کہ اُسکی خاک سرمے کے رنگ سیاہ تھی - جب اُس تل کے پار ہوا تو ایک شہر نظر پڑا بہت بڑا گِرد شہر پناہ اور جابجا بُرج - ایک طرف شہر کے دریا تھا بڑے پاٹ کا * جاتے جاتے دروازے پر گیا اور بسم اللہ کہکر قدم اندر رکھا * ایک شخص کو دیکھا پوشاک اہل فرنگ کی پہنے ہوئے کُرسی پر بیٹھا ہی * جون اُنہنے مُجھے اجنبی مُسافر دیکھا اور میرے مُنہہ سے بسم اللہ سنی پکارا کہ آگے آؤ * مین نے جاکر سلام کیا - نہایت مہربانی سے سلام کا جواب دیا - تُرت میز پر پانو روٹی اور مسکہ اور مرغ کا کباب اور شراب رکھکر کہا پیٹ بھر کر کھاؤ * مین نے تھوڑا سا کھایا اور بے خبر ہوکر سویا * جب رات ہوگئی تب آنکھہ کُھلی ہاتھہ مُنہہ دھویا - مُجھے کھانا کھلایا اور کہا کہ ای بیٹا ! اپنا احوال کہہ * جو کُچھہ مُجھپر گُذرا تھا سب کہہ سُنایا - تب بولا کہ یہان تو کیون آیا ؟ مین نے دق ہوکر کہا شاید تو دیوانہ ہی - مین نے بعد مُدّت کی مِحنت کے اب بستی کی صورت دیکھی ہی - خُدا نے یہان

یہہ کہکر مُجھے خواہ نخواہ ساتھہ لیا اور روانہ ہوا - خیروعافیت سے راہ کٹي - جب ہندوستان مین پُہنچے کُچھہ جنس وہان بیچي اور وہان کي سوغات لیکر زیرباد کے مُلک کو گئے * یہہ بھي سفر بخوبي ہوا - وہان سے بھي خرید فروخت کرکے جہاز پر سوار ہوئے کہ جلدي وطن مین پُہنچیں * بعد ایک مہینے کے ایک روز آندھي اور طوفان آیا اور مینہہ موسلادھار برسنے لگا - سارا زمین و آسمان دھوان دھار ہو گیا اور پتوار جہاز کي ٹوٹ گئي * مُعلّم ناخُدا سرپیٹنے لگے - دس دن تلک ہوا اور موج جدھر چاہتي تھي لئے جاتي تھي - گیارھوین روز ایک پہاڑ سے ٹکّر کھا کے جہاز پُرزے پُرزے ہوگیا * نہ معلوم ہوا کہ باپ اور نوکر چاکر اور اسباب کہان گیا *

مین نے اپنے تئین ایک تختے پر دیکھا - سہ شبانہ روز وہ پنڑا بے اختیار چلاگیا * چوتھے دن کنارے پر جا لگا - مُجھہ مین فقط جان باقي تھي * آسپاس سے اُتر کر گھٹنیون چل کر بارے کسو نہ کسو طرح زمین پر پُہنچا * دور سے کھیت نظر آئي اور بہت سے آدمي وہان جمع تھے لیکن سب سیاہ فام اور ننگے مادرزاد مُجھہ سے کُچھہ بولے لیکن مین نے اُنکي زبان مُطلق نہ سمجھي * وہ کھیت چنون کي تھي - وہ آدمي آگ کا الاؤ جلاکر بونٹون کے ہولے کرتے تھے اور کھاتے تھے اور کُچھ ایک گھر بھي وہان نظر آئے * شاید اُنکي خوراک یہي تھي اور وہین بستے تھے - مُجھے بھي ارشاد کرنے لگے کہ تو بھي کھا * مین نے بھي ایک مُٹھي اُٹھاکر بھوننے اور پھانکنے لگا - تھوڑا سا پاني پیکر ایک گوشے مین سو رہا *

کے کچھہ کھانیکو دو * مدّت سے گھاس اور بناس پتیاں کھاتا چلا آتا ہوں۔ ایک ذرا قوت مجھہ میں باقی نہیں رہی * روٹی پین نان و کباب اور شراب میں نے منگوادی - وہ کھانے لگا *

اِتنے میں خواجہ سرا محل سے کئی تھیلیاں اور اُس کی قبیلے کے پاس سے لے آیا * میں نے اُن سبکو کھلوایا - ہر ایک قسم کے جواہر دیکھے کہ ایک ایک دانہ اُنکا خراج سلطنت کا کھا چاہئے * ایک سے ایک انمول قول میں اور تول میں اور آبداری میں اور اُنکی جوت پڑنے سے سارا مکان بو قلموں ہوگیا * جب اُسنے ٹکڑا کھایا اور ایک جام دارو کا پیا اور دم لیا حواس بجا ہوئے - تب میں نے پوچھا ہے پتّھر تجھے کہاں ہاتھہ لگے - جواب دیا کہ میرا وطن ولایت آذربایجان ہی - لڑکپن میں گھر باو ماباپ سے جُدا ہوکر بہت سختیاں کھینچیں اور ایک مدّت تلک میں زندہ در گور تھا اور کئی بار ملک الموت کے پنجے سے بچا ہوں * میں نے کہا ای مرد آدمی مفصّل کہہ تو معلوم ہو * تب وہ اپنا احوال بیان کرنے لگا کہ میرا باپ سوداگر پیشہ تھا - ہمیشہ سفر ہندوستان و روم و چین و خطا و فرنگ کا کرتا * جب میں دس برس کا ہوا باپ ہندوستان کو چلا - مجھے اپنے ساتھہ لیجانیکو چاہا * ہرچند والدہ نے اور خالا - مُمانی - پھوپی نے کہا کہ ابھی یہہ لڑکا ہی لائق سفر کے نہیں ہوا والد نے نہ مانا اور کہا کہ میں بوڑھا ہوا اگر یہہ میرے روبرو تربیت نہوگا تو یہہ حسرت گور میں لیجاؤنگا - مرد بچّا ہی اب نہ سیکھیگا تو کب سیکھیگا *

Digitized by Google

حرامزادگي مين هرگز قصور نهين - سچ هي کُتّے کي دُم کو بارہ برس کاڑ دو تو بهي ٹيڑهي کي ٹيڑهي رہے * اُسکے بعد مين نے حقيقت اُن بارهوں لعل کي (که اُس کُتّے کے پٹّے مين تهے) پوچهي * خواجه بولا که پادشاه کي صد و بيست سال کي عُمو هو - اُسي بندر مين جهان مين حاکم تها بعد تين چار سال کے ايکروز بالا خانے پر محل کے (که بلند تها) واسطے سير اور تماشے دريا و صحرا کے مين بيٹها تها اور هر طرف ديکهتا تها * ناگاه ايکطرف جنگل مين که وهان شاه راه نه تهي دو آدمي کي تصوير سي نظر آئي که چلے جاتے هين * دوربين ليکر ديکها تو عجب هيئت کے انسان دکهائي ديئے * چوبدارونکو اُنکے واسطے دوڑايا * جب وے آئے معلوم هوا که ايک عورت اور ايک مرد هي * رفتيکو محل سرا مين ملکه کے پاس بهيج ديا اور مرد کو روبرو بُلايا * ديکها تو ايک جوان برس بيس بائيس کا ڈاڑهي موچهه آغاز هي ليکن دهوپ کي گرمي سے اُسکے چهرے کا رنگ کالے توے کا سا هو رها هي اور سر کے بال اور هاتهون کي ناخن بڑهه کر بن مانُس کي صورت بن رها هي اور ايک لڑکا برس تين چار ايک کا کاندهے پر اور دو آستينين کرتے کي بهري هوئين هيکل کي طرح گلے مين ڈالے - عجيب صورت اور عجب وضع اُسکي ديکهي - مين نے نهايت حيران هوکر پوچها اي عزيز ! تو کون هي اور کِس مُلک کا باشنده هي اور يهه کيا تيري حالت هي ؟ وه جوان بے اختيار رونے لگا اور وه هميانی کهول کر ميرے آگے زمين پر رکهي اور بولا الجوع الجوع ! واسطے خُدا

Digitized by Google

پاس رکھا - اِن بد ذاتون نے پھر میرے مارنے کا منصوبہ کر کر ایکروز آدھي رات مین سبکو غافل پاکر چوٹّون کی طرح میرے سرھانے آپہنچے * مین نے اپنی جان کے ڈر سے چوکیدارون کو دروازے پر رکھا تھا اور یہہ کُتّا وفادار میری چارپائیکی پٹّي کے تلے سوتا تھا - جون اِنھون نے تلوارین میان سے کھینچین پہلے کُتّے نے بھونک کر اُنپر حملہ کیا - اُسکي آوازسے سب جاگ پڑے - مین بھي ھل بلا کر چونکا * آدمیون نے اُنکو پکڑا - معلوم ھوا کہ آپھي ھین * سب لعنتیان دینے لگے کہ با وجود اِس خاطر داری کے یہہ حرکت اِن سے ظُھور مین آئي !

پادشاہ سلامت ! تب تو مین بھي ڈرا - مثل مشھور ھی - ایک خطا دو خطا تیسري خطا مادر بخطا * دل مین یہي صلاح ٹھہري کہ اب اِنکو مُقیّد کرون لیکن اگر بندي خانے مین رکھون تو اِنکا کون خبر گیران رھیگا ؟ بھوک پیاس سے مرجائینگے یا کوئي اور سوانگ لائینگے * اِسواسطے قفس مین رکھا ھی کہ ھمیشہ میري نظرون کے تلے رھین تو میري خاطر جمع رہے مبادا آنکھون سے اُوجھل ھوکر کُچھہ اور مکر کرین * اور اِس کُتّے کي عزّت اور حُرمت اُسکي نمک حلالي اور وفاداري کا سبب ھی - سبحان اللہ ! آدمي بیوفا بدتر حیوان باوفا سے ھی * میري یہہ سرگُذشت تھي جو حُضور مین عرض کي - اب خواہ قتل فرمایئے یا جان بخشي کیجئے حُکم بادشاہ کا ھی *

مین نے سُنکر اُس جوان با ایمان پر آفرین کي اور کہا کہ تیري مُروّت مین کُچھہ خلل نہین اور اِنکي بیحیائي اور

Digitized by Google

لگا اور خُدا کي بندگي کرنے لگا * میرے اِنصاف کے باعث رعیّت پرجا خوش تھے * مہینے مین ایک بار بُتخانے مین اور پادشاہ کے حُضور آتا جاتا - پادشاہ روز بروز زیادہ سرفرازي فرماتا * آخر مُصاحبت مین مُجھے داخِل کیا - میري بے صلاح کوئي کام نہوتا - نہایت بے فکري سے زندگي گذرنے لگي - مگر خداهي جانتا هی اکثر اندیشہ اِندنون بھائیونکا دِل مین آتا کہ وے کہان هونگے اور کِسطرح هونگے * بعد مُدّت دربرس کے ایک قافلہ سوداگرونکا مُلک زیرباد سے اُس بندر مین آیا - وے سب قصد عجم کا رکھتے تھے - اُنھون نے یہہ چاها کہ دریا کي راہ سے اپنے مُلک کو جاوین * وهان کا قاعدہ یہہ تھا کہ جو کاروان آتا اُسکا سردار سوغات و تحفہ هرایک مُلک کا میرے پاس لاتا اور گُذرانتا - دوسرے روز مین اُسکے مکان پر جاتا وہ یکي بطریق محصول کے اُسکے مال سے لیتا اور پروانگي کوچ کي دیتا * اِسیطرح وہ سوداگر زیرباد کے بھي میري مُلاقات کو آئے اور بے بہا پیشکش لائے * دوسرے دن مین اُنکے خیمے مین گیا دیکھا تو دوآدمي پھٹے پُرانے کپڑے پہنے گٹھري بُقچے سر پر اُٹھا کر میرے روبرو لاتے هین - بعد مُلاحظہ کرنے کے پھر اُٹھا لیجاتے هین اور بڑي محنت اور خِدمت کر رہے هین * مین نے خوب نِجھاکر جو دیکھا تو یہي میرے دونون بھائي هین * اُسوقت غیرت وحمیت نے نہ چاها کہ اونکو اِسطرح خِدمتگاري مین دیکھون * جب مین اپنے گھر کو چلا آدمیون کو کہا کہ اِن دونون شخصونکو لئے آؤ * اُنکو لائے - پھر لِباس و پوشاک بنوادي اور اپنے

میں محل میں داخل ہوا * ملکہ سے ملاقات کی - آپس میں گلے لگ کر روئے اور شکر خدا کا کیا * میں نے اسکے آسنے میرے آنسو پونچھے * پھر باہر مسند پر بیٹھکر اہل کاروں کو خلعتیں دیں اور اپنی اپنی خدمتوں پر سبکو بحال کیا * نوکر اور غلاموں کو سرفرازی دی * وے لوگ جو منڈپ سے میرے ساتھ متعین ہوئے تھے ہرایک کو انعام بخشش دیکر اور انکے جمعدار رسالہ دار کو جوڑے پہناکر رخصت کیا اور جوہر بیش قیمت اور تھان زربافی اور شال باقی اور زردوزی اور جنس و تحفے ہرایک ملک کے اور نقد بہت سا بادشاہ کی نذر کے خاطر اور موافق ہرایک امراؤنکے درجہ بدرجہ اور پنڈیایں کے لئے اور سب پنڈتوں کے تقسیم کرنے کی خاطر اپنے ساتھ لیکر بعد ایک ہفتے کے میں بتکدے میں آیا اور اس ماتا کے آگے بطریق بھینٹ کے رکھا *

اسنے ایک اور خلعت سرفرازی کی مجھے بخشی اور خطاب دیا * پھر بادشاہ کے دربار میں جاکر پیشکش گذرانی اور جو جو ظلم و فساد شاہ بندر نے ایجاد کیا تھا اسکے موقوف کرنے کی خاطر عرض کی * اس سبب سے بادشاہ اور امیر سوداگر سب مجھسے راضی ہوئے - بہت نوازش مجھہ پر فرمائی اور خلعت اور گھوڑا دیکر منصب جاگیر عنایت کی اور آبرو حرمت بخشی * جب بادشاہ کے حضور سے باہر آیا شاگرد پیشوں کو اور اہل کاروں کو اتنا کچھہ دے کر راضی کیا کہ سب میرا کلمہ پڑھنے لگے * غرض میں بہت مرفہ الحال ہو گیا اور نہایت چین و آرام سے اس ملک میں ملکہ سے عقد باندھہ کر رہنے

Digitized by Google

رکھہ کر رُخصت کیا * مین خوشي بخوشي بُت خانے مین آیا اور اُس بڑھیا کے پاس گیا *

بادشاہ کا خط جو آیا تھا اُسکا یہہ مضمون تھا - القاب کے بعد بندگي عجز و نیاز لکھکر لکھا تھا کہ - مُوافق حُکم حُضُور کے اِس مرد مُسلمان کو خدمت شاہ بندر کي مُقرّر ہوئي اور خلعت دي گئي * اب یہہ اُسکے قتل کرنے کا مُختار ہی اور سارا مال و اموال اُسکا اِس تُرک کا ہوا - جو چاہے سرکرے - اُمیدوار ہون کہ میري تقصیر مُعاف ہو * برہمنونکي ما نے خوش ہو کر فرمایا کہ نوبتخانے مین بُتخانے کي نوبت بجے * اور پانچ سو سپاہي برقنداز جو بال باندھی کوڑی مارین مُسلّح میرے ہمراہ کردئے اور حُکم کیا کہ بندر مین جاکر شاہ بندر کو دستگیر کر کے اِس مُسلمانکے حوالے کرین * جسطرح کے عذاب سے اِسکا جي چاہے اُسے مارے * اور خبردار سواے اِس عزیز کے کوئي محل سرا مین داخِل نہووے اور اُسکے مال و خزانے کو امانت اِسکے سپرد کرین * جب یہہ بخوشي رخصت کرے رسید اور صافي نامہ اِس سے لیکر پھر آوین اور ایک سرے پاؤن بُت بُزرگ کي سرکار سے میرے تئین دیکر سوار کرواکر وداع کیا *

جب مین بندر مین پہنچا ایک آدمي نے بڑھکر شاہ بندر کو خبر کي * وہ حیران سا بیٹھا تھا کہ مین جا پہنچا * غُصّہ تو دِل مین بھرھي رہا تھا - دیکھتے ھي شاہبندر کو تلوار کھینچ کر ایسي گردن مین لگائي کہ اُسکا سر الگ بُھٹّا سا اُڑ گیا * اور وہان کے گماشتے خزانچي مُشرف داروغونکو پکڑواکر سب دفتر ضبط کیئے اور

اگر شاہ بندر کے ساتھہ ملکہ کو بھي لاویں تو پردہ فاش ہوگا اور میرا کیا احوال ہوگا ؟ دل میں نہایت خوفزدہ ہوکر خُدا کیطرف رجوع کي لیکن میرے مُنہہ پر ہوائیاں اُڑنے لگیں اور بدن کانپنے لگا * لڑکوں نے یہہ میرا رنگ دیکھہ شاید دریافت کیا کہ یہہ حُکم اِسکي مرضي کے مُوافق نہوا * ورنہیں خفا و برہم ہوکر اُٹھے اور بادشاہ کو جھڑک کر بولے ای مردک ! تو دیوانہ ہوا ہی جو فرمان برداري سے بڑے بت کي نکلا اور ہمارے بچّن کو جھوٹھہ سمجھا جو دونوں کو بُلواکر تحقیق کیا چاہتا ہی ؟ اب خبردار تو غضب میں بڑے بُت کے بڑا - ہمنے تُجھے حُکم پہنچا دیا - اب تو جان اور بڑا بُت جانے * اِس کہنے سے پادشاہ کي عجب حالت ہوئي کہ ہاتھہ جوڑ کر کھڑا ہوگیا اور سر سے پاؤں تلک رعشہ ہوگیا * منّت کرکے منانے لگا - یے دونوں ہرگز نہ بیٹھے لیکن کھڑے رہے * اِس میں جتنے امیر اُمرا وہاں حاضر تھے ایک مُنہہ ہوکر بدگوئي شاہ بندر کي کرنے لگے کہ وہ ایسا ہی حرام زادہ بدکار اور پاپي ہی - ایسي ایسي حرکتیں کرتا ہی کہ حُضور میں پادشاہ کے کیا عرض کریں ؟ جو کُچھہ برہمنونکي ماتا نے کہلا بھیجا ہی درست ہی اِسواسطے کہ حُکم بڑے بُت کا ہی - یہہ دروغ کیونکر ہوگا ؟ پادشاہ نے جب سبکي زباني ایک ہي بات سُني اپنے کہنے سے بہت خجل اور نادم ہوا * جلد ایک خلعت پاکیزہ مُجھے دي اور حُکم نامہ اپنے ہاتھہ سے لکھہ اُسپر دستي مُہر کرکر میرے حوالے کیا اور ایک رقعہ مادر برہمنان کو لکھا اور جواہر اشرفیونکے خوان لڑکونکے روبرو پیشکش

کون هی ؟ اُسکي یهه مجال هوئي که بیگاني تریا کو بزور چهین لیتا هي ؟ لوگون نے کها که فلانا شخص هي * یهه سُنکر اُن دونون لڑکون کو (جو پاس بیٹهے تهے) فرمایا که جلدي اِس مانُس کو ساتهه لیکر پادشاه کے پاس جاؤ اور کهو که ماتا فرماتي هي که حُکم بڑے بُت کا یهه هي که شاه بندر آدمیون پر زور زیادتي کرتا هي - چنانچه اِس غریب کي عورت کو چهین لیا هي - اُسکي تقصیر بڑی ثابت هوئي * جلد اُس گمراه کے مال کا تعلیقه کرکر اِس تُرک کے (که همارا منظور نظر هي) حوالے کر - نهین تو آج واتکوتو ستیاناس هوگا اور همارے غضب مین پڑیگا * وے دونون طفل اُٹهه کر مندِل سے باهر آئے اور سوار هوئے - سب پنڈے سنکهه بجاتے اور آرتي گاتے جلو مین هولیئے *

غرض وهانکے بڑے چهوٹے جهان اُن لڑکون کا پاؤن پڑتا تها وهانکي مِٹّي تبرُّک جانکر اُٹها لیتے اور آنکهون سے لگا تے * اُسي طرح پادشاه کے قلعے تک گئے • پادشاه کو خبر هوئي - ننگے پاون اِستقبال کي خاطِر نِکل آیا اور اُنکو بڑے مان مهت سے لیجا کر اپنے پاس تخت پر بیٹهایا اور پوچها - آج کیونکر تشریف فرمانا هوا ؟ اُندونون برهمن بچون نے ما کی طرف سے جو کُچهه سن آئے تهے کها اور بڑے بُت کي خفگی سے ڈرایا *

پادشاه نے سُنتے هي فرمایا بهت خوب - اور اپنے نوکرونکو حُکم کیا - که مُحصّل جاویں اور شاه بندر کو بمعهٔ اُس عورت کے جلد حُضُور مین حاضر کریں تو مین تقصیر اُسکی تجویز کرکے سزادون * یهه سُنکر مین اپنے دل مین گهبرایا که یهه بات تو اچّهی نهوئی -

Digitized by Google

بھجن کرتے اور بجاتے خلعت لیئے میرے پاس آئے اور رُخصت کرنے لگے * میں راضي نہوا اور دُھائي بڑے بُت کي دی کہ میں گدائي کرنے نہیں آیا بلکہ اِنصاف کے لئے بڑے بُت اور برھمنونکي ماتا کے پاس آیا ہوں - جب تلک اپني داد نہ پاونگا یہاں سے نہ جاؤنگا * وے سنکر اُس پیرزال کے روبرو گئے اور میرا احوال بیان کیا * بعد اُسکے ایک چوبے آیا اور میرے تئیں کہنے لگا کہ چل ماتا بُلاتي ھی * میں وونہیں کالا تات سرسے پاؤں تلک اُوڑھے ہوئے دھرے میں گیا * دیکھتا ہوں کہ ایک جڑاؤ سنگھاسن پر جس میں لعل الماس اور موتي مونگا لگا ہوا ھی بڑا بُت بیٹھا ھی اور کُرسي زرّیں پرفرش معقول بچھا ھی اُسپر ایک بُڈھیا سیاہ پوش مسند تکئے لگائے اور دو لڑکے دس بارہ برس کے ایک داھنے ایک بائیں شان و شوکت اور تجمّل سے بیٹھي ھی * مُجھے آگے بُلایا - میں ادب سے آگے گیا اور تخت کے پائے کو بوسہ دیا - پھر اُسکا دامن پکڑ لیا * اُسنے میرا احوال پوچھا - میں نے اُسیطرح جس طور سے ملکہ نے تعلیم کر دیا تھا ظاھر کیا * سُنکر بولي کہ کیا مُسلمان اپني اِستریوں کو اُوجل میں رکھتے ھیں ؟ میں نے کہا ھاں تُمھارے بچھونکي خیر ہو - یہہ ھماري رسم قدیم ھي * بولي کہ تیرا اچّھا مذھب ھی - میں ابھي حُکم کرتي ہوں کہ شاہ بندر بمعہٗ تیری جورو آن کر حاضر ہوتا ھي اور اُس گیدي کو ایسي سیاست کروں کہ پھر دیگر ایسي حرکت نکرے اور سبکے کان کھڑے ہوں اور ڈریں * اپنے لوگوں سے پوچھنے لگي کہ شاہ بندر

جتنے چھوٹے بڑے اِس ملک کے ہیں اُسکے کہنے کو اپني سعادت جانتے ہیں - جو وہ فرماتي ہی بسر و چشم مانتے ہیں * اُسکا دامن پکڑکر کہیو اي مائي ! اگر مُجھہ مظلوم مُسافر کا اِنصاف ظالم سے نہ کریگي تو مین بڑے بُت کي خدمت مین ٹکریں مارونگا - آخر وہ رحم کھا کر تجھہ سے میري سفارش کریگا *

اُسکے بعد وہ برہمنون کي ماتا جب تیرا سب احوال پوچھے تو کہیو کہ مین عجم کا رہنے والا ہون - بڑے بُت کي زیارت کي خاطر اور تُمھاري عدالت سُنکر کالے کوسون سے یہان آیا ہون * کئي دِنون آرام سے رہا - میری بیبي بھي میرے ساتھہ آئي تھي - وہ جوان ہی اور صورت شکل بھي اچھي ہی اور آنکھہ ناک سے درست ہی - معلوم نہین کہ شاہ بندر نے اُسے کیونکر دیکھا - بزور مُجھہ سے چھین کر اپنے گھر مین ڈال دیا * اور ہم مُسلمانون کا یہہ قاعدہ ہی کہ جو نامحرم عورت کو اُن کي دیکھے یا چھین لے تو واجب ہي کہ اُسکو جسطرح ہو مارڈالین اور اپني جورو کو لےلین اور نہین تو کھانا پینا چھوڑدین کیون کہ جب تلک وہ جیتا رہے وہ عورت خاوند پر حرام ہي * اب یہان لاچار ہوکر آیا ہون - دیکھئے تُم کیا اِنصاف کرتي ہو * جب ملکہ نے مُجھے یہہ سب سِکھا پڑھا دیا مین رُخصت ہو اُسي تابِدان کي راہ سے نِکلا اور وہ جالي آھني پھر لگادي * صبح ہوتے بتخانے مین گیا اور وہ سیاہ پلاس اُڑھہ کر بیٹھا * تین روز مین اِتنا روپیہ اور اشرفي اور کپڑا میرے نزدیک جمع ہوا کہ انبار لگ گیا * چوتھے دِن پنڈے

تو تمہاري خاطر آسمان پر چلا جاؤن - جو کچھہ فرماو سو بجالاؤن * ملکہ نے کہا تو بڑے بت کے بتخانے مین جا اور جس جگہہ جوتیان اُتارتے ہین وہان ایک سیاہ ٹاٹ پڑا رہتا ہی * اس ملک کي رسم ہی کہ جو کوئي مفلس اور محتاج ہو جاتا ہی اُس جگہہ وہ ٹاٹ اوڑھہ کر بیٹھتا ہی- یہان کے لوگ جو زیارت کو جاتے ہین موافق اپنے اپنے مقدور کے اُسے دیتے ہین *

جب دو چار دن مین مال جمع ہوتا ہی - پنڈے ایک خلعت بڑے بت کي سرکار سے دیکر اُسے رخصت کرتے ہین - وہ تونگر ہوکر چلا جاتا ہی - کوئي نہین معلوم کرتا کہ یہہ کون تھا * تو بھي جاکر اُس پلاس کے نیچے بیٹھہ اور ہاتھہ منہہ اپنا خوب طرح چھپالے اور کسو سے نہ بول * بعد تین دن کے باھمن اور بت پرست ہرچند تجھے خلعت دیکر رخصت کرین تو وہان سے ہرگز نہ اُٹھہ * جب نہایت منّت کرین تب تو بولیو کہ مجھے روپیہ پیسا کچھہ درکار نہین - مین مال کا بھوکا نہین - مین مظلوم ہون - فریاد کو آیا ہون - اگر برھمنون کي ماتا میري داد دے تو بہتر نہین تو بڑا بت میرا انصاف کریگا اور اُس ظالم سے یہي بڑا بت میری فریاد کو پہنچیگا * جب تلک وہ ما باھمنون کي آپ تیرے پاس نہ آوے بہتیرا کوئي منارے تو راضي نہوجیو * آخر لاچار ہوکر وہ خود تیرے نزدیک آویگي - وہ بہت بوڑھي ہی - دو سو چالیس برس کي عمر ہی - اور چھتیس بیٹے اُسکے جنے ہوئے بتخانے کے سردار ہین اور اُسکا بڑے بت کے پاس بڑا درجہ ہی * اِس سبب اُسکا اِتنا بڑا حکم ہي کہ

تھو اور میں پہچانی نہ جاوں اور تیری جان پر آفت نہ آوے *
وہ ایسا ستّار ھی کہ ھرگز کسونے نہ دریافت کیا کہ یہہ ملکہ ھی -
شاہ بندر ھر ایک کو بنظر خریداری دیکھتا تھا * جب میری
باری ھوئی مجھے پسند کرکر اپنے گھر میں چپکے بھیج دیا -
اوروں کو بادشاہ کے حضور گذرانا *

میرے باپ نے جب اُن میں مجھے نہ دیکھا سب کو
رخصت کیا - یہہ سب پر پیچھے میرے واسطے کیا تھا * اب یوں
مشہور کیا ھی کہ بادشاہ زادی بہت بیمار ھی - اگر میں
ظاھر نہ ھوئی تو کوئی دِن میں میرے مرنے کی خبر سارے
مُلک میں آویگی - تو بدنامی بادشاہ کی نہوے * لیکن اب اِس
عذاب میں ھوں کہ شاہ بندر مجھہ سے اور اِرادہ دلمیں رکھتا ھی
اور ھمیشہ ساتھہ سونے کو بُلاتا ھی - میں راضی نہیں ھوتی *
از بسکہ چاھتا ھی ابتک میرے رضا مندی منظور ھی -
لہذا چپ ھو رھتا ھی * پر حیران ھوں اِس طرح کہاں تک
نبھیگی - سو میں نے بھی جی میں یہہ ٹھہرایا ھی کہ جب
مجھہ سے کچھہ اور قصد کریگا تو میں اپنی جان دونگی اور مر
رھونگی * لیکن تیرے ملنے سے ایک اور تدبیر دِلمیں سوجھی
ھی - خدا چاھے تو سِوائے اِس فکر کے دوسری کوئی طرح
مخلصی کی نظر نہیں آتی *

میں نے کہا - فرماو تو وہ کون سی تدبیر ھی ؟ کہنے لگی
اگر توسعی اور محنت کرے تو ھوسکے * میں نے کہا میں فرمان
بردار ھوں - اگر حکم کرو تو جلتی آگ میں کود پڑوں اور سیڑھی پاوں

کوچے اور محلّے چھان مارے اور اُس غم سے اپنے تئیں قریب هلاکت کے پُہنچایا اور سودائي سا پھِرنے لگا * آخر اپنے دِل مین خیال کیا کہ غالب هی شاہ بندر کے گھر مین میري پادشاہ زادي هووے نہین تو هووے نہین تو اور کہین نہین * شاہ بندر کي حویلي کے گِرد پیش دیکھتا پھِرتا تھا کہ کہین سے بھي جانے کي راہ پاؤن تو اندر جاون *

ایک بدررَو نظر پڑي کہ مُوافق آدمي کي آمد رفت کے هی مگر جالي آهني اُسکے دهانے پر جڑي هی * یہہ قصد کیا کہ اِس بدررو کي راہ سے چلون - کپڑے بدن سے اُتارے اور اُس نجِس کیچڑ مین اُترا * هزار محنت سے اُس جالي کو توڑا اور سنڈاس کي راہ سے چور محل مین گیا * عورتون کا سا لباس بناکر هر طرف دیکھنے بھالنے لگا * ایک مکان سے آواز میرے کان مین پڑي جیسے کوئي مناجات کر رها هی * آگے جاکر دیکھون تو ملکہ هی کہ عجب حالت سے روتي هی اور نک گِھسني کر رهي اور خُدا سے دُعا مانگتي هی کہ صدقے اپنے رسول کے اور اُسکي آل پاک کے مُجھے اِس کفرستان سے نجات دے اور جس شخص نے مُجھے اِسلام کي راہ بتائي هی اُسے ایکبار خیریت سے مِلا * مین دیکھتے هی دوڑکر پاؤن پر گر پڑا - ملکہ نے مُجھے گلے لگا لیا - هم دونون پر ایک دم بیهوشي کا عالم هو گیا * جب حواس بجا هوئے مین نے کیفیت ملکہ سے پوچھي - بولي جب شاہ بندر سب لونڈیون کو کنارے پر لیگیا مین خُدا سے یہي دُعا مانگتي تھي کہ کہین میرا راز فاش

Digitized by Google

کھولا اور ملکہ کو نکال کر سب کے ساتھہ لیگیا * عجب طرح کي مایوسي هوئي که یهه ایسي حرکت پیش آئي که تیري جان تو مُفت گئي اور ملکه سے دیکھئے کیا سلوک کرے *

اُسکي فکر میں اپني بھي جان کا ڈر بھول گیا - سارے دن رات خدا سے دعا مانگتا رها * جب بڑی فجر هوئي - سب لونڈیونکو کشتي پر سوار کرکے لائے - سوداگر خوش هوئے - اپني اپني کنیز کین لین - سب آئین مگر ایک ملکه اُنمین نه تھي * مین نے پوچھا که میری لونڈی نهین آئي اِسکا کیا سبب هی ؟ انهون نے جواب دیا که هم واقف نهین - شاید پادشاه نے پسند کي هوگي * سب سوداگر مُجھے تسلّي اور دلاسا دینے لگے که خیر جو هوا سو هوا - تو کُڑھه مت - اُسکي قیمت هم سب بھري کرکر تجھے دینگے * میرے حواس باخته هوگئے - مین نے کہا که اب مین عجم نهین جانیکا - کشتي والون سے کہا یارو ! مجھے بھي اپنے ساتھه لے چلو - کنارے پر اُتار دیجیو * وے راضی هوئے - مین جهاز سے اُتر کر غُراب مین آبیٹھا - یهه کُتّا بھي میرے ساتھه چلا آیا *

جب بندر مین پُهنچا ایک صندوقچه جواهر کا جو ملکه اپنے ساتھه لائي تھی اُسے تو رکھه لیا اور سب اسباب شاه بندر کے نوکرون کو دیا اور مین جاسوسي مین هر کہین پھرنے لگا که شاید خبر ملکه کي پاؤن لیکن هرگز سراغ نه ملا اور نه اِس بات کا پتا پایا * ایک راتکو کسو مکر سے پادشاه کے بھي محل مین گیا اور ڈهونڈها - کچھه خبر نه ملي * قریب ایک مهینے کے شهر کے

بند کیا * میں نے بھی ایسا ھی کیا کہ اپنی شاھزادی کو صندوق میں بیٹھا کر قفل کردیا * اِس عرصے میں شاہ بندر ایک غُراب پر بمعۂ نوکر چاکر بیٹھا ہوا نظر آیا - آتے آتے جہاز پر آچڑھا - شاید اُسکے آنیکا یہہ سبب تھا کہ پادشاہ کو دائی کے ھونے کی اور ملکہ کے غایب ھونے کی جب خبر معلوم ھوئی ھمارے غیرت کے اُسکا تو نام نہ لیا مگر شاہ بندر کو حُکم کیا کہ میں نے سُنا ھی عجمی سوداگروں کے پاس لونڈیاں خوب خوب ھیں سو میں شاھزادی کے واسطے لیا چاھتا ھوں - تُم اُنکو روک کر جتنی لونڈیاں جہاز میں ھوں - حُضور میں حاضر کروگے * اُنھیں دیکھکر جو پسند آوینگی اُنکی قیمت دی جاویگی نہیں تو واپس ھونگی -

بموجب حُکم پادشاہ کے یہہ شاہ بندر اِسلئے آپ جہاز پر آیا * اور میرے نزدیک ایک اور شخص تھا - اُسکے پاس بھی ایک باندی قبول صورت صندوق میں بند تھی * شاہ بندر اُسی صندوق پر آکر بیٹھا اور لونڈی کو نکلوانے لگا * میں نے خُدا کا شُکر کیا کہ بھلا پادشاھزادی کا مذکور نہیں * غرض جتنی لونڈیاں پالیں شاہ بندر کے آدمیوں نے ناؤ پر چڑھائیں * اور خود شاہ بندر جس صندوق پر بیٹھا تھا اُسکے مالک سے بھی ھنستے ھنستے پوچھا کہ تیرے پاس بھی تو لونڈی تھی - اُس احمق نے کہا آپ کے قدمونکی سوگند میں نے یہہ کام نہیں کیا - سبھوں نے تُمہارے ڈر سے لونڈیاں صندوقوں میں چھپائی ھیں - شاہ بندر نے یہہ بات سنکر سب صندوقوں کا تلاشی لینا شروع کیا * میرا بھی صندوق

Digitized by Google

مقرّر کرو تو میری خاطر جمع ہو - میں بھی سوار ہوں *

سوداگروں نے ایک کوٹھری میرے تحت میں کردی - میں نے اُسکے نول کا روپیہ بھر دیا - دل جمعی کرکر کسو بہانے سے دائی کے گھر گیا اور کہا امّا ! تجھہ سے رخصت ہونے آیا ہوں - اب وطن کو جاتا ہوں * اگر تیری توجّہ سے ایک نظر ملکہ کو دیکھہ لوں تو بڑی بات ہی * بارے دائی نے قبول کیا - میں نے کہا رات کو آونگا فلانے مکان پر کھڑا رہونگا * بولی اچّھا میں کہکر سرا میں آیا - صندوق اور بچھونے اُٹھا کر جہاز میں لایا اور ناخدا کو سونپ کر کہا - کل فجر کو اپنی کنیز کو لیکر آونگا * ناخُدا بولا جلد آئیو - صُبح ہم لنگر اُٹھاوینگے * میں نے کہا بہت خوب * جب رات ہوئی اُسی مکان پر جہاں دائی سے وعدہ کیا تھا جاکر کھڑا رہا * پہر رات گئی محل کا دروازہ کھُلا اور ملکہ میلے کچیلے کپڑے پہنے ایک پیٹی جواہر کی لئے باہر نکلی - وہ پیٹاری میرے حوالے کی اور ساتھہ چلی * صبح ہوتے کنارے دریا کے ہم پہنچے ایک لنبوت پر سوار ہوکر جہاز میں جا اُترے - یہہ وفادار کُتّا بھی ساتھہ تھا * جب صُبح خوب روشن ہوئی لنگر اُٹھایا اور روانہ ہوئے بخاطر جمع چلے جاتے تھے * ایک بندر سے آواز توپوں کی شلک کی آئی * سب حیران اور فکرمند ہوئے - جہاز کو لنگر کیا اور آپس میں چرچا ہونے لگا کہ کیا شاہ بندر کچھہ دغا کریگا - توپ چھوڑنے کا کیا سبب ہی * اتّفاقا سب سوداگروں کے پاس خوبصورت لونڈیاں تھیں - شاہ بندر کے خوف سے کہ مُبادا چھین لے سبھوں نے کنیزوں کو صندوقوں میں

قباحت هی * اِسکي فکر ابهي سے کیا چاهئے که اِس بلا نجات پاؤن * مین نے کها تُم بات تو معقول کهتي هو - جو مزاج مین آوے سو کرو * بولي که مین اب یهان نرهونگي کهین نِکل جاونگي * مین نے پوچها کس صورت سے بهاگنے پاوگي اور کهان جاوگي ؟ جواب دیا که پهلے تُم میرے پاس سے جاو - مُسلمانون کے ساتهه سرا مین جا رهو تو سب آدمي سُنین اور تُم پر گمان نه لیجاوین * تُم وهان کشتیون کي تلاش مین رهو - جو جهاز عجم کي طرف چلے مُجهے خبر کیجیو - مین اِسواسطے دائي کو تُمهارے پاس اکثر بهیجا کرونگي - جب تُم کهلا بهیجوگے مین نِکل کر آونگي اور کشتي پر سوار هوکر چلي جاونگي - اِن کم بخت بے دینون کے هاتهه سے مخلصي پاونگي * مین نے کها تُمهاري جان و ایمان کي قربان هوا - دائي کو کیا کروگي ؟ بولي اِسکي فکر سهل هی - ایک پیالے مین زهر هلاهل پلا دونگي * یهي صلاح مُقرّر هوئي * جب دن هوا مین کارواں سرا مین گیا - ایک حُجرہ کرائے لیا اور جا رهاَ * اُس جدائي مین فقط وصل کي توقّع پر جیتا تها * جب دو مهینے مین سوداگر روم - شام - اصفهان کے جمع هوئے - اِرادہ کوچ کا تري کي راہ سے کیا - اور اپنا اسباب جهاز پر چڑهانے لگے * ایک جگهه رهنے سے اکثر آشنا صورت هوگئے تهے - مُجهه سے کهنے لگے کیون صاحب ! تُم بهي چلو - یهان کُفرستان مین کب تلک رهوگے ؟ مین نے جواب دیا که میرے پاس کیا جو اپنے وطن کو جاون ؟ یهه ایک لونڈي ایک کُتّا ایک صندوق بساط مین رکهتا هون * اگر تهوڑي سي جگهه بیٹهه رهنے کو دو اور اُسکا نَول

جاهل ! همارے بڑے بُت مین کیا بُرائي دیکھي جو غائب خداکي پرستش کرنے لگا ؟ مین نے کہا اِنصاف شرط هی - تُک غور فرمایئے که بندگي کے لائق وہ خُدا هی که جسنے ایك قطرے پاني سے تُم سا محبوب پیدا کیا اور یہہ حُسن و جمال دیا که ایک آن مین هزارون اِنسان کے دِل کو دیوانه کرڈالو * بُت کیا چیز هی که کوئي اُسکي پوجا کرے ؟ ایك پتّھر کو سنگ تراشون نے گڑھه کر صورت بنائي اور دام احمقون کے واسطے بچھایا * جِنکو شیطان نے ورغلانا هی وے مصنوع کو صانع جانتے هین * جسے اپنے هاتھون سے بناتے هین اُسکے آگے سر جھکا تے هین * اور هم مُسلمان هین - جسنے همین بنایا هی هم اُسے مانتے هین - اُنکے واسطے دوزخ همارے لئے بہشت بنایا هی * اگر پادشاہ زادي اِیمان خدا پر لاوے تب اُسکا مزا پاوے - حق و باطل مین فرق کرے اور اپنے اعتقاد کو غلط سمجھے *

بارے ایسي ایسي نصیحتین سُنکر اُس سنگدِل کا دِل ملائم هوا * خدا کے فضل و کرم سے رونے لگي اور بولی اچھا مجھے بھی اپنا دین سکھاو - مین نے کلمه تلقین کیا - اُسنے بِصدق دِل پڑھا اور توبه استغفار کر کر مُسلمان هوئي * تب مین اُسکے پانون پڑا صُبح تک کلمه پڑھتي اور استغفار کرتی رهي - پھر کہنے لگي بھلا مین نے تو تمہارا دین قبول کیا لیکن ماباپ کا فِر هین - اُنکا کیا علاج ؟ مین نے کہا تمہاري بلاسے جو جیسا کریگا ویسا پاریگا * بولي که مُجھے چچا کے بیٹے سے منسوب کیا هی اور وہ بُت پرست هی - کل کو خُدا نخواسته بیاہ هو اور وہ کافِر مُجھے سے ملے تو بڑي

کھڑ ہوا * غضب کي نگاہ سے مجھے دیکھہ کر دائي سے بولي - اگر میں اِس دیں کے دشمن کو تیرے مارون تو میرے خطا بوابت معاف کریگا یا نہیں ؟ یہہ مُجھہ سے بڑا گناہ ہوا ہی کہ میں نے اسے اپنے گھر میں رکھہ کر خاطر داري کي *

دائي نے کہا - بادشاہ زادي کي کیا تقصیر ہی ؟ کُچھہ دشمن جان کو نہیں رکھا - تُم نے آسپز نرس کھایا - تمکو نیکي کے عوض نیکي ملیگي اور یہہ اپني بدي کا ثمرہ بڑے بُت سے پاویگا * یہہ سنکر کہا - دائي ! اِسے بیٹھنے کو کہہ - دائي نے مُجھے اشارت کي کہ بیٹھہ جا - میں بیٹھہ گیا * ملکہ نے اور جام شراب کا پیا اور دائي سے کہا - کہ اِس کم بخت کو بھي ایک پیالہ دے تو آسائي سے مارا جاوے * دائي نے جام دیا - میں نے بے عُذر پیا اور سلام کیا - ہرگز میري طرف نگاہ نکي - مگر کن آنکھیون سے چوري چوري دیکھتي تھي * جب مجھے سرور ہوا کُچھہ شعر پڑھنے لگا - ازاں جملہ ایک بیت یہہ بھي پڑھے *

قابو میں ہون میں تیرے گو اب جیا تو پھر کیا ؟
خنجر تلے کسو نے تُجھ دم لیا تو پھر کیا ؟

سنکر مسکرائي اور دائي کي طرف دیکھہ کر بولي - کیا تُجھے نیند آتي ہی ؟ دائي نے مرضي پاکر کہا کہ ہان مُجھہ پر خواب نے غلبہ کیا ہی * وہ تو رُخصت ہوکر جہنم واصل ہوئي * بعد ایک دم کے ملکہ نے پیالہ مُجھہ سے مانگا - میں جلد بھر کر روبرو لیگیا * ایک ادا سے میرے ہاتھہ سے لیکر پي لیا - تب میں قدمون پر گرا - ملکہ نے ہاتھہ مُجھہ پر جھاڑا اور کہنے لگي - اي

Digitized by Google

میں ہنسنے کی آواز سُنکر دل میں ڈرا * ملکہ آکے آکر پوچھنے لگی کہ ای عجمی ! یہہ تو کیا کرتا تھا ؟ میں کچھہ جواب نہ دیسکا * اسمیں دائی بولی بلا لوں ۔ تیرے صدقے گئی مجھے یوں معلوم ہوتا ہی کہ یہہ شخص مُسلمان ہی اور لات منات کا دشمن ہی اُن دیکھے خُدا کو پوجتا ہی * ملکہ نے یہہ بات سُنتے ہی ہاتھہ ہاتھہ پر مار بہت غُصّہ ہوئی کہ میں کیا جانتی تھی کہ یہہ تُرک ہی اور ہمارے خداؤں سے مُنکر ہی-تبھی ہمارے بُت کے غضب میں پڑا تھا * میں نے ناحق اِسکی پرورش کی اور اپنے گھر میں رکھا * یہہ کہتی ہوئی چلی گئی * میں سُنتے ہی بدحواس ہوا کہ دیکھئے اب کیا سلوک کرے * مارے خوف کے نیند اُچاٹ ہوگئی ۔ صُبح تک بے اِختیار رویا کیا اور آنسوؤں سے مُنہہ دھویا کیا *

تین دن رات اِسی خوف و رجا میں روتے گُذرے ۔ ہرگز آنکھہ نہ جھپکی * تیسری شب ملکہ شراب کے نشے میں مخمور اور دائی سانھہ لئے میری مکان پر آئی * غُصّہ میں بھری ہوئی اور تیر کمان ہاتھہ میں لئے باہر چمن کے کنارے بیٹھی * دائی سے پیالہ شراب کا مانگا- پیکر کہا- دیّا ! وہ عجمی جو ہمارے بڑے بُت کے قہر میں گرفتار ہی ہوا یا ابتک جیتا ہی ؟ دائی نے کہا بلیّا لوں کچھہ دم باقی ہی * بولی کہ ابھی وہ ہماری نظروں سے گرا لیکن کہہ کہ باہر آوے * دائی نے مُجھے پُکارا ۔ میں دوڑا دیکھوں تو ملکہ کا چہرہ مارے غُصّہ کے تمتما رہا ہی ۔ اور سُرخ ہوگیا ہی * روح قالب میں نرھی سلام کیا اور ہاتھہ باندھہ کر

Digitized by Google

ایك دن پوچھنے لگي كه اپنا احوال تو بیان كرو كه تُم كون هو اور یهه واردات تُم پر كیونكر هوئي ؟ میں نے سارا ماجرا اپنا اوّل سے آخر تك كهه سُنایا * سُنكر رونے لگي اور بولي كه اب میں تُجهه سے ایسا سلوك كرونگي كه اپني ساري مصیبت بهول جاویگا * میں نے كها خُدا تُمهیں سلامت ركهے تُم نے نئے سر سے میري جان بخشي كي هی - اب میں تُمهارا هو رها هوں واسطے خُدا كے اِسي طرح همیشه مُجهپر اپني مهرباني كي نظر ركهیو * غرض تمام رات اكیلي میرے پاس بیٹهي رهتي اور صُحبت ركهتي - بعضے دن دائي آسكي بهي ساتهه رهتي - هرایك طور كا ذِكر مذكور سُنتي اور كهتي * جب ملكه اُٹهه جاتي اور میں تنها هوتا طهارت كركونے میں چهپ كر نماز پڑهه لیتا *

ایك بار ایسا اِتّفاق هوا كه ملكه اپنے باپ كے پاس گئي تهي - میں خاطرِ جمع سے وضو كركے نماز پڑهه رها تها كه اچانك شاهزادي دائي سے بولتي هوئي آئي كه دیكهیں عجمي اِسوقت كیا كرتا هی - سوتا هی یا جاگتا هی * مُجهے مكان پر جو نه دیكها تعجّب میں هوئی كه آیں یهه كهاں گیا ؟ كِسو سے كُچهه لگا تو نهیں لگایا * كونا كتهرا دیكهنے لگي اور تلاش كرنے لگي * آخر جهاں میں نماز كررها تها وهاں آنكلي - اُس لڑكي نے كبهو نماز كاهیكو دیكهي تهي - چُپكے كهڑي دیكها كي * جب میں نے نماز تمام كركے دُعا كے لیئے هاتهه اُٹهایا اور سجدے میں گیا - بے اختیار كِهلكِهلا كر هنسي اور بولی كیا یهه آدمي سودائي هوگیا - یهه كیسي كیسي حركتیں كررها هی ؟

Digitized by Google

آپ میرے سرہانے بیٹھي رہتي اور میري خدمت کرواتي اور تمام دن رات میں دو چار بار کچھہ شوربا یا شربت اپنے ہاتھہ سے پلاتي * بارے مجھے ہوش آیا تو دیکھا کہ ملکہ نہایت افسوس سے کہتي ہی کس ظالم خون خوار نے تجھہ پر یہہ ستم کیا - بڑے بت سے بھي نہ ڈرا ! بعد دس روز کے عرق اور شربت اور معجونوں کي قوت سے میں بے آنکھہ کھولي دیکھا تو اندر کا اکھاڑا میرے آس پاس جمع ہي اور ملکہ سرہانے کھڑي ہي * ایک آہ بھري اور چاہا کہ کچھہ حرکت کروں طاقت نپائي - بادشاہ زادي مہرباني سے بولي کہ اي عجمي ! خاطر جمع رکھہ کچھہ مت - اگرچہ کسو ظالم نے تیرا یہہ احوال کیا لیکن بڑے بت نے تجھہ کو تجھہ پر مہربان کیا ہي اب چنگا ہوجاویگا *

قسم اس خدا کي جو واحد اور لاشریک ہي میں اسے دیکھکر پھر بے ہوش ہوگیا * ملکہ نے بھي دریافت کیا اور گلاب پاش سے گلاب اپنے ہاتھہ سے چھڑکا * بیس دن کے عرصے میں زخم بھر آئے اور انگور کرائے * ملکہ ہمیشہ رات کو جب سب سوجاتے میرے پاس آتي اور کھلاپلا جاتي * غرض ایک چلّے میں غسل کیا - پادشاہزادي نہایت خوش ہوئي - حجام کو انعام بہت سا دیا اور مجھکو پوشاک پہنوائي * خدا کے فضل سے اور خبر گیري اور سعي سے ملکہ کي خوب چاق چوبند ہوا اور بدن نہایت تیار ہوا اور کچھ بھي فربہ ہو گیا * روز مجھے شراب پلاتي اور باتیں سنتي اور خوش ہوتي * میں بھي ایک آدھہ نقل یا کہاني انوکھي کہکر اسکے دل کو بہلاتا *

گیا کہ مُطلق طاقت اور ہوش کچھہ باقي نہ تھا - کیا جانوں دم کہاں اٹک رہا تھا کہ جیتا تھا * جس جگھہ میں پڑا تھا ولایت سراندیپ کي سرحد تھي اور ایک شہر بہت آباد اُسکے قریب تھا - اُس شہر میں بڑا بُتخانہ تھا اور وہاں کے بادشاہ کي ایک بیٹي تھي نہایت قبول صورت اور صاحب جمال *

اکثر بادشاہ اور شہزادے اُسکے عشق میں خراب تھے * وہاں رسم حجاب کي نہ تھي - اِس سے وہ لڑکي تمام دِن ہمجولیوں کے ساتھہ سیر اور شکار کرتي پھرتي * ہم سے نزدیک ایک بادشاہي باغ تھا - اُس روز بادشاہ سے اِجازت لے کر اُسي باغ میں آئي تھي * میرکي خاطِر اُس میدان میں پھرتی پھرتی آنکلي - کئي خواصیں بھي ساتھہ سوار تھیں * جہاں میں پڑا تھا آئیں - میرا کراھنا سُنکر پاس کھڑي ہوئیں * مُجھے اِس حالت میں دیکھہ کر وے بھاگیں اور شہزادي سے کہا کہ ایک مردوا اور ایک کُتّا لہو میں شور بور پڑا ھی * اُنسے یہہ سُنکر آپ ملکہ میرے سر پر آئي افسوس کھاکر کہا دیکھو تو کچھہ جان باقي ھی ؟ دو چار دائیوں نے آتر کر دیکھا اور عرض کي اب تلک تو جیتا ھی * تُرت فرمایا کہ امانت قالیچے پر لٹاکر باغ میں لے چلو *

وھاں لیجاکر جرّاح سرکار کو بُلاکر میرے اور میرے کُتّے کے عِلاج کي خاطِر بہت تاکید کي اور اُمیدوار اِنعام و بخشش کا کیا * اس حجّام نے سارا بدن میرا پونچھہ پانچھہ کر خاک و خون سے پاک کیا اور شراب سے دھو دھا کر زخمونکو ٹانکے مرھم لگایا اور بید مُشک کا عرق پاني کے بدلے میرے حلق میں چُوایا * ملکہ

Digitized by Google

لہو لہان کردیا * یہہ کُتّا میرا احوال دیکھکر آنپر بھپکا۔ اِسکو بھی گھایل کیا * بعد اُسکے اپنے ہاتھون سے اپنے بدنون مین زخمون کے نشان کئے اور سروپا برہنہ قافلے مین گئے اور ظاہر کیا کہ حرامیون نے اُس میدان مین ہمارے بھائي کو شہید کیا اور ہم بھی لڑ بھڑ کر زخمي ہوئے * جلدي کوچ کرو نہین تو اب کاروان پر گر کر سب کو لٹگیا لینگے * قافلے کے لوگون نے بدرون کا نام جو سنا وونہین بد حواس ہوئے اور گھبرا کر کوچ کیا اور چل نکلے *

میرے قبیلے نے سلوک اور خوبیان اُنکي سن رکھین تھین جو جو مُجھسے دغا ئین کین تین - یہہ واردات اُن کا ذبون سے سُنکر جلد خنجر سے اپنے تئین ہلاک کیا اور جان بحق تسلیم ہوئي * ای درویشو ! اُس خواجۂ سگ پرست نے جب اپني کیفیت اور مُصیبت اِسطرح سے یہان تلک کہی - سُنتے ہی مُجھے بے اختیار رونا آیا * سوداگر کہنے لگا کہ قبلۂ عالم ! اگر بے ادبي نہوتي تو برہنہ ہوکر مین اپنا سارا بدن کھول کر دِکھاتا * تسپر بھی اپنی راستی پر گریبان موندھے تلک چیرکر دکھایا * واقعي چار اُنگل تن اُسکا بغیر زخم کے ثابت نہ تھا * میرے حضور سرسے عمامہ اُتارا - کھوپڑي مین ایسا بڑا گھاؤ پڑا تھا کہ ایک انار سموچا اُس مین سماوے * ارکان دولت جتنے حاضر تھے سب نے اپنی آنکھین بند کر لین - طاقت دیکھنے کی نرھي *

پھر خواجہ بولا کہ پادشاہ سلامت ! جب بے بھائي اپنی دانست مین میرا کام تمام کرکے چلے گئے ایک طرف مین اور ایک طرف یہہ سگ میرے نزدیک زخمی پڑا تھا * لہو اتنا بدن سے

هوتا تو کل وهان جاکر تفریح طبیعت کي کرتے اور ماندگي بهي رفع هوتي * مین بولا که صاحب مُختار هین - فرماؤ تو کل کےدن مقام کرین اور وهان چل کر سیر کرتے پهرین * بے بولے-ازین چه بهتر ؟ مین نے حُکم کیا که سارے قافلے مین پُکار دو که کل مقام هی اور بکاول کوکها که حاضري قسم به قسم کي تیّار کر - کل سیر کو چلینگے * جب صُبح هوئي ان دونون برادرون نے کپڑے پهن کمر باندهه کر مجھے یاد دلایا که جلد ٹهنڈے ٹهنڈے چلئے اور سیر کیجئے *مین نے سواري مانگي- بو لےکه پا پیادہ جولطف سیرکا هوتا هی سو سواري مین معلوم ؟ نفرون کوکهه دوگهوڑے ڈُرباکرلے آوین *

دونون غُلامون نے قلیان اور قهوہ دان لے لیا اور ساتهه هوئے * راہ مین تیراندازي کرتے هوئے چلے جاتے تهے - جب قافلے سے دور نِکل گئے ایک غُلام کو اِنهون نے کسی کام کو بهیجا * تهوڑی دور آگے بڑهکر دوسرے کو بهي اُسکے بلانے کو رخصت کیا * کم بختي جو آئي میرے مُنهه مین جیسے کِسونے مُهر دے دی - جوچاهتے تهے سوکرتے تهے اور مجھے باتون مین پرچائے لئے جاتے تهے - مگر یهه کُتّا ساتهه رہ گیا * بهت دور نِکل گئے نه چشمه نظر آیا نه گُلزار مگر ایک میدان پر خار تها - وهان مجھے ماندگي لگي مین دم لینے کو بیٹها * اپنے پیچهے چمک تلوار کي سی دیکهي - مُڑکر دیکهون تو منجهلے بهائي صاحب نے مُجهه پر تلوار ماري که سردوپارہ هوگیا * جب تلک بولون که ای ظالم ! مجھے کیون مارتا هي ؟ بڑے بهائی نے شانے پر لگائي * دونون زخم کاري لگے - تیوراکر گرا - تب ان دونون بے رحمون نے بخاطرجمع دوسرے تین چور و زخمي کیا اور

Digitized by Google

باهم صلاح کی * میں اِس حرکت سے مُطلق خبر نرکھتا تھا - بلکہ دل میں کہتا تھا کہ الحمد لِلّہ اس مرتبے اب تک انہوں نے کُچھہ ایسی بات نہیں کي - اب انکی وضع درست ہوئی شاید غیرت کو کام فرمایا * ایک روز بعد کھانے کے بڑے بھائي صاحب آبدیدہ ہوئے اور اپنے وطن کي تعریف اور ایران کي خوبیاں بیان کرنے لگے * یہہ سُنکر دوسرے بھي بس رونے لگے * میں نے کہا اگر ارادہ وطن کا ھی تو بہتر میں تابع مرضی کے ہوں - میري بھی یہي آرزو ھی * اب اِنشاء اللہ تعالی میں بھي آپ کی رکاب میں چلتا ہوں * اُس بی بی سے دونوں بھائیوں کی اداسي کا مذکور کیا اور اپنا اِرادہ بھي کہا * وہ عاقلہ بولی کہ تُم جانو لیکن پھر کُچھہ دغا کیا چاھتے ھیں - یہہ تمہاري جان کے دشمن ھیں تم نے سانپ آستین میں پالے ھیں اور اِنکی دوستی کا بھروسا رکھتے ھو ! جو جی چاھے سو کرو لیکن موذیوں سے خبردار رھو * بہر تقدیر تھوڑے عرصے میں تیّاري سفر کی کرکے خیمہ میدان میں استاد کیا * بڑا قافلہ جمع ہوا اور میری سرداري اور قافلہ باشي پر راضی ہوئے * اچّھی ساعت دیکھکر روانہ ہوا لیکن انکی طرف سے اپني جانب میں ہوشیار رھتا اور سب صورت سے فرمان برداري اور دِل جوئي انکی کرتا *

ایک روز ایک منزل میں منجھلے بھائي نے مذکور کیا کہ ایک فرسخ پر اس مکان سے ایک چشمہ جاري ھی مانند سلسبیل کے اور میدان میں خود رو کوسوں تلک لالہ و نافرمان اور نرگس و گُلاب پھولا ھی * واقعی عجب مکان سیر کا ھي اگر اپنا اِختیار

کسے سرو پا برهنه اُنکو لئے جاتے هیں * اُنکي صورت دیکھتے هی خون نے جوش کیا اور کلیجه جلا - مُحصّلون کو ایک مُنّهی اشرفیاں دیں اور کہا که ایک ساعت توقف کرو اور وهاں سے گھوڑے کو سرپٹ پھینک کر حاکم کے گھر گیا * یک دانه یاقوت بے بہا کا نظر گذرانا اور اُنکي شفاعت کي * حاکم نے کہا - ایک شخص اِنکا مُدعي هی اور اِنکے گناہ ثابت هوئے هیں اور بادشاہ کا حُکم هو چُکا هی میں لاچار هون *

بارے بہت مِنّت و زاري سے حاکم نے مُدعي کو بُلوا کر پانچ هزار روپی پر راضي کیا که وہ دعوی خون کا معاف کرے * میں نے روپي گِن دیئے اور لا دعوی لِکھوا لیا اور ایسي بلا سے مخلصی دِلوائی * جہاں پناہ ! انسے پوچھئے که سچ کہتا هون یا جھوٹھ بکتا هون * وے دونون بھي سر نیچے کئے شرمندہ سے کھڑے تھے * خیر انکو چھڑا کر گھر میں لایا - حمّام کروا کر لِباس پہنوایا - دیوان خانے میں مکان رهنے کو دیا * اِس مرتبہ اپنے قبیلے کو انکے روبرو نکیا - اِنکي خِدمت میں حاضِر رهتا اور اِنکے ساتھه کھانا کھاتا - سونے کے وقت گھر میں جاتا * تین برس تک اِنکي خاطِر داري میں گذري اور انسے بھي کوئی حرکت بد واقع نہوئي که باعث رنجیدگي کا هووے - جو میں سوار هوکر کہیں جاتا تو یے گھر میں رهتے *

اِتّفاقا وہ بیبی نیک بخت ایک دن حمّام کو گئي تھي - جب دیوان خانے میں آئی کوئی مرد نظر نہ پڑا * اُسنے بُرقع اُتارا - شاید یہه منجھلا بھائي لیٹا هوا جاگتا تھا - دیکھتے هی عاشق هوا - بڑے بھائي سے کہا - دونون نے میرے مارڈالنے کی

Digitized by Google

پھر وہاں سے گھوڑوں پر سوار ہوکر ہم دونوں چلے * رات کو اُترتے تو وہ ذکر دین ایمان کا کرتی اور سنتی اور خوش ہوتی * اسی طرح دو مہینے تلک پیہم شبانہ روز چلے گئے *

آخر ایک ولایت میں پہنچے کہ درمیان سرحد مُلک زیرباد اور سراندیپ کے تھی- ایک شہر نظر آیا کہ آبادی میں اِستنبول سے بڑا اور آب و ہوا بہت خوش اور موافق * بادشاہ اُس شہر کا کسریٰ سے زیادہ عادِل اور رعیّت پرور دیکھکر دِل نہت شاد ہوا * ایک حویلی خرید کرکے بود و باش مُقرر کی * جب کئی دن میں رنج سفر سے آسودہ ہوئے کچھہ اسباب ضروری درست کرکے اُس بی بی سے مُوافق شرع محمّدی کے نکاح کیا اور رہنے لگا * تین سال میں وہانکے اکابِر و اِصاغِر سے مِل جُل کر اِعتبار بہم پہنچایا اور تِجارت کا ٹھاٹھہ پھیلایا * آخر وہاں کے سب سوداگروں سے سبقت لیگیا * ایک روز وزیر اعظم کی خِدمت میں سلام کے لئے چلا - ایک میدان میں کثرت خلق اللہ کی دیکھی کسو سے پوچھا کہ کیوں اتنا اِژدھام ہی ؟ معلوم ہوا کہ دو شخص کو زنا اور چوری کرتے پکڑا ہی اور شاید خون بھی کیا ہی - اُنکو سنگسار کرنے کو لائے ہیں *

مُجھے سُنتے ہی اپنا احوال یاد آیا کہ ایک دن مُجھے بھی اسی طرح سولی چڑھانے لئے گئے تھے - خُدا نے بچا لیا * ایا بے کوی ہینگے کہ ایسی بلا میں گرِفتار ہوئے ہیں ؟ معلوم نہیں کہ راست ہی یا میری طرح تہمت میں گرِفتار ہوئے ہیں * بھیڑ کو چیرکر اندر گھسا دیکھا تو یہی میرے دونوں بھائی ہیں کہ تذبذبان

کپڑا جورا لیکر وہان گئي کہ کمند سے اُسے کھینچون * کرم مین تیرے تھا کہ ویسي قید سے اِسطرح چھٹکارا پاوے اور میرے اِس کرتب سے محرم کوئي نہین - شاید وہ کوئي دیوتا تھا کہ تیري مخلصي کي خاطر مجھے بھجوایا * خیر جو میرے بھاگ مین تھا سو ہوا * یہہ کتھا کہہکر پوري کچوري ماس کا سالن انگوچھے سے کھولا * پہلے قند نکال ایک کٹورے مین گھولا اور عرق بید مشک کا اُس مین ڈال کر مجھے دیا * مین نے اُسکے ہاتھہ سے لیکر پیا - پھر تھورا سا ناشتا کیا * بعد ایک ساعت کے میرے تئین لُنگي بندھواکر دریا مین لیگئي - قینچي سے میرے سرکے بال کترے ناخُن لیئے نہلا دُھلا کر کپڑے پہنائے - نئے سرسے آدمي بنایا * مین دوگانہ شکرانے کا روبقبلہ ہوکر پڑھنے لگا - وہ نازنین اِس میري حرکت کو دیکھتي رہي *

جب نماز سے فارغ ہوا پوچھنے لگی کہ یہہ تونے کیا کام کیا ؟ مین نے کہا جس خالق نے ساري خلقت کو پیدا کیا اور تُجھہ سي محبوبہ سے میري خدمت کروائی اور تیرے دلکو مُجھہ پر مہربان کیا اور ویسے زندان سے خلاص کروایا اُس کي ذات لاشریک ہی - اُس کي مین نے عبادت کي - اور بندگي بجالایا اور ادائے شُکر کیا * یہہ بات سُنکر کہنے لگي - تُم مسلمان ہو ؟ مین نے کہا شُکر الحمد للہ * بولي میرا دل تُمہاری باتون سے خوش ہوا - میرے تئین بھی سکھاؤ اور کلمہ پڑھاؤ * مین نے دلمین کہا الحمد للہ کہ یہہ ہمارے دین کی شریک ہوئی * غرض مین نے لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ محمد رسول اللہ پڑھا اور اُس سے پڑھوایا *

Digitized by Google

یہہ دیوان کا پوت سب مین سُندر تھا - اور گھوڑے کو کاوے دیکر کسب کر رہا تھا - مُجھہ کو بھایا اور دِل سے اُسپر ریجھي - مُدّت تلک یہہ بات گپت رکھي *

آخر جب بہت بیاکُل ہوئي تب دائي سے کہا اور دھیر سا انعام دیا * وہ اُس جوان کو کِسو نہ کِسو دھب سے پوشیدہ میري دھراھر مین لے آئي - تب بھي مُجھے چاھنے لگا * بہت دِن اِس عِشق مُشک مین کٹے * ایک روز چوکیدارون نے آدھی رات کو ھتیار باندھے اور محل مین آتے دیکھکر اُسے پکڑا اور راجہ سے کہا * اُسے حکم قتل کیا * سب ارکان دولت نے کہہ سُنکر جان بخشي کروائي - تب فرمایا کہ اسکو زِندان سُلیمان مین ڈال دو - اور دوسرا جوان جو اُسکے ھمراہ اسیر ھی اُسکا بھگنا ھی - رات کو وہ بھی اُسکے ساتھہ تھا - دونون کو اُس کوئے مین چھوڑ دیا * آج تین برس ھوئے کہ وے پھنسے ھین * مگر کِسو نے نہین دریافت کیا کہ یہہ جوان راجہ کے گھر مین کیون آیا تھا * بھگوان نے میري پت رکھي * اُسکے شُکرانے کے بدلے مین نے اپنے اُوپر لازم کیا ھی کہ ان اور جل اُسکو پُہنچایا کرون - جب سے اتھوارے مین ایک دن آتي ھون اور آٹھہ دن کا آزوقہ اِکٹھا دے جاتي ھون *

کل کي رات سپنے مین دیکھا کہ کوئي مانُس کہتا ھی کہ شتابي آٹھہ اور گھوڑا جوڑا اور کمند اور کُچھہ نقد خرچ کے واسطے لیکر اُس غار پر جا اور اُس بچارے کو وھان سے نِکال * یہہ سنکر مین چونک پڑی اور مگن ھوکر مردانہ بھیس کیا اور ایک صندوقچہ جواھر و اشرفي سے بھر لیا اور یہہ گھوڑا اور

Digitized by Google

تو کون ہی ؟ میں نے جواب دیا کہ مُسافر ہوں - ناحق کي بلا میں گرفتار ہو گیا تھا - تُمھارے تصدّق سے بارے جیتا نکلا ہوں * اور بہت باتیں خوشامد کي کیں *

خُدا نے اُسکے دل میں رحم دیا - شمشیر کو غِلاف کیا اور بولا - خیر خُدا جو چاہے سو کرے - جا تیري جان بخشي کي- جلد سوار ہو یہاں توقف کا مکان نہیں * گھوڑونکو جلد کیا اور چلے - راہ میں افسوس کھاتا اور پچتاتا جاتا تھا * ظُہر کے وقت تک ایک جزیرے میں جا پُہنچے * وھاں گھوڑے سے اُترا - مُجھے بھي اُتارا - زین خوگیر مرکبوں کي پیٹھہ سے کھولا اور چرنے کو چھوڑ دیا- اپني بھي کمر سے ھتیار کھول ڈالے اور بیٹھا - مُجھہ سے بولا - ای بد نصیب اپنا احوال کہہ تو معلوم ہو کہ تو کون ہی * میں نے اپنا نام نشان بتایا - اور جو جو کُچھہ بیتا بیتي تھي اُس سے آخرتک کہي *

اُس جوان نے جب میري سرگُذشت سب سُني رونے لگا اور مُخاطب ہوا کہ ای جوان ! اب میرا ماجرا سُن - میں کنیا زیرباد کے دیس کے راجا کي ہوں اور وہ گبرو جو زِندان سُلیمان میں قید ہی اُسکا نام بہورہ مندہ ہی - میرے پتا کے منتري کا بیٹا ہی * ایک روز مہاراج نے اگیا دي کہ جتنے راجا اور کنور ہیں میدان میں زیرجھروکے نِکلکر تیراندازي اور چوگان بازی کریں تو کُھڑچڑھي اور کسب ہر ایک کا ظاہر ہو * میں راني کے نیڑي جو میري ماتا تھیں اٹاري پر اوجھل میں بیٹھي تھي اور دائیاں اور سہیلیاں حاضِر تھیں - تماشا دیکھتي تھي *

Digitized by Google

آیا - بے اِختیار رونے اور خُدا کي درگاہ مین نك گھسني کرنے لگا * پیچھے پھر کیا دیکھتا ھون کہ خُدا کي قدرت سے ایک رسّي غار مین لٹکي اور آواز سہج مین سُني کہ ای کم بخت بدنصیب ! ڈور کا سرا اپنے ھاتھہ مین مضبوط باندھہ اور یہان سے نکل * مین نے سُنکر دِل مین خیال کیا کہ آخر بھائي مُجھہ پر مہربان ھوکر لہو کے جوش سے آپ ھي نِکالنے آئے * نہایت خوشي سے اُس طناب کو کمر مین خوب کسا - کِسو نے مجھے اُوپر کھینچا * رات ایسي اندھیري تھي کہ جِن نے مُجھے نِکالا اُسکو مین نے نہ پہنچانا کہ کون ھی * جب مین باھرآیا تب اُسنے کہا جلد آ - یہان کھڑے ھونیکي جگھہ نہین * مُجھہ مین طاقت تو نہ تھي پر مارے ڈر کے لُڑھتا پڑتا پہاڑ سے نیچے آیا * دیکھون تو دو گھوڑے زین بندھے ھوئے کھڑے ھین * اُس شخص نے ایک پر مُجھے سوار کیا اور ایك پر آپ چڑھہ لیا اور آگے ھوا * جاتے جاتے دریا کے کِنارے پر پہنچا *

صبح ھوگئي اُس شہر سے دس بارہ کوس نِکل آئے - اُس جوان کو دیکھا کہ اوپچي بنا ھوا زِرہ بکتر پہنے چار آئینے باندھے گھوڑے پر پاکھر ڈالے میري طرف غضب کی نظرون سے گھور کر اور ھاتھہ اپنا دانتون سے کاٹکر تلوار میان سے کھینچي اور گھوڑے کو جست کر کر مجھپر چلائي * مین نے اپنے تئین گھوڑے پر سے نیچے گرا دیا اور گھگیانے لگا کہ مین بے تقصیر ھون مُجھے کیون قتل کرتا ھی ؟ ای صاحبِ مُروّت ! ویسے زِندان سے میرے تئین تونے نِکالا - اب یہہ بے مروتي کیا ھی ؟ اُسنے کہا سچ کہہ

اُس عورتکے دل میں رحم دیا کہ ڈول رسّي کو لیکر اُسکے همراہ چلي * یہہ اُسکا آنچل پکڑے گھر سے باهر هوکر آگے آگے هولیا *

آخر اُسکو پہاڑ هي پر لے آیا * عورت کے جي میں کُتّے کي اُس حرکت سے اِلہام هوا کہ اِسکا میان مُقرّر اِس غار میں گرفتار هی - شاید اُسکي خاطر پاني چاهتا هی * غرض پیر زن کو لئے هوئے غار کے مُنہہ پر آیا * عورت نے لوٹا پاني کا بهرکر رسّي سے لٹکایا - میں نے وہ باسن لیا اور نان کا ٹکرا کهایا * دو تین گهونٹ پاني پیا - اس پیٹ کے کُتّے کو راضي کیا * خُداکا شُکر کر کر ایک کنارے بیٹہا اور خُداکي رحمت کا مُنتظِر تها کہ دیکهئے اب کیا هوتا هی ؟ یہہ حیوان بے زبان اِسي طور سے نان لے آتا اور بُڑهیا کے هاتهہ پاني پلواتا * جب بهٹیاروں نے دیکها کہ کُتّا همیشہ روٹّي لے جاتا هی ترس کهاکر مُقرّر کیا کہ جب اِسے دیکهتے ایک ٹکڑا اُسکے آگے پهینک دیتے اور اگر وہ عورت پاني نہ لاتي تو یہہ اُسکے باسن پهوڑ ڈالتا - لاچار وہ بهي هر روز ایک صراحي پاني کي دیجاتي * اس رفیق نے آب و نان سے میري خاطر جمع کي اور آپ زِندان کے مُنہہ پر پڑا رهتا * اِس طرح چهہ مہینے گذرے لیکن جو آدمي ایسے زِندان میں رهے کہ دنیا کي هوا اُسکو نہ لگے اُسکا کیا حال هو ! نِرا پوست و اُستخوان مجهہ میں باقي رها * زِندگي وبال هوئي - جي میں آتا کہ یا الٰهي ! یہہ دم نِکل جاوے تو بہتر هی *

ایک روز رات کو وے دو نوں قیدي سوتے تهے - میرا دِل اُمنڈ

اور پُکارتا * وے دو نون آدمي جو میرے پاس محبوس تھے لے لیتے اور کھا تے پیتے * اُوپر سے کُتّے نے ہمیشہ یہہ احوال دیکھتے دیکھتے عقل دوڑائي کہ جِس طرح یہہ شخص آب و نان کوئے مین لٹکا دیتا ھی تو بھي ایسي فِکر کرکہ کُچھہ اُس بے کس کو جو میرا خاوند ھی آزوقہ پہنچے تو اُسکا دم بچے * یہہ خیال کرکے شہر مین گیا - نان بائي کي دوکان مین مِنبر پر گِردے چُنے ہوئے دھرے تھے - جست مارکر ایک کُلچہ مُنہہ مین لیا اور بھاگا * لوگ پیچھے دوڑے ڈھیلے مارتے تھے لیکن اُسنے نان کو نہ چھوڑا * آدمي تھک کر پھرے - شہر کے کُتّے پیچھے لگے - اُنسے لڑتا بھڑتا روتي کو بچائے اُس چاہ پر آیا - اور نان کو اندر ڈال دیا * روز روشن تھا - مین نے روتي کو اپنے پاس پڑا دیکھا اور کُتّے کي آواز سُني * کُلچے کو اُٹھا لیا اور یہہ کُتّا روتي پھینک کر پاني کي تلاش مین گیا *

کسي گاؤں کے کِنارے ایک بُڑھیا کي جھونپڑي تھي - ٹھلیا اور بدھنا پاني سے بھرا ھوا دھرا تھا اور وہ پیرزن چرخا کاتتي تھي * کُتّا کوزے کے نزدیک گیا چاھا کہ لوٹے کو اُٹھاوے - عورت نے ڈانٹا - لوٹا اُسکے مُنہہ سے چھوٹا - گھڑے پر گِرا - مٹکا پھوٹا - باقي پاسن لڑھہ گئے - پاني بہہ چلا * بڑھیا لکڑي لیکر مارنے کو اُٹھي - یہہ سگ اُسکے دامن مین لپٹ گیا - اُسکے پاؤن پر مُنہہ ملنے اور دُم ھلانے لگا اور بھاڑ کي طرف دوڑ گیا - پھر اُسکے پاس آکر کبھو رسّي اُٹھاتا - کبھو قول مُنہہ مین پکڑ کر دکھاتا اور مُنہہ اُسکے قدمون پر رگڑتا اور آنچل چادر کا پکڑ کر کھینچتا * خدا نے

بیہوش پڑا تھا - ذرہ سُرت آئي تو مین اپنے تئین مُردہ خیال کیا اور اُس مکان کو گور سمجھا * اس مین دو شخصون کي آواز کان مین پڑي کہ کُچھہ آپس مین باتین کرتے ہین * یہي معلوم کیا کہ مُنکر نکیر ہین - مُجھہ سے سوال کرنے آئے ہین * سُرسراہٹ رّسي کي سُني جیسے کِسونے وہان لٹکائي * مین حیرت مین تھا - زمین کو تٹولتا تو ہڈیان ہاتھہ مین آتین *

بعد ایک ساعت کے آواز چپڑ چپڑ مُنہہ چلانے کي میرے کان مین آئي جیسے کوئي کُچھہ کھاتا ہی * مین نے پوچھا کہ ای خُدا کے بندو ! تُم کون ہو؟ خُدا کے واسطے بتاؤ * وے ہنسے اور بولے - یہہ زِندان مِہتر سلیمان کا ہی اور ہم قیدي ہین * مین نے اُنسے پوچھا - کیا مین جیتا ہون - پِھر کِھلکِھلاکر ہنسے اور کہا - اب تلک تُو تو زِندہ ہی پر اب مریگا * مین نے کہا کہ تُم کیا کہا تے ہو مجھے بھي تھوڑا سا دو - تب جھنجھلا کر خالي جواب دیا اور کُچھہ ندیا * وے کھا پي کر سورہے مین مارے ضُعف و ناتواني کے غش مین پڑا روتا تھا اور خُدا کو یاد کرتا تھا * قبلۂ عالم ! سات دن دریا مین اور اِتنے دن بھائیون کے بُہتان کے سبب دانہ مُیسّر نہ آیا - علاوہ کھانے کے بدلے مار پیٹ کھائي اور ایسے زِندان مین پھنسا کہ صورت رِہائي کي مُطلق خیال مین بھي نہ آتي تھي *

آخر جان کندني کي نوبت پُہنچي - کبھو دم آتا کبھو نِکل جاتا تھا لیکن کبھو کبھو آدھي رات کو ایک شخص آتا اور رومال مین روٹیان اور پاني کي صراحي ڈوري مین باندھہ کر لٹکا دیتا

نہوتا تھا * ایک بزرگ نے کہا کہ سب سے بہتر یہہ دوا ہی کہ محتاجون کو کچھہ خیرات کرو اور بندیوانون کو آزاد کرو - دوا سے دعا مین بڑا اثر ہی * ورنہین پادشاہي چیلے بندی خانون کي طرف دوڑے * اِتّفاقًا ایك اُس میدان مین اُنکلا - اژدہام دیکھکر معلوم کیا کہ کسو کو سولي چڑھاتے ہین * یہہ سنتے ہي گھوڑے کو دار کے نزدیک لاکر تلوار سے طنابین کاٹ دین * حاکم کے پیادون کو ڈانٹا اور تنبیہ کي کہ ایسے وقت مین کہ پادشاہ کي یہہ حالت ہی تُم خُدا کے بندے کو قتل کرتے ہو ! اور مُجھے چھڑوا دیا * تب یہہ دونون بھائي پھر حاکم کے پاس گئے اور میرے قتل کے واسطے کہا * شحنہ نے تو رِشوت کھائي تھي - جو یہہ کہتے تھے سوکرتا تھا *

کوتوال نے ان سے کہا کہ خاطر جمع رکھو - اب مین ایسا قید کرتا ہون کہ آپ سے آپ مارے بھوکھون کے بے آب و دانہ مرجاوے - کِسوکو خبر نہووے * مُجھے پکڑ لائے اور ایک گوشے مین رکھا * اُس شہر سے باہر ایك کوس پر ایک پہاڑ تھا کہ حضرت سُلیمان کے وقت مین دیوون نے ایک کوا تنگ و تاریک اُس مین کھودا تھا - اُسکا نام زِندان سُلیمان کہتے تھے * جِس پر بڑا غضب پادشاہي ہوتا اُسے وہان محبوس کرتے - وہ خودبخود مرجاتا *

القِصّہ رات کو چُپکے سے دونون بھائي اور کوتوال کے ڈنڈے مُجھے اُس پہاڑ پر لیگئے اور اُس غار مین ڈال کر اپنی خاطر جمع کرکے پھرے * ای پادشاہ ! یہہ کُتّا میرے ساتھہ چلا گیا - جب مُجھے کوئے مین گِرایا تب یہہ اُسکي مینڈ پر لیٹ رہا * مین اندر

Digitized by Google

اِس مین حاکِم کے پیادے آئے - اِن کو ڈانٹا کہ کیون مارتے ہو ؟ اوو میرا ہاتھہ پکڑ کر کوتوال نے پاس لیگئے * بے درنون بھي ساتھہ چلے اور حاکِم سے بھي یہي کہا اور بطور رِشوت کے کُچھہ دیکر اپنا اِنصاف چاہا اور خون ناحق کا دعوی کیا * حاکم نے مُجھہ سے پوچھا * میري یہہ حالت تھي کہ مارے بھوکھہ اور مارپیٹ کے طاقت گویائي کي نہ تھي * سرنیچے کئے کھڑا تھا کُچھہ مُنہہ سے جواب نہ نِکلا * حاکِم بھي یقین ہوا کہ یہہ مقرّر خوني ہی - فرمایا کہ اِسے میدان مین لیجاکر سولی دو * جہان پناہ ! مین نے روپي دیکر اِنکو یہودي کی قید سے چُھڑایا تھا - اُسکے عِوض اِنہون نے بھي روپي خرچ کرکے میري جان کا قصد کیا * بے درنون حاضر ہین - اِنسے پوچھئے کہ مین اِس مین سرمو تفاوت کہتا ہون - خیر مُجھے لیگئے - جب دار کو دیکھا ہاتھہ زندگي سے دھوئے *

سِواے اِس کُتّے کے کوئي میرا رونے والا نہ تھا - اِسکي یہہ حالت تھي کہ ہرایک آدمي کے پانون مین لوٹتا اور چِلّاتا تھا * کوئي لکڑي کوئي پتّھر سے مارتا لیکن یہہ اُس جگھہ سے نہ سرکتا اور مین رو بقِبلہ کھڑا ہو خُدا کو کہتا تھا کہ اسوقت مین تیري ذات کے سِوا میرا کوئي نہین جو آڑے آوے اور بیگناہ کو بچاوے اب توہي بچاوے تو بچتا ہون - یہہ کہکر کلِمہ شہادت کا پڑھہ کر تیوراکر گر پڑا *

خُدا کي حِکمت سے اُس شہر کے پادشاہ کو قُلنج کي بیماري ہوئي - اُمرا اور حکیم جمع ہوئے - جو عِلاج کرتے تھے فائدہ مند

Digitized by Google

اور پیٹ میں آگ لگی - نزدیک تھا کہ روح بدن سے نکلے ناگاہ دوجوان کو دیکھا کہ لباس عجم کا پہنے اور ہاتھہ پکڑے چلے آتے ہیں * اُنکو دیکھکر خوش ہوا کہ یے اپنے مُلک کے اِنسان ہیں - شاید آشنا صورت ہوں - اِنسے اپنا اِحوال کہونگا * جب نزدیک آئے تو میرے دونوں برادر حقیقی تھے - دیکھکر نہیت شاد ہوا - شُکر خُدا کا کیا کہ خُدا نے آبرو رکھہ لی - غیر کے آگے ہاتھہ نہ پسارا * نزدیک جاکر سلام کیا اور بڑے بھائی کا ہاتھہ چوما - اُنہوں نے مُجھے دیکھتے ہی غُل و شور کیا - منجھلے بھائی نے طمانچہ مارا کہ میں لوٹھڑاکر گر پڑا * بڑے بھائی کا دامن پکڑا کہ شاید یہہ حمایت کریگا - اِسنے بھی لات ماری *

غرض دونوں نے مُجھے خوب خورد خام کیا اور حضرت یوسف کے بھائیوں کا سا کام کیا * ہرچند میں نے خُدا کے واسطے دیئے اور گھگیایا ہرگز رحم نہ کھایا * ایک خلقت اِکٹھی ہوئی - سب نے پوچھا اِسکا کیا گُناہ ہی ؟ تب بھائیوں نے کہا - یہہ حرام زادہ ہمارے بھائی کا نوکر تھا - سو اُسکو دریا میں ڈال دیا اور مال اِسباب سب لے لیا * ہم مُدّت سے تلاش میں تھے - آج اِس صورت سے نظر آیا * اور مُجھسے پوچھتے تھے کہ ای ظالم ! یہہ کیا تیرے دل میں آیا کہ ہمارے بھائی کو مار کھپایا ! کیا اُن نے تیری تقصیر کی تھی ؟ اُن تُجھہ سے کیا بُرا سلوک کیا تھا کہ اپنا مختار بنایا تھا - پھر اُن دونوں نے اپنے گریبان چاک کرڈالے اور بے اختیار جھوٹھہ موٹھہ بھائی کی خاطر روتے تھے اور لات مُکّی مُجھہ پر کرتے تھے *

Digitized by Google

کہتا رہا - اب دیکھا ؟ لیکن کُچھہ ہو تو دیکھوں * اس مین مُجھے غافل پاکر منجھلے نے اچانک پیچھے آکر ایسا دھکیلا کہ بے اختیار پانی مین گر پڑا اور وے رونے دھونے لگے کہ دوڑیو ہمارا بھائی دریا مین ڈوبا *

اِتنے مین ناو بڑھہ گئی اور دریا کی لہر مُجھے کہین سے کہین لے گئی * غوطے پر غوطے کھاتا تھا اور موجون مین چلا جاتا تھا * آخر تھک گیا - خدا کو یاد کرتا تھا - کُچھہ بس نہ چلتا تھا * ایک بارگی کسی چیز پر ہاتھہ پڑا - آنکھہ کھول کر دیکھا تو یہی کُنّا ہی * شاید جسدم مُجھے دریا مین ڈالا - میرے ساتھہ یہہ بھی کودا اور پیرتا ہوا میرے ساتھہ لپٹا چلا جاتا تھا * مین نے اُسکی دم پکڑلی * اللہ اُسکو میری زندگی کا سبب کیا * سات دن اور رات یہی صورت گُذری - آٹھوین دن کنارہ جا لگے - طاقت مُطلق نہتھی - لیتے لیتے کروٹین کھاکر جون تون اپنے تئین خشکی مین ڈالا * ایکدن بیہوش پڑا تھا دوسرے دن کتے کی آواز کان مین گئی ہوش مین آیا - خُدا کا شُکر بجا لایا اِدھر اُدھر دیکھنے لگا - دور سے سواد شہر کا نظر آیا لیکن قُوّت کہان کہ اِرادہ کرون ! لاچار دو قدم چلتا پھر بیٹھتا - اِسی حالت سے شام تک کوس بھر راہ کاٹی *

بیچ مین ایک پہاڑ ملا - رات کو وہان گُزرا - صُبح کو شہر مین داخل ہوا * جب بازار مین گیا - نان بائی اور حلوائیون کی دوکانین نظر آئین - دِل ترسنے لگا نہ پاس پیسا جو خرید کرون - نہ جی چاہے کہ مُفت مانگون * اِسیطرح اپنے دِلکو تسلّی دیتا ہوا کہ اگلی دوکان سے لونگا چلا جاتا تھا * آخر طاقت نرہی

کرکے چلا اور اِنکو ساتھہ لیا * جسوقت مال کي زکوٰۃ دیکر اسباب کشتي پر چڑھایا اور لنگر اُٹھایا ناون چلي * یہہ کُتّا کِنارے پر سورہا تھا - جب چونکا اور جہاز کو مانجھہ دھار مین دیکھا حیران ہو کر بھونکا اور دریا مین کود پڑا اور پیرنے لگا * مین نے ایک پنسوئي دورا دي - بارے سگ کو لیکر کشتي مین پہنچایا * ایک مہینا خیر و عافیت سے۔ دریا مین گُذرا - کہین منجھلا بھائي میری لونڈي پر عاشق ہوا * ایکدن بڑے بھائي سے کہنے لگا کہ چھوٹے بھائي کي مِنّت اُٹھانے سے بڑی شرمِندگی حاصل ہوئي - اِسکا تدارک کیا کرین؟ بڑے نے جواب دیا کہ ایک صلاح دِل مین ٹھہرائي ہی - اگر بن آوے تو بری بات ہی * آخر دونون نے مصلحت کرکے تجویز کي کہ اِسے مار ڈالین اور سارے مال اسباب کے قابض و مُتصرِّف ہون *

ایک دن مین جہاز کي کوٹھري مین سوتا تھا اور لونڈی پاؤن داب رہي تھي کہ منجھلا بھائي آیا اور جلدي سے مُجھے جگایا - مین ہڑبڑاکر چونکا اور باہر نکلا - یہہ کُتّا بھي میرے ساتھہ ہولیا * دیکھون تو بڑا بھائي جہاز کي بارّ پر ہاتھہ ٹیکے نہورا ہوا تماشا دریا کا دیکھہ رہا ہي اور مُجھے پُکارتا ہی * مین نے پاس جاکر کہا خَیر تو ہی ؟ بولا عجب طرح کا تماشا ہورہا ہی کہ دریائي آدمي موتي کي سیپیان اور مونگے کے درخت ہاتھہ مین لیئے ہوئے ناچتے ہین * اگر اور کوئي ایسي بات خِلافِ قیاس کہتا تو مین نہ مانتا - بڑے بھائي کے کہنے کو راست جانا۔ دیکھنے کو سر جُھکایا * ہر چند نگاہ کي کُچھہ نظر نہ آیا اور وہ یہي

Digitized by Google

میں لایا - غُسل کرواکر نئي پوشاک پہنائي اور اُن کي خجالت کے ڈر سے ایک بات مُنھہ پر نرکھي * پھر مال سوداگري کا اِنکے واسطے خریدا اور اِرادہ گھر کا کیا * جب نزدیک نیشاپور کے آیا ایک کانون میں بمعۂ مال و اسباب اِن کو چھوڑ کر گھر میں آیا اِسلئے کہ میرے آنیکي کِسو کو خبر نہو * بعد دو دن کے مشہور کیا کہ میرے بھائي سفر سے آئے ہیں - کل اُن کے اِستقبال کي خاطر جاونگا * صبح کو چاہا کہ جاؤں - ایک گرہست اُسي موضع کا میرے پاس آیا اور فریاد کرنے لگا * میں اُس کي آواز سنکر باہر نکلا - اُسے روتا دیکھکر پوچھا کہ کیوں زاري کرتا ہی ؟ وہ بولا تُمہارے بھائیوں کے سبب سے ہمارے گھر لوٹے گئے - کاشکے اُنکو تم وہاں نہ چھوڑ آتے *

میں نے پوچھا کیا مُصیبت گُذري ؟ بولا کہ رات کو ڈاکا آیا اُن کا مال و اسباب لوٹا اور ہمارے گھر بھي لوٹ لے گئے * میں نے افسوس کیا اور پوچھا کہ اب وے دونوں کہاں ہیں ؟ کہا شہر کے باہر ننگے مُنگے خراب خستہ بیٹھے ہیں * دونہیں دو جوڑے کپڑونکے ساتھہ لیکر گیا - پہناکر گھر میں لایا * لوگ سُنکر اُن کے دیکھنے کو آتے تھے اور یہہ مارے شرمندگي کے باہر نہ نِکلتے تھے * تین مہینے اِسي طرح گذرے - تب میں نے اپنے دِل میں غور کي کہ کب تلک یے کونے میں دبکے بیٹھے رہینگے - بنے تو اِنکو اپنے ساتھہ سفر میں لے جاؤں *

بھائیونسے کہا - اگر فرمائیے تو یہہ فدوي آپ کے ساتھہ چلے * یے خاموش رہے - پھر لوازمہ سفر کا اور جِنس سودا گري کي تیّاري

نه کہا کہ اِتنا مال باپ کا تُم نے کیا کیا ؟ شاید شرمِندہ ہوں *
اي بادشاہ ! یے دونوں موجود ہیں پوچھئے کہ سچ کہتا ہوں
یا کوئي بات جھوٹھہ بھي ہی ؟ خیر جب کئي دِن میں مار
گي کوفت سے بحال ہوئے ایک روز منبن نے کہا کہ اي
بھائیو ! اب اس شہر میں تُم بے اعتبار ہو گئے ہو - بہتر یہہ ہی
کہ چند روز سفر کرو * یہہ سُنکر چُپ ہورہے * میں نے
معلوم کیا کہ راضي ہیں - سفر کي تیاّری کرنے لگا - بال پرتل
باربرداری اور سواری کي فِکر کرکے بیس ہزار روپیي کي جِنس
تجارت کي خرید کي * ایک قافلہ سوداگرونکا بخارے کو جاتا
تھا - اُن کے ساتھہ کردیا *

بعد ایک سال کے وہ کاروان پھر آیا - ان کي خیر خبر کچھہ
نہ پائي - آخر ایک آشنا سے قسمیں دیکر پوچھا * اُسنے کہا جب
بُخارے میں گئے ایک نے جوئے خانے میں اپنا تمام مال ہار دیا -
اب وہاں کي جاروب کشي کرتا ہی اور پھر کو لپیٹنا پوتنا ہی -
جُواري جو جمع ہوتے ہیں اُنکي خدمت کرتا ہی * وی
بطریق خیرات کے کُچھہ دیتے ہیں - وہاں کُرکا بنا پڑا رہتا ہی *
اور دوسرا بوزہ فروش کي لڑکي پر عاشق ہو اپنا مال سارا صرف
کیا - اب وہ بوزے خانے کي ٹہل کیاکرتا ہی * قافلے کے آدمی
اِسلئے نہیں کہتے کہ تو شرمِندہ ہوگا *

یہہ احوال اُس شخص سے سنکر میرے عجب حالت ہوئی -
مارے فِکر کے لیٹہ بھوکھہ جاتی رہی * زادراہ لیکر قصد بُخارے
کا کیا - جب وہاں پہنچا دونوں کو ڈھونڈھہ ڈھانڈھہ کر اپنے مکان

دوگے ؟ مین نے کہا اي حبشي ! ایسي کیا بلا تُجھہ پر نازل هوئي ؟ اُسنے کہا یہہ غضب هي کہ تُمهارے بڑے بھائیون کي چوک کے چوراہے مین ایک یہودي نے مشکین باندهین اور قمچیان مارتا هی اور هنستا هي کہ اِگر میرے روپي نہ دوگے تو مارتے مارتے مار هي ڈالونگا * بھلا مُجھے ثواب تو هوگا * پس تُمهارے بھائیونکي یہہ نوبت اور تُم بے فکر هو * یہہ اچھي هی - لوگ کیا کہینگے ؟ یہہ بات غُلام سے سُنتے هي لہو نے جوش کیا - ننگے پانو بازار کي طرف دَوڑا اور غُلامون کو کہا جلد روپي لیکر آو * جونہین وهان گیا دیکھا تو جو کُچھہ غُلام نے کہا تھا سچ هی - اِن پر مار پڑ رهي هی * حاکم کے پیادونکو کہا - واسطے خدا کے ذرا رہ جاو - مین یہودي سے پوچھون کہ ایسي کیا تقصیر کي هی جِسکے بدلے یہہ تعزیر کي هی ؟

یہہ کہکر مین یہودي کے نزدیک گیا اور کہا آج روز آدینہ هی - اِنکو کیون ضربِ شلاق کررها هی ؟ اُسنے جواب دیا اگر حِمایت کرتے هو تو پوري کرو - اِن کے عِوض روپي حوالے کرو نہین تو اپنے گھر کي راہ لو * مین نے کہا - کیسے روپي ؟ دست آویز نِکال - مین روپي گِن دیتا هون * اُن نے کہا تمسّک حاکم کے پاس دے آیا هون * اِس مین میرے دونون غلام دو بدرے روپي لیکر آئے - هزار روپي مُین نے یہودي کو دیئے اور بھائیون کو چھوڑایا * اِنکي یہہ صورت هورهي تھي کہ بدن سے ننگے اور بھوکے پیاسے * اپنے همراہ گھر مین لایا - ورنہین حمّام مین نہلوایا - نئي پوشاک پہنائي کھانا کِھلایا * هرگز اُنسے یہہ

Digitized by Google

وهان جا رها - یهه کُتّا بهي میرے ساتهه چلآیا * واسطے ضروریات کے اسباب خانه داري کا جمع کیا اور دو غلام خِدمت کي خاطِر مول لئے اور باقي پونجي سے ایک دوکان بزازي کي کرکے خدا کے توکّل پر بیٹهّا اپني قِسمت پر راضي تها * اگرچه بهائیون نے بدخقلي کي پر خدا جو مِهربان هوا تین برسکے عرصے مین ایسي دوکان جمي که مین صاحب اِعتبار هوا * سب سرکارون مین جو تُحفه چاهتا میري هي دوکان سے جاتا * آسمین بهت سے روپي کمائے اور نهایت فراغت سے گُذرنے لگي * هردم جناب باري مین شُکریه کرتا اور آرام سے رهتا اور یهه کبت اکثر اپنے احوال پر پڑهتا *

رو تُم کیون نه راجا - واتین کچهو ناهین کاجا - ایك ترسے مهاراجا - اور کون کو سراهئیے *

روٹهے کیون نه بهائي - واتین کچهو نه بسائي - ایك تو هی هی سهائي - اور کون پاس جایئے *

روٹهے کیون نه متر سِتر ؟ آٹهون جام ایك راورے چرن کے نیهه کو نبهائے *

سنسار هی روٹها - ایک توهي انوٹها - سب چومینگے انگوٹها - ایك تو نه روٹها چاهیئے *

اتّفاقًا جمعے کے روز مین اپنے گهر بیٹها تها که ایک غُلام میرا سودے سُلُف کو بازار گیا تها - بعد ایک دم کے روتا هوا آیا * مین نے سبب پوچها که تُجهے کیا هوا ؟ خفا هوکر بولا که تمهین کیا کام هی ؟ تُم خوشي منالو لیکن قیامت مین کیا جواب

وهان دیکها تو یهي دونون بهائي حاضر هین * قاضي نے کها کیون اپنے باپ کا ورثه بانٹ چونٹ نهین لیتا؟ مین نے گهر مین جو کها تها وهان بهي جواب دیا * بهائیون نے کها - اگر یهه بات اپنے دل سے کهتا هی تو همین لادعوی لکهدے که باپ کے مال و اسباب سے مجهے کچهه علاقه نهین * تب بهي مین نے یهي سمجها که یے دونون میرے بزرگ هین - میرے نصیحت کے واسطے کهتے هین که باپ کا مال لیکر بیجا تصرّف نه کرے * بموجب اِنکي مرضي کے فارغخطي به مُهر قاضي مین نے لِکهه دي * یے راضي هو ئے - مین گهر مین آیا *

دوسرے دِن مُجهه سے کهنے لگے - ای بهائي ! یهه مکان جِس مین تو رهتا هی همین درکار هی - تو اپني بود باش کي خاطِر اور جگهه لیکر جا ره * تب مین نے دریافت کیا که یے باپ کي حویلي مین بهي رهنے سے خوش نهین - لاچار اراده اُنهه جانے کا کیا * جهان پناه ! جب میرا باپ جیتا تها تو جِسوقت سفر سے آتا هر ایک مُلک کا تُحفه بطریق سوغات کے لاتا اور مجهے دیتا - اِسواسطے که چهوٹے بیٹے کو هر کوئي زیاده پیار کرتا هی * مین نے اُنکو بیچ کر تهوڑي سي اپني نچ کي پونجي بهم پهنچائي تهي - اُسي سے کچهه خرید فروخت کرنا * ایک بار لونڈي میري خاطِر تُرکستان سے میرا باپ لایا اور ایک دفعه گهوڑے لیکر آیا - اُن مین سے ایک بچهیرا ناکذه که هونهار تها وه بهي مُجهے دیا * مین اپنے پاس سے دانا گهاس اُسکا کرتا تها *

آخر اِنکي بے مروّتي دیکهه کر ایک حویلي خرید کي -

Digitized by Google

تو اُنسے پوچھہ کر مُجھے قائل کیجئے اور اِنصاف فرمائے * مُجھے یہہ بات اُسکي پسند آئي - پنجرون کو مَنگواکر اُن دونون کو نِکلواکر خواجہ کے پاس کھڑا کیا *

خواجہ نے کہا ای پادشاہ ! یہہ مرد جو دھني طرف ھی غلام کا بڑا بھائي ھی اور جو بائین کو کھڑا ھی منجھلا برادر ھی * مین ان دونون سے چھوٹا ھون - میرا باپ مُلک فارس مین سوداگر تھا * جب مین چودہ برس کا ھوا قبلہ گاہ نے رِحلت کي * جب تجہیز و تکفین سے فراغت ھوئي اور پھول اُٹھہ چکے ایک روز اِن دونون بھائیون نے مُجھے کہا - اب باپ کا مال جو کُچھہ ھی تقسیم کرلین جِسکا دِل جو چاہے سو کام کرے * مین نے سُنکر کہا ای بھائیو ! یہہ کیا بات ھی ؟ مین تمہارا غلام ھون بھائي چاري کا دعوي نہین رکھتا * ایک باپ مرگیا تم دونون میرے پدر کي جگہہ میرے سرپر قایم ھو * ایک نانِ خشک چاھتا ھون جِس مین زندگي بسر کرون اور تمہاري خدمت مین حاضر رھون * مجھے حِصے بخرے سے کیا کام ھی ؟ تمہارے آگے کے جھوٹے سے اپنا پیٹ بھر لونگا اور تمہارے پاس رھونگا * مین لڑکا ھون کچھہ پڑھا لکھا بھي نہین - مُجھہ سے کیا ھو سکیگا ؟ ابھي تم مُجھے تربیت کرو * یہہ سُنکر جواب دیا کہ تو چاھتا ھی اپنے ساتھہ ھمین بھي خراب اور محتاج کرے * مین چُپکا ایک گوشے مین جاکر رونے لگا - پھر دلکو سمجھایا کہ بھائي آخر بزُرگ ھین - میري تعلیم کي خاطر چشم نمائي کرتے ھین کہ کُچھہ سیکھے * اِسي فکر مین سوگیا * صُبح کو ایک پیادہ قاضي کا آیا اور مُجھے دارُالشرع مین لے گیا *

Digitized by Google

تب تو جان سے بچیگا نہین تو اُسکے قِصاص مین تیرا پیٹ چاک کرارونگا - تو سب کو عِبرت ہو کہ بار دیگر کوئي دین مُحمدي مین رخنہ نکرے *

خواجہ نے کہا - اي پادشاہ ! مُجھہ کم بخت کے خون سے درگُذر کر اور جتنا مال میرا ہی کہ گنتي اور شمار سے باہر ہی سب کو ضبط کرلے اور مُجھے اور میرے بیٹے کو اپنے تخت کے تصدّق کرکر چھوڑدے اور جان بخشي کر * مین نے تبسّم کرکے کہا - اي بیوقوف ! اپنے مال کي طمع مُجھے دِکھاتا ہي - سواے سچ بولنے کے اب تیري مخلصي نہین * یہہ سنتے ہی خواجہ کي آنکھون سے بے اِختیار آنسو ٹپکنے لگے اور اپنے بیٹے کي طرف دیکھکر ایک آہ بھري اور بولا - مین تو پادشاہ کے رو برو گنہگار ٹھہرا - مارا جاونگا اب کیا کرون ؟ تجھے کِس کو سونپون ؟ مین نے دانتا کہ ای مکّار ! بس اب عذر بہت کئے جو کہنا ہی جلد کہہ *

تب تو اُس مرد نے قدم بڑھاکر تخت کے پاس آکر پائے کو بوسہ دیا اور صِفت و ثنا کرنے لگا اور بولا ای شہنشاہ ! اگر حُکم قتل کا میرے حق مین نہوتا تو سب سیاستین سہتا اور اپنا ماجرا نہ کہتا لیکن جان سب سے عزیز ہی کوئي آپ سے کوئے مین نہین گِرتا پس جان کي محافظت واجب ہی اور ترک واجب کا خلاف حکم خدا کے ہی * خبر جو مرضي مُبارک یہي ہی تو سرگُذشت اِس پیر ضعیف کي سُنئے * پہلے حُکم ہو کہ وے دونون قفس جن مین دو آدمي قید ہین حضُور مین لاکر رکھین * مین اپنا احوال کہتا ہون اگر کہین جھوٹھہ کہون

میرے تخت کے آگے نیچا ور کیا - آداب کورنشات بجالاکر کھڑا ہوا * خواجہ نے بھی زمین چومی اور دعا کرنے لگا - اِس گویائی سے بولتا تھا کہ گویا بُلبُل ہزار داستان ہی * میں نے اُسکی لیاقت کو بہت پسند کیا لیکن عِتاب کی روسے کہا - ای شیطان آدمی صورت ! تونے یہہ کیا جال پھیلایا ہی اور اپنی راہ میں کیوں کھودا ہی ؟ تیرا کیا دین ہی اور یہہ کون آئین ہی ؟ کِس پیغمبر کی اُمّت ہی اگر کافِر ہی ؟ تو بھی یہہ کیسی مت ہی اور تیرا کیا نام ہی کہ تیرا یہہ کام ہی ؟

اُن نے کہا قبلۂ عالم کی عُمر و دولت بڑھتی رہے - غُلام کا دین یہہ ہی - کہ خدا واحد ہی - اِسکا کوئی شریک نہیں اور مُحمّد مُصطفی (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَ آلِہٖ وَ سَلَّمْ) کا کلمہ پڑھتا ہوں اور اُسکے بعد بارہ اِمام کو اپنا پیشوا جانتا ہوں - اور آئین میری یہہ ہی کہ پانچوں وقت کی نماز پڑھتا ہوں اور روزہ رکھتا ہوں اور حج بھی کر آیا ہوں اور اپنے مال سے خُمس زکوٰۃ دیتا ہوں اور مُسلمان کہلاتا ہوں * لیکن ظاہر میں یہہ سارے عیب جو مُجھہ میں بھرے ہیں جِنکے سبب سے آپ ناخوش ہوئے ہیں اور تمام خلق اللہ میں بدنام ہو رہا ہوں اِسکا ایک باعث یہہ ہی کہ ظاہر نہیں کر سکتا * ہرچند سگ پرست مشہور ہوں اور مُضاف محصول دیتا ہوں یہہ سب قبول کیا ہی پر دِل کا بھید کسو سے نہیں کہا * بس بہانے سے میرا غصہ زیادہ ہوا اور کہا - مُجھے تو باتوں میں پُھسلاتا ہی - میں نہیں مانتا کہ جب تلک اِس اپنی گُمراہی کی دلیل معقول عرض نکرے کہ میرے دِل نشین ہو -

Digitized by Google

قضاکار وهي ایلچي فرنگ کا دربار مین حاضر تها - مُسکرایا * مجھے اور بهي غضب زیادہ هوا - فرمایا کہ ای بے ادب ! پادشاهون کے حُضور مین بے سبب دانت کهولنے ادب سے باهر هی - بے محل هنسنے سے رونا بهتر هی * اُسنے اِلتماس کیا - جهان پناہ ! کئي باتین خیال مین گذریں - لهذا فدوی مُتبسّم هوا * پهلے یهہ کہ وزیر سچّا هی اب قید خانے سے رهائي پاریگا - دوسرے یهہ کہ پادشاہ خون ناحق سے اُس وزیر کے بچے - تیسرے یهہ کہ قبلۂ عالم نے بے سبب اور بے تقصیر اُس سوداگر کو حُکم قتل کا کیا * ان حرکتون سے تعجّب آیا کہ بے تحقیق ایک بیوقوف کے کهنے سے آپ هر کِسو کو حُکم قتل کا کر بیٹهتے هین * خدا جانے فی الحقیقت اُس خواجہ کا احوال کیا هی ؟ اُسے حضُور مین طلب کیجئے - اور اُسکي واردات پوچهئے - اگر تقصیروار ٹهہرے تب مختار هو - جو مرضي مین آوے اُس سے سُلوک کیجئے *

جب ایلچي نے اسطرح سمجهایا - مُجھے بهي وزیر کا کهنا یاد آیا - فرمایا جلد سوداگر کو اُسکے بیٹے کے ساتهہ اور وہ سگ اور قفس حاضِر کرو * قورچي اُسکے بُلانے کو دوڑائے - ایک دم مین سب کو حضور مین لے آئے - روبرو طلب کیا * پهلے خواجہ اور اُسکا پسر آیا - دونون لباس فاخِرہ پهنے هوئے * سوداگر بچے کا جمال دیکهنے سے سب ادنی اعلا حیران اور بهیچک هوئے * ایک خوان طلائي جواهر سے بهرا هوا (کہ هرایک رقم کي جوت نے سارے مکان کو روشن کر دیا) سوداگر بچہ هاتهہ مین لئے آیا اور

وقت هوا سیر و تماشے کي خاطر خیمے سے نکل کر صندلیون پر بیٹھے * اتفاقاً ایک قراول پادشاهي اُدهر آ نکلا - اُنکا لشکر اور نشست برخاست دیکهه کر اچنبهے هو رها اور دل مین کها - شاید ایلچي کسو پادشاه کا آیا هی - کهڑا تماشا دیکهتا تها *

خواجه کے شاطر نے اُسکو آگے بلایا اور پوچها که تو کون هی ؟ اُسنے کها مین پادشاه کا میر شکار هون * شاطر نے خواجه سے اُسکا احوال کها * خواجه نے ایك غلام کافري کو کها که جاکر بازدار سے کهه - که هم مُسافر هین - اگر جي چاهے تو آؤ بیٹهو - قهوه قلیان حاضر هي * جب میر شکار نے نام سوداگري کا سنا زیاده متعجب هوا اور غلام کے ساتهه خواجه کي مجلس مین آیا - لوازم اور شان و شوکت اور سپاه و غُلام دیکهے - خواجه اور سوداگر بچے کو سلام کیا اور مرتبه سگ کا نگاه کیا - هوش اُسکے جاتے رهے - هکّابکّا هوگیا * خواجه نے اُسے بٹهلا کر قهوے کي ضیافت کي - قراول نے نام و نشان خواجه کا پوچها * جب رخصت مانگي خواجه نے کُتي تهان اور کچهه تُحفے اُسے دیکر اجازت دي * صبح کو جب پادشاه کے دربار مین حاضر هوا - درباریون سے خواجه سوداگر کا ذکر کرنے لگا * رفته رفته مجهکو خبر هوئي - میر شکار کو مین نے رو برو طلب کیا اور سوداگر کا احوال پوچها *

اُسنے جو کچهه دیکها تها عرض کیا - سُنّے سے کتّے کے تجمّل کے اور در آدمیون کے پنجرے مین قید هونیکے مُجهه کو خفگي آئي * مین نے فرمایا - وه مردود تاجر واجب القتل هی * نسقچیون کو حکم کیا که جلد جاو - اُس بے دین کا سر کاٹ لاو *

Digitized by Google

خاطر یہہ سب فکر کي - الحمد اللہ ! کہ تمہارے دعا کي برکت سے اور اللہ کے فضل سے پورا کام کرکے آئي ہون کہ نیشاپور سے اُس سوداگر کو بمعۂ کُتّے (جسکے گلّے مین وے لعل پڑے ہین) اپنے ساتھہ لائي ہون اور تمہارے امانت مین بھي خیانت نہین کي * سفر کے لئے مردانہ بھیس کیا - اب ایک روز کا کام باقي ہی وہ کرکر قبلہ گاہ کو قید خانے سے چھڑاتي ہون اور اپنے گھر مین آتي ہون - اگر حکم ہو تو پھر جاون اور ایک روز باہر رہکر خدمت مین آون * امّا نے جب خوب معلوم کیا کہ میري بیٹي نے مردون کا کام کیا اور اپنے تئین سب طرح سلامت و محفوظ رکھا ہی خدا کي درگاہ مین نک گھسني کي اور خوش ہوکر بیٹي کو چھاتي سے لگا لیا اور مُنہہ چوما - بلائین لین دعائین دین اور رخصت کیا کہ تو جو مناسب جان سو کر - میري خاطر جمع ہوئي * وزیر زادي پھر سوداگر بچہ بنکر خواجۂ سگ پرست کے پاس چلي * وہان خواجہ کو جدائي اُسکي از بسکہ شاق ہوئي بے اختیار ہو کر کوچ کیا * اتّفاقاً نزدیک شہر کے اِدھر سے سوداگر بچہ جاتا تھا اور اُدھر سے خواجہ آتا تھا - عین راہ مین ملاقات ہوئي * خواجہ نے دیکھتے ہي کہا - بابا ! مُجھہ بوڑھے کو اکیلا چھوڑ کر کہان تھا ؟ سوداگر بچہ بولا آپ سے اِجازت لیکر اپنے گھر گیا تھا - آخر مُلازمت کے اشتیاق نے وہان رہنے نہ دیا آکر حاضر ہوا * شہر کے دروازے پر دریا کے کنارے ایک باغ سایہ دار دیکھکر خیمہ اِستادہ کیا اور وہین اُترے * خواجہ اور سوداگر بچہ باہم بیٹھہ کر شراب و کباب پینے لگے * جب عصر کا

Digitized by Google

اور اُن دونوں قیدیوں کے قفس ایک شُتر پر لٹکائے ہوئے روانہ ہوئے * جس منزل میں پہنچتے سب سوداگر خواجہ کی بارگاہ میں آکر حاضر ہوتے اور دسترخوان پر کھانا کھاتے اور شراب پیتے * خواجہ سوداگر بچے کے ساتھہ ہونے کی خوشی میں شکر خدا کا کرتا اور کوچ در کوچ چلا جاتا تھا * بارے بخیر و عافیت نزدیک قسطنطینیہ کے آپہنچے - باہر شہر کے مقام کیا * سوداگر بچے نے کہا ای قبلہ ! اگر رخصت دیجئے تو میں جاکر ما باپ کو دیکھوں اور مکان صاحب کے واسطے خالی کروں - جب مزاج ساسی میں آوے شہر میں داخل ہوجئے *

خواجہ نے کہا تمہاری خاطر تو میں یہاں آیا - اچھا جلد مل جل کر میرے پاس آؤ اور اپنے نزدیک میرے اترنے کو مکان دو * سوداگر بچہ رخصت ہوکر اپنے گھر میں آیا - سب وزیر کے محل کے آدمی حیران ہوئے کہ یہہ مرد کون گھس آیا * سوداگر بچہ (یعنے بیٹی وزیر کی) اپنی ما کے پاؤں پر جا گری اور روئی اور بولی کہ میں تمہاری جائی ہوں * سنتے ہی وزیر کی بیگم گالیاں دینے لگی کہ ای بتری ! تو بڑی شقّا ہو نکلی - اپنا منہہ تو نے کالا کیا اور خاندان کو رسوا کیا - ہم تو تیری جانکو رو پیٹ کر صبر کرکے تجھہ سے ہاتھہ دھو بیٹھے تھے - جا دفع ہو *

تب وزیر زادی نے سر پر سے پگڑی پھینک دی اور بولی - ای امّاں جان ! میں بری جگہہ نہیں گئی - کچھہ بدی نہیں کی تمہارے بموجب فرمانے کے بابا کو قید سے چھڑا نے کی

Digitized by Google

هو که قدم بوسي حاصل کروں * غرض سوداگر بچے نے ایسي ایسي باتیں لوں مرچ دن لگاکر خواجه کو سنائیں که وه بیچاره لاچار هو کر هونٹهه چاٹنے لگا * از بسکه آسپر شیفته اور فریفته هو رهاتها کهنے لگا اچّها - اگر تُم نهیں رهتے تو مین هي تُمهارے ساتهه چلتا هوں - مین تجهه کو اپني جان کے برابر جانتا هوں - پس جب جان چلي جاوے تو خالي بدن کِس کام آوے ؟ اگر تو اِسي مین رضامند هی تو چل اور مجھے بهي لے چل * سوداگر بچے سے یهه کهکر اپني بهي تیّاري سفر کي کرنے لگا اور گُماشتونکو حُکم کیا که بار برداري کي فکر جلدي کرو *

جب خواجه کے چلنے کي خبر مشهور هوئي رهانکے سوداگرون نے سُنکرسب نے تهّیه سفر کا کیا * خواجهٔ سگ پرست نے گنج اور جواهر بے شمار نوکر اور غُلام انگنت تُحفے اور اسباب شاهانه بهت سا ساتهه لیکر شهر کے باهر تنبو اور قنات اور بے چوبے اور سرا پردے اور کندلے کهڑے کروا کر اُن مین داخل هوا * جتنے تجّار تهے اپني اپني بساط موافق مال سوداگري کا لیکر همراه هوئے - برای خود ایک لشکر هو گیا *

ایکدن جوگني کو پیٹهه دیکر وهان سے کوچ کیا - هزارون اونٹون پر شلیتے اسباب کے اور خچّرون پر صندوق نقد و جواهر کے لادکر پانچ سو غُلام دشت قبچاق اور زنگ و روم کے مُسلّح صاحب شمشیر تازي و ترکي و عراقي گهوڑون پر چڑهه کر چلے * سب کے پیچهے خواجه اور سوداگر بچه خلعت فاخره پهنے سُکهپال پر سوار اور ایک تخت بغدادي اونٹ پر کسا آسپر کتا مسند پر سویا هوا

Digitized by Google

هی - بهتر تو یون هي که ایک آدمي معتبر بهیج کر اپنے والدین کو معهٔ اسباب یہین بلوالو - جو کچهه سواري اوزبار برداري درکار هو مین موجود کرون * جب ما باپ تمهارے اور گهر بار سب آیا اپني خوشي سے کاربار تجارت کا کیا کریو * مین نے بهي اس عمر مین زمانے کی بهت سختیان کهینچین هین اور مُلک مُلک پهرا هون * اب بوڑها هوا * فرزند نهین رکهتا - مین تجهے بهتر اپنے بیٹے سے جانتا هون اور اپنا ولي عهد مختار کرتا هون * میرے کارخانے سے بهي هوشیار اور خبردار هو * جب تک جیتا هون ایک ٹکرا کهانے کو اپنے هاتهه سے دو - جب مرجاؤن گاڑ داب دیجو اور سب مال و متاع میرا لیجو *

تب سوداگر بچے نے جواب دیا که واقعی صاحب نے زیاده باپ سے میري غم خواري اور خاطرداری کي که مجهے ماباپ بهول گئے لیکن اِس عاصي کے والد نے ایک سال کي رخصت دي تهي - اگر دیر لگاونگا تو ورے اِس پیري مین روتے روتے مرجائینگے - پس رضامندي پدر کي خوشنودي خداکي هی اور اگر مجهه سے ناراض هونگے تو مین ڈرتا هون که شاید دُعاے بد نکرین که دونون جهان مین خداکي رحمت سے محروم رهون *

اب آپکي یهي شفقت هی که بنده کو حکم کیجئے که فرمانا قبله گاه کا بجالاوے اور حق پدری سے ادا هووے اور صاحبکي توجه کا اداے شکر جب تلک دم مین دم هي میري گردن پر هي * اگر اپنے مُلک مین بهي جاونگا تو هر دم دِل و جان سے یاد کیا کرونگا - خدا مُسبب الاسباب هي - شاید پهر کوئي ایسا سبب

هی جو ناحق میں زیادہ مُجرِم هوں ؟ بولا خیر اگر لائق کہنے کے نہیں تو نہ کہئے * کہانے میں هاتھہ ڈالا اور نِوالا اُٹھاکر کھانے لگا * دو مہینے تک اِس هوشیاری اور عقلمندی سے سوداگر بچے نے خواجہ کے ساتھہ گُذران کی کہ کِسو پر هرگز نہ کُھلا کہ یہہ عورت هی * سب یہی جانتے تھے کہ مرد هی اور خواجہ سے روز بروز ایسی محبّت زِیادہ هوئی کہ ایک دم اپنی آنکھوں سے جدا نکرتا *

ایک دِن عین مے نوشی کی صُحبت میں سوداگر بچے نے رونا شروع کیا * خواجہ نے دیکھتے هی خاطرداری کی اور رومال سے آنسو پونچھنے لگا اور سبب گریہ کا پوچھا * سوداگر بچے نے کہا اے قِبلہ ! کیا کہوں ؟ کاشکے تُمہاری خِدمت میں بندگی پیدا نہ کی هوتی اور یہہ شفقت جو صاحب میرے حق میں کرتے هیں نہ کرتے * اب دو مُشکلیں میرے پیش آئیں هیں - نہ تمہاری خدمت سے جدا هونیکو جی چاهتا هی اور نہ رهنے کا اتّفاق یہاں هوسکتا هی * اب جانا ضرور هوا لیکن آپکی جدائی سے اُمید زندگی نظر نہیں آتی *

یہہ بات سُنکر خواجہ بے اختیار ایسا رونے لگا کہ هچکی بندهہ گئی اور بولا کہ اے نور چشم ! ایسی جلدی اِس اپنے بوڑھے خادم سے سیر هوئے کہ دلگیر کئے جاتے هو ؟ قصد روانہ هونے کا دل سے دور کرو - جب تلک میری زندگی هی رهو - تُمہاری جُدائی سے ایک دم میں جیتا نہ رهونگا - بغیر اجل کے مرجاؤنگا * اور اِس مُلک فارس کی آب هوا بہت خوب اور موافق

Digitized by Google

اِنکار هي کيا * تب خواجه نے سبب اسکا پوچها که تُم کيون نهين کهاتے ؟ سوداگر بچے نے کها - يهه حرکت تُمهاري اپنے تئين بدنُما معلوم هوئی - اسلئے که اِنسان اشرفُ المخلوقات هی اور کُتّا نجِسُ العَين هی * پس خدا کے دو بندوں کو کُتّے کا جهوٹا کهلانا کِس مذهب و ملّت مين روا هی ؟ فقط يهه غنيمت نهين جانتے که وے تُمهاري قيد مين هين ؟ نهين تو تُم اور وے برابر هين * اب ميرے تئين شک آئي که تُم مُسلمان نهين - کيا جانون کيون هو که کُتّے کو پوجتے هو ؟ مُجهے تُمهارا کهانا مکروه هی جب تلک يهه شُبهه دل سے دور نهو *

خواجه نے کها اي بابا ! جو کُچهه تو کهتا هی مين يهه سب سمجهتا هون اور اِسی خاطر بدنام هون که اِس شهر کی خلقت نے ميرا نام خواجهٔ سگ پرست رکها هی * اِسي طرح پُکارتے هين اور مشهور کيا هی * ليکن خدا کی لعنت کافرون اور مُشرِکون پر هوجيو * کلمه پڑها اور سوداگر بچے کي خاطر جمع کي * تب سوداگر بچے نے پوچها که اگر مُسلمان بدل هو تو اِسکا کيا باعث هی که ايسي حرکت کرکے اپنے تئين بد نام کيا هی ؟ * خواجه نے کها اي فرزند ! نام ميرا بدنام هی اور دُگنا محصول اِس شهر مين بهرتا هون اِسي واسطے که يهه بهيد کسُوپر ظاهر نهو * عجب يهه ماجرا هی که جو کوئي سُنے سواے غَم اور غُصّے کے اُسے کُچهه اور حاصل نهو * تو بهي مُجهے مُعاف رکهه که نه مُجهه مين قُدرت کهنے کي اور نه تُجهه مين طاقت سُنّے کي رهيگي * سوداگر بچے نے اپنے دِل مين غور کي که مُجهے اپنے کام سے کام هی - کيا ضرور

دوسرے نے کُرسی اور غالیچہ اُٹھا لیا اور اُن دونوں حبشي غلامون نے اُن پنجرون کو مزدورن کے سر پر دھر دیا اور آپ پانچون هتیار باندھے ساتھہ هوئے * خواجہ سوداگر بچے کا هاتھہ هاتھہ مین لئے باتین کرتا هوا جویلي مین آیا *

سوداگر بچے نے دیکھا کہ مکانِ عالیشان لائق پادشاهون یاامیرون کے هی * لب نہر فرش چاندني کا بچھا هی اور مسند کے روبرو اسباب عیش کا چُنا هی * کُتّے کی صندلی بهی اُسی جگهہ بچھائي اور خواجہ سوداگر بچے کو لیکر بیٹھا - بے تکلّف تواضع شراب کي کي- دونون پینے لگے * جب سرخوش هوئے تب خواجہ نے کهانا مانگا - دسترخان بچھا اور دُنیا کي نعمت چُني گُئي * پہلے ایک لنگري مین کهانا لیکر سرپوش طلائي ڈهانپ کر کتے کے واسطے لیگئے اور ایک دسترخوان زربفت کا بچھا کر اُسکے آگے دھر دي * کُتّا صندلي سے نیچے اُتر جتنا چاها اُتنا کهایا اور سونے کي لگن مین پانی پیا - پھر چوکي پر جا بیٹھا * غُلامون نے رومال سے هاتھہ مُنہہ اُسکا پاک کیا - پھر اُس طباق اور لگن کو غلام پنجرون کے نزدیک لے گئے - تب خواجہ سے کُنجیان مانگ کر قُفل قفس کا کھولا *

اُن دونون اِنسانون کو باهر نکال کر کئي هونٹے مار کر کُتّے کا جوٹھا اُنهین کِهلایا اور وهي پاني پِلایا-پھر تالے بغذد کر کر تالیان خواجہ کے حوالے کین * جب یہہ سب هو چُکا تب خواجہ نے آپ کهانا شروع کیا * سوداگر بچے کو یہہ حرکت پسند نہ آئي - گهن کهاکر هاتھہ کهانے مین نہ ڈالا * هرچند خواجہ نے مِنّت کي پر اوسنے

Digitized by Google

جو شور هي محض صاحب کي مُلاقات کي آرزو مين يهان تک آيان هون * بارے فضل الهي سے خدمتِ شريف مين مُشرّف هوا اور اُس سے زيادہ پايا - تمنا دِلکي برآئي * خدا سلامت رکھے - اب يهان سے کوچ کرونگا *

يهہ سُنتے هي خواجہ کے عقل و هوش جاتے رهے - بولا کہ اي فرزند - ايسي بات مُجھے نہ سُناو - کوئي دن غريب خانے مين کرم فرماؤ * بھلا يهہ تو بتاؤ کہ تُمهارا اسباب اور نوکر چاکر کهان هين ؟ سوداگر بچے نے کہا کہ مُسافر کا گھر سرا هي - اُنهين وهان چھوڑ کر مين آپ کے پاس آيا هون * خواجہ نے کہا کہ بھٹيار خانے مين رهنا مُناسب نهين - ميرا اِس شهر مين اِعتبار هي اور بڑا نام هي - جلد اُنهين بلوالو * مين ايک مکان تمهارے اسباب کے لئے خالي کر ديتا هون - جو کُچھہ جنس لائے هو - مين ديکهون - ايسي تدبير کرونگا کہ يهين تُمهين بهت سا نفع ملے * تُم بهي خوش هوگے اور سفر کے هرج مرج سے بچوگے اور مُجھے بهي چند روز رهنے سے اپنا اِحسان مند کروگے * سوداگر بچے نے اوپرے دل سے عُذر کيا ليکن خواجہ نے پذيرا نکيا اور اپنے گُماشتے کو فرمايا کہ بار بردار جلد بهيجو اور کاروان سرا سے اِنکا اسباب منگواکر فلانے مکان مين رکھواؤ *

سوداگر بچے نے ايک زنگي غُلام کو اُنکے ساتهہ کر ديا کہ سب مال و متاع لدواکر لے آ اور آپ شام تک خواجہ کے ساتهہ بيٹھا رها - جب گُذري کا وقت هو چُکا اور دوکان بڑھائي خواجہ گھر کو چلا * تب دونون غُلامون مين سے ايک نے کُتّے کو بغل مين ليا -

Digitized by Google

حیران ؟ یہہ تو اُس حیرانی میں تھا اور تمام خلقت چوک اور رستے کی اُسکا حُسن و جمال دیکھکر حیران تھی اور ہکّا بکّا ہو رہی تھی * سب آدمی آپس میں یہہ چرچا کر رہے تھے کہ آج تلک اِس صورت و شبیہ کا اِنسان نظر نہیں آیا * اُس خواجہ نے بھی دیکھا - ایک غُلام کو بھیجا کہ تو جاکر بمنّت اُس سوداگر بچے کو میرے پاس بلالا *

وہ غُلام آیا اور خواجہ کا پیام لایا کہ اگر مہرباني فرماؤ تو ہمارا خداوند صاحب کا مُشتاق ہی - چل کر مُلاقات کیجئے * سوداگر بچہ تو یہہ چاہتا ہی تھا - بولا کیا مُضایقہ ؟ جونہیں خواجہ کے نزدیک آیا اور اُسپر خواجہ کي نظر پڑي ایک برچھي عِشق کي سینے میں گڑي - تعظیم کي خاطر سرو قد اُٹھا لیکن حواس باختہ * سوداگر بچے نے دریافت کیا کہ اب یہہ دام میں آیا * آپس میں بغل گیري ہوئي * خواجہ نے سوداگر بچے کي پیشاني کو بوسہ دیا اور اپنے برابر بیٹھایا - بہت سا تملّق کرکے پوچھا کہ اپنے نام و نسب سے مُجھے آگاہ کرو - کہاں سے آنا ہوا اور کہاں کا ارادہ ہی ؟ سوداگر بچہ بولا کہ اِس کمترین کا وطن روم ہی اور قدیم سے استنبول زاد بوم ہی - میرے قبلہ گاہ سوداگر ہیں * اب بسبب پیري کے طاقت سیر و سفر کي نہیں رہي اسواسطے مُجھے رُخصت کیا ہی کہ کار و بارِ تجارت کا سیکھو * آج تلک میں نے قدم گھر سے باہر نہ نکالا تھا - یہہ پہلاہي سفر درپیش ہوا - دریاکي راہ ہوا نہ پڑا خشکي کي طرف سے قصد کیا لیکن اِس عجم کے مُلک میں آپ کے اخلاق اور خوبیوں کا

مُصاحِب باوضع نزدیک اُس کے کُرسیون پر بیٹھے هین اور آپس مین باتین کر رہے هین *

وہ وزیرزادی (جس نے اپنے تئین سوداگر بچہ کر مشہور کیا تها) اُسے دیکھکر مُتعجّب هوئی اور دِل مین سمجھہ کر خوش هوئی کہ خدا جهوٹهہ نکرے جس سوداگر کا میرے باپ نے بادشاہ سے مذکور کیا هی اغلب هی کہ یهی هو * بار خدایا ! اسکا احوال مجهپر ظاهر کر * اِتّفاقاً ایک طرف جو دیکها تو ایک دوکان هی - اُس مین دو پنجرے آهنی لٹکتے هین اور اُن دونون مین دو آدمی قید هین * اُنکی مجنونکی سی صورت هورهی هی کہ چرم اُستخوان باقی هی اور سر کے بال اور ناخُن بڑهہ گئے هین - سر اوندهائے بیٹھے هین اور دو حبشی بد هیئت مُسلّح دونون طرف کهڑے هین * سوداگر بچے کو اچنبها آیا * لاحَول پڑهکر دوسری طرف جو دیکها تو ایک دوکان مین قالیچے بچھے هین - اُن پر ایک چوکی هاتهی دانت کی اُسپر گدیلا مخمل کا پڑا - ایک کُتّا جواهِر کا پٹّا گلے مین اور سونے کی زنجیر سے بندها هوا بیٹھا هی اور دو غلام امرد خوب صورت اُسکی خدمت کر رہے هین * ایک تو مورچهل جڑاو دستے کا لیئے جهلتا هی اور دوسرا رومال تارکشی کا هاتهہ مین لیکر مُنهہ اور پاون اُسکا پونچهہ رها هی * سوداگر بچہ نے خوب غور کرکر جو دیکها تو پٹّے مین کُتّے کے بارهون دانے لعل کے جیسے سُنے تهے موجود هین * شُکر خدا کا کیا اور فکر مین گیا کہ کِس صورت سے اِن لعلون کو بادشاہ پاس لے جاون اور دکها اپنے باپ کو

هیں) دیکھکر جو بن آوے کر آؤں اور اپنے باپ کو چھڑاوں *

پہلے تو اُس مرد نے انکار کیا - آخر بہت کہنے سُننے سے راضی هوا - تب وزیرزادي نے فرمایا چُپکے چُپکے اسباب سفر کا درست کر اور جنس تجارت کي لائق نذر پادشاهونکے خرید کر اور غلام و نوکر چاکر جتنے ضرور هوں ساتهه لے لیکن یهه بات کسو پر نه کُهلے * داوا نے قبول کیا اور اُسکي تیّاري میں لگا * جب سب اسباب مُهیّا کیا اونٹون اور خچّرون پر بار کرکر روانه هوا اور وزیرزادي بهي لباس مردانه پهن کر ساتهه جا ملي - هرگز کسو کو گهر میں خبر نهوئي * جب صبح هوئي وزیر کے محل میں چرچا هوا که وزیر زادي غایب هی - معلوم نهیں کیا هوئی *

آخر بدنامي کے ڈرسے مانے بیٹي کا گُم هونا چهپایا اور وهاں وزیرزادي نے اپنا نام سوداگر بچه رکها - منزل بمنزل چلتے چلتے نیشاپور میں پُهنچي * خوشي بخوشي کاروان سرا میں جا اُتری اور سب اسباب اُتارا رات کو رهي * فجر کو حمّام میں گئی اور پوشاک پاکیزه جیسے روم کے باشندے پهنتے هیں پهني اور شهر کي سیر کیواسطے نکلی * آتے آتے جب چوک میں پهنچي چوراهے پر کهڑي هوئی - ایک طرف دوکان جوهري کی نظر پڑي که بهت سے جواهر کا ڈهیر لگ رها هی - اور غُلام لباس فاخره پهنے هوئے دست بسته کهڑے هیں * اور ایک شخص جو سردار هی برس پچاس ایک کي اُسکي عمر هی طالع مندوںکي سي خلعت اور قیمه آستین پهنے هوئے - اور کئي

Digitized by Google

قید ہوا * اُسنے پوچھا وہ کیا بات تھی ؟ ذرا میں بھی سُنوں *
تب وزیر کے قبیلے نے کہا کہ تیرے باپ نے شاید یہہ کہا ہی
کہ نیشاپور میں کوئی سوداگر ہی - اُسنے بارہ عدد لعل بے بہا
کُتّے کے پٹے میں ٹانکے ہیں * پادشاہ کو باور نہوا - اُسے جھوٹا
سمجھا اور اسیر کیا - اگر آج کے دن بیٹا ہوتا تو ہر طرح سے
کوشش کر کر اس بات کو تحقیق کرتا اور اپنے باپ کا اُپرالا
کرتا اور بادشاہ سے عرض معروض کر کے میرے خاوند کو بندی
خانے سے مخلصی دلواتا *

وزیر زادی بولی - اَمّا جان ! تقدیر سے لڑا نہیں جاتا - چاہئے
اِنسان بلائے ناگہانی میں صبر کرے اور اُمیدوار فضل الہی کا
رہے وہ کریم ہی - مُشکل کُسوکی اٹکی نہیں رکھتا اور رونا دھونا
خوب نہیں مُبادا دشمن اور طرح سے بادشاہ کے پاس لگاویں اور
لُترے چُغلی کھاویں کہ باعث زیادہ خفگی کا ہو بلکہ جہان پناہ
کے حق میں دعا کرو - ہم اُسکے خانہ زاد ہیں - وہ ہمارا خداوند
ہی وہی غضب ہوا ہی وہی مہربان ہوگا * اُس لڑکی نے
عقل مندی سے ایسی ایسی طرح ما کو سمجھا یا کہ کُچھہ اُسکو
صبر و قرار آیا - تب اپنے محل میں گئی اور چپکی ہو رہی *
جب رات ہوئی وزیر زادی نے دادا کو بلایا - اُسکے ہاتھہ
پانوں پڑی بہت سی مِنّت کی اور رونے لگی اور کہا میں یہہ
اِرادہ رکھتی ہوں کہ اَمّا جان کا طعنہ مُجھپر نہ رہے اور میرا
باپ مخلصی پاوے - جو تو میرا رفیق ہو تو میں نیشاپور کو
چلوں اور اُس تاجرِ کو (جس کے کُتّے کے گلے میں ایسے لعل

Digitized by Google

هيں تو اُسکي نجات هوگي اور نهيں تو بڑے عذاب سے مارا جاويگا * فرمايا که وزير کو بندي خانے ميں ليجاو * يهه حُکم سُنکر ايلچي نے زمين خِدمت کي چومي اور تسليمات کي *

جب يهه خبر وزير کے گهر ميں گئي آه واويلا مچا اور ماتم سرا هو گيا * اُس وزير کي ايک بيٹي تهي برس چودهه پندرهه کي - نهايت خوب صورت اور قابِل - نوشت خواند ميں درست * وزير اُسکو نِهت پيار کرتا تها اور عزيز رکهتا تها - چنانچه اپنے ديوان خانے کے پچهواڑے ايک رنگ محل اُسکي خاطر بنوا ديا تها اور لڑکيان عُمدون کي اُسکي مُصاحبت ميں اور خواصين شکيل خِدمت ميں رهتين - اُنسے هنسي خوشي کهيلا کودا کرتي *

اِتّفاقًا جسدن وزير کو محبوس خانے ميں بهيجا وه لڑکي اپني هم جولِيون ميں بيٹهي تهي اور خوشي سے گُڑيا کا بياه رچايا تها اور ڈهولک پکهاج لئے هوئے رتجگے کي تيّاري کر رهي تهي اور کڑاهي چڑها کر گُلگُلے اور رحم تلتي اور بنا رهي تهي که ايکبارگي اُسکي ما روتي پيٹتي سر کُهلي پاؤن ننگي بيٹي کے گهر ميں گئي اور دو هتّڑ اُس لڑکي کے سر پر ماري اور کهنے لگي * کاش که تيرے بدلے خدا اندهها بيٹا ديتا تو کليجا ٹهنڈا هوتا اور باپ کا رفيق هوتا * وزير زادي نے پوچها - اندها بيٹا تُمهارے کس کام آتا ؟ جو کُچهه بيٹا کرتا ميں بهي کرسکتي هوں * امّا نے جواب ديا خاک تيرے سر پر - باپ پر يهه بپتا بيتي هي که بادشاه کے روبرو کُچهه ايسي بات کهي که بندي خانے ميں

Digitized by Google

میں نے یہہ جواب دیا کہ ہرگز عقل میں نہیں آتا - ایک تاجر کہ نفع کے واسطے شہر بشہر اور مُلک بملک خراب ہوتا پھرتا ہی اور کوڑی کوڑی جمع کرتا ہی بارہ دانے لعل کے جو وزن میں سات سات مِثقال کے ہوں کُتّے کے پٹّے میں لگاوے * اُس نے کہا خدا کی قدرت سے تعجّب نہیں شاید کہ باشد - ایسے تُحفے اکثر سوداگر اور فقیروں کے ہاتھہ آتے ہیں * اِسواسطے کہ یے دونوں ہر ایک مُلک میں جاتے ہیں اور جہان سے جو کُچھہ پاتے ہیں لے آتے ہیں * صلاح دولت یہہ ہی کہ اگر وزیر ایسا ہی تقصیروار ہی تو حُکم قید کا ہو - اِس لئے کہ وزیر بادشاہونکی عقل ہوتے ہیں اور یہہ حرکت سلاطینوں سے بد نُما ہی کہ ایسی بات پر کہ جھوٹھہ سچ اُسکا ابھی ثابت نہیں ہوا حُکم قتل کا فرمائیں اور اُسکی تمام عُمر کی خِدمت اور نمک حلالی بھول جائیں *

پادشاہ سلامت ! اگلے شہریارون نے بندی خانہ اِسی سبب ایجاد کیا ہی کہ پادشاہ یا سردار اگر کِسو پر غضب ہون تو اُسے قید کریں * کئی دن میں غصہ جاتا رہیگا اور بے تقصیری اُس کی ظاہر ہوگی - پادشاہ خون ناحق سے محفوظ رہینگے - کل کو روز قیامت میں ماخوذ نہ ہوینگے * میں نے جتنا اُسکے قائل کرنے کو چاہا اُس نے ایسی معقول گفتگو کی کہ مجھے لاجواب کیا * تب میں نے کہا کہ خیر تیرا کہنا پذیرا ہوا - میں خون سے اُسکے درگذرا لیکن زندان میں مُقید رہیگا - اگر ایک سال کے عرصے میں اُسکا سُخن راست ہوا کہ ایسے لعل کُتّے کے گلے میں

Digitized by Google

آداب بجالایا اور التماس کیا که کُچھه عرض کیا چاهتاهون اگر جان بخشي هو *

مین نے حُکم کیا که کهه - وه بولا قبلهٔ عالم آپ پادشاه هین اور پادشاهون سے بهت بعید هی که ایک پتّهر کي اِتني تعریف کرین * اگرچه رنگ ڈهنگ مین لاثاني هي لیکن سنگ هي اور اِسدم سب مُلکون کے ایلچي دربار مین حاضر هین - جب اپنے اپنے شهر مین جاوینگے البته یهه نقل کرینگے که عجب پادشاه هی که ایک لعل کهین سے پایا هی اُسے ایسا تُحفه بنایا هی که هر روز روبرو منگاتا هی اور آپ اُسکي تعریف کر کر سبکو دکهاتا هی * پس جو بادشاه یا راجه یهه احوال سُنیگا اپني مجلس مین هنسیگا * خُداوند ایک ادنا سوداگر نیشاپور مین هی اُسنے بارہ دانے لعل کے که هر ایک سات سات مثقال کا هی پٹّے مین نصب کر کر کُتّے کے گلے مین ڈال دیئے هین * مُجهه سُنتے هي غُصّه هزهه آیا اور کهسیانے هوکر فرمایا که اِس وزیر کي گردن مارو *

جلادون نے وهین اُسکا هاتهه پکڑ لیا اور چاها که باهر لیجاوین * فرنگ کے پادشاه کا ایلچي دست بسته روبرو آکهڑا هوا * مین نے پوچها که تیرا کیا مطلب هی اُسنے عرض کي اُمیدوار هون که تقصیر سے وزیر کي واقف هون * مین نے فرمایا که جهوٹهه بولنے سے اور بڑا گناه کون سا هی ؟ خُصوصاً بادشاهون کے روبرو * اُن نے کها اُسکا دروغ ثابت نهین هوا - شاید جو کُچهه که عرض کي هی سچ هو * ابهي بے گناه کا قتل کرنا دُرست نهین * اُسکا

Digitized by Google

میں ایک لعل تھا نہایت خوش رنگ اور آبدار قدّ و قامت درست اور وزن میں پانچ مثقال کا * میں نے باوجود سلطنت کے ایسا جواہر کبھو نہ دیکھا تھا اور نہ کسوسے سنا تھا - پسند کیا * سوداگر کو بہت سا إنعام و إکرام دیا اور سند راهداري کي لکھہ دي کہ اِس سے هماري تمام قلمرو میں کوئي مُزاحم محصول کا نہو اور جہاں جاوے اُسکو آرام سے رکھیں - چوکي پہرے میں حاضر رهیں - اُسکا نقصان اپنا نقصان سمجھیں * وہ تاجر حضور میں دربار کے وقت حاضر رهتا اور آداب سلطنت سے خوب واقف تھا اور تقریر اور خوش گوئي اُسکي لایق سُنّے کے تھي اور میں اُس لعل کو هر روز جواهر خانے سے منگواکر هر دربار دیکھا کرتا *

ایک روز دیوان عام کئے بیٹھا تھا اور اُمرا ارکان دولت اپنے اپنے پائے پر کھڑے تھے اور هر مُلک کے بادشاهوں کے ایلچي مُبارکباد کي خاطر جو آئے تھے وے بھي سب حاضر تھے * اُسوقت میں نے مُوافق معمول کے اُس لعل کو منگوایا * جواهر خانے کا داروغہ لیکر آیا - میں هاتھہ میں لیکر تعریف کرنے لگا اور فرنگ کے ایلچي کو دیا * اُن نے دیکھکر تبسّم کیا اور زمانہ سازي سے صفت کي * اُسي طرح هاتھوں هاتھہ هر ایک نے لیا اور دیکھا اور ایک زبان هوکر بولے کہ قبلۂ عالم کے إقبال کے باعث یہہ مُیسّر هوا هی و إلّا نہ کسو بادشاہ کے هاتھہ آج تک ایسا رقم بے بہا نہیں لگا * اُسوقت میرے قبلہ گاہ کا وزیر کہ مرد دانا تھا اور اُسي خدمت پر سرفراز تھا وزارات کي چوکي پر کھڑا تھا -

Digitized by Google

هي مارے خوف کے کانپنے لگے اور سر نیچے کرکے چُپ ہو رہے ۔ طاقت گویائي کي نرهي *

آزاد بخت نے جب دیکھا کہ اب اِن میں مارے رُعب کے حواس نہیں رہے جو کُچھہ بولیں فرمایا کہ اِس جہان میں کوئي شخص ایسا نہوگا جس پر ایک نہ ایک واردات عجیب و غریب نہوئي ہوگي - باوجودیکہ میں بادشاہ ہوں لیکن میں نے بھي ایسا تماشا دیکھا ہی کہ پہلے میں ہی اُسکا بیان کرتا ہوں * تُم بخاطر جمع سُنو * درویشوں نے کہا پادشاہ سلامت ! آپکا الطاف فقیروں کے حال پر ایساهي هی - اِرشاد فرمایئے * آزاد بخت نے اپنا احوال شروع کیا - اور کہا *

ای شاهـــو ! بادشاہ کا اب ماجرا سُنـــو
جوکُچھہ کہ میں نے دیکھا هی اور هي سُنا سُنو
کہتا ہوں میں فقیرونکي خدمت میں سربسر
احوال میـــرا خوب طرح دل لگا سُنـــو

میرے قبلہ گاہ نے جب وفات پائي اور میں اِس تخت پر بیٹھا عین عالم شباب کا تھا اور سارا یہہ مُلک روم کا میرے حکم میں تھا * اِتّفاقًا ایک سال کوئي سوداگر بدخشان کے مُلک سے آیا اور اسباب تجارت کا بہت سا لایا * خبرداروں نے میرے حُضور میں خبر کي کہ ایسا بڑا تاجر آج تک شہر میں نہیں آیا - میں نے اُسکو طلب فرمایا *

وہ تُحفے هر ایک مُلک کے لایق میري نظر کے لیکر آیا * فی الواقع هر ایک جنس بے بہا نظر آئي - چنانچہ ایک دبیہ

Digitized by Google

مین پُہنچے اور روبرو پادشاہ کے گئے چارون قلندرون نے دُعا دي کہ بابا ! تیرا بھلا ہو * پادشاہ دیوان خاص مین جا بیٹھے اور دو چار خاص امیرونکو بُلایا اور فرمایا کہ چارون گُدڑي پوشون کو بلاؤ * جب وہان گئے حُکم بیٹھنے کا کیا - احوال پُرسي فرمائي کہ تُمہارا کہان سے آنا ہوا - اور کہان کا اِرادہ ہی ؟ مکان مُرشدون کے کہان ہین ؟

اُنہون نے کہا کہ پادشاہ کي عُمر و دولت زیادہ ہووے - ہم فقیر ہین - ایک مُدّت سے اِسي طرح سیر و سفر کرتے پھرتے ہین - خانہ بدوش ہین * وہ مثل ہی فقیر کو جہان شام ہوئي وہین گھر ہی اور جو کُچھہ اِس دُنیاے ناپایدار مین دیکھا ہی کہان تلک بیان کرین ؟

آزاد بخت نے بہت تسلّي اور تشفّي کي اور کھانیکو منگواکر اپنے روبرو ناشتا کروایا * جب فارغ ہوئے پھر فرمایا کہ اپنا ماجرا تمام بے کم و کاست مُجھسے کہو - جو مُجھہ سے تُمہاري خِدمت ہوسکیگي قصور نہ کرونگا * فقیرون نے جواب دیا کہ ہم پر جو جو کُچھہ بیتا ہی نہ ہمین بیان کرنیکي طاقت ہی اور نہ پادشاہ کو سنّے سے فرحت ہوگي - اُسکو مُعاف کیجئے * تب پادشاہ نے تبسّم کیا اور کہا - شب کو جہان تُم بِسترون پر بیٹھے اپنا اپنا احوال کہہ رہے تھے وہان مین بھي موجود تھا - چنانچہ دو درویش کا احوال سُن چُکا ہون - اب چاہتا ہون کہ دونون جو باقي ہین وے بھي کہین اور چند روز بہ خاطر جمع میرے پاس رہین کہ قدم درویشان ردّ بلا ہی * پادشاہ سے یہہ بات سُنتے

اُمیدوار ہوں کہ خوشي اور خورّمي حاصل ہو - اور سب مُرادیں اپني مُراد کو پُہنچیں *

سرگذشت آزاد بخت بادشاہ کي

جب دوسرا درویش بھي اپني سیر کا قصّہ کہہ چُکا رات آخر ہوگئي اور وقت صبح کا شروع ہونے پر آیا * بادشاہ آزاد بخت چُپکا اپنے دولت خانے کي طرف روانہ ہوا - محل مین پُہنچ کر نماز ادا کي * پھر غُسل خانے مین جا خلعت فاخرہ پہن کر دیوان عام مین تخت پر نکل بیٹھا اور حکم کیا کہ یساول جاوے - چار فقیر فلانے مکان پر وارد ہین - اُنکو بعزت اپنے ساتھہ حُضور مین لے آوے * بموجب حُکم کے چوبدار وہان گیا - دیکھا تو چارون بے نوا ہاتھہ منہہ دھوکر چاہتے ہین کہ دسا کرین اور اپنے اپنے راہ لین * چیلے نے کہا شاہ جي ! بادشاہ نے چارون صورتونکو طلب فرمایا ہی - میرے ساتھہ چلئے * چارون درویش آپس مین ایک ایک کو تکنے لگے اور چوبدار سے کہا - بابا - ہم اپنے دل کے بادشاہ ہین - ہمین دُنیا کے پادشاہ سے کیا کام ہی ؟ اُسنے کہا میان اللّٰہ ! مُضایقہ نہین - اگر چلو تو اچّھا ہی *

اِتنے مین چارون کو یاد آیا کہ مولا مُرتضیٰ نے جو فرمایا تھا سو اب پیش آیا - خوش ہوئے اور یساول کے ہمراہ چلے * جب قلعے

Digitized by Google

میں نے جو افسون یاد کئے تھے پڑھنے شروع کئے - وہ جن جو کھڑا تھا بیل بن گیا لیکن افسوس کہ پری ذرا بھی ہوش میں نہ آئی اور وہی حالت بے خودی کی رہی * تب میرا دل گھبرایا - سارا عیش تلخ ہوگیا * اُس روز سے آدمیوں سے نفرت ہوئی - اِس باغ کے گوشے میں پڑا رہتا ہوں اور دل کے بہلانے کی خاطر یہہ مرتبان زُمرّد کا جھاڑ دار بنایا کرتا ہوں اور ہر مہینے اُس میدان میں اُسی بیل پر سوار ہوکر جایا کرتا ہوں - مرتبان کو توڑ کر غُلام کو مار ڈالتا ہوں - اِس اُمید پر کہ سب میری یہہ حالت دیکھیں اور افسوس کھاویں شاید کوئی ایسا خدا کا بندہ مہربان ہو کہ میرے حق میں دُعا کرے تو میں بھی اپنے مطلب کو پہنچوں * ای رفیق ! میرے جنون اور سودے کی یہہ حقیقت ہی جو میں نے تُجھے کہہ سُنائی *

میں سُنکر آبدیدہ ہوا اور بولا کہ ای شہزادے ! تو نے واقعی عِشق کی بڑی محنت اُٹھائی لیکن قسم خدا کی کھاتا ہوں کہ میں اپنے مطلب سے درگذرا * اب تیری خاطر جنگل پہاڑ میں پھرونگا اور جو مُجھہ سے ہوسکیگا سو کرونگا * یہہ وعدہ کر کر میں اُس جوان سے رُخصت ہوا اور پانچ برس تک سودائی سا ویرانے میں خاک چھانتا پھرا ، کُچھہ سُراغ نہ ملا * آخر اُکتاکر ایک پہاڑ پر چڑھہ گیا اور چاہا کہ اپنے تئیں گرادوں کہ ہڈی پسلی کُچھہ ثابت نرہے - وہی سوار برقع پوش آپُہنچا اور بولا کہ اپنی جان مت کھو تھوڑے دنوں کے بعد تو اپنے مقصد سے کام یاب ہوگا * یا سائیں اللہ ! تُمھارے دیدار تو مُیسّر ہوئی - اب خدا کے فضل سے

نے بے اختیار اُس پری کو جان کی طرح بغل میں لیا اور یہہ شعر پڑھا *

کمان ابرو میرے گھر کیوں نہ آوے
کہ جسکے واسطے کھینچے ہیں چلّے

اُسی خوشی کے عالم میں اُسی باغ میں رہنے لگے - مارے ڈر کے کچھہ اور خیال نکرتا - بالائی مزے لیتا اور فقط دیکھا کرتا * وہ پری میرے قول قرار کے نباہنے پر دل میں حیران رہتی اور بعضے وقت کہتی کہ پیارے ! تم بھی اپنی بات کے بڑے سچّے ہو لیکن ایک نصیحت میں دوستی کی راہ سے کرتی ہوں - اپنی کتاب سے خبردار رہیو کہ جن کسی نہ کسی دن تمھیں غافل پاکر چرا لیجائینگے * میں نے کہا اِسے میں اپنی جان کے برابر رکھتا ہوں *

اِتّفاقًا ایک روز رات کو شیطان نے ورغلانا - اِشتیاق کی حالت میں یہہ دل میں آیا کہ جو کچھہ ہو سو ہو کہاں تلک اپنے تئیں تھانبوں ؟ اُسے چھاتی سے لگالیا * وونہیں ایک آواز آئی - یہہ کتاب مُجھکو دے کہ اِس میں اِسم اعظم ہی - بے ادبی نکر * اُس مستی کے عالم میں کچھہ ہوش نرہا - کتاب بغل سے نکال کر بغیر جانے پہچانے حوالے کردی * وہ نازنیں یہہ میری نادانی کی حرکت دیکھکر بولی کہ ظالم ! آخر چوکا اور نصیحت بھولا *

یہہ کہہ کر بے ہوش ہوگئی اور میں نے اُسکے سرھانے ایک دیو کو دیکھا کہ کتاب لئے کھڑا ہی * چاہا کہ پکڑ کر خوب ماروں اور کتاب چھین لوں - اِتنے میں اُسکے ہاتھہ سے کتاب دوسرا لے بھاگا *

Digitized by Google

نمود هوا * ایک تخت هوا سے اُترا - اُسپر ایک شخص شاندار موتیونکا تاج اور خلعت پہنے هوئے بیٹھا تھا * مین نے دیکھتے هي بہت مؤدّب هو کر سلام کیا * اُسنے میرا سلام لیا اور کہا کہ ای عزیز یہہ کیا تونے ناحق دُند مچایا ؟ هم سے تُجھے کیا مُدّعا هی ؟ مین نے اِلتماس کیا کہ یہہ عاجز بہت مُدّت سے تُمهاري بیٹي پر عاشق هی - اور اُسي لیئے کہانسے کہان خراب و خستہ هوا اور جیتے جي مُوا * اب زندگي سے بہتنگ آیا هون اور اپني جان پر کھیلا هون جو یہہ کام کیا هی * اب آپ کي ذات سے اُمید وار هون کہ مُجھہ حیران سرداں کو اپني توجّہ سے سر فراز کرو اور اُسکے دیدار سے زندگي اور آرام بخشو - تو بڑا ثواب هوگا *

یہہ میري آرزو سُنکر بولا - کہ آدمي خاکي اور هم آتشي - اِن دونون مین مُوافقت آپني مُشکل هی * مین نے قسم کهائي کہ مین اُنکے دیکھنے کا مُشتاق هون اور کُچھہ مطلب نہین * پھر اُس تخت نشین نے جواب دیا - کہ اِنسان اپنے قول قرار پر نہین رهتا - غرض کے وقت سب کُچھہ کہتا هي لیکن یاد نہین رکھتا * یہہ بات میرے تیرے بھلے کے لئے کہہ سُناتا هون کہ اگر تو نے کبھو قصد کُچھہ اور کیا - تو وہ بھي اور تو بھي دونون خراب خستہ هوگے بلکہ خَوف جان کا هی * مین نے پھر دوبارہ سوگند یاد کي کہ جس مین طرفین کي بُرائي هووے ویسا کام هرگز نہ کرونگا مگر ایک نظر دیکھتا رهونگا * تب باتین هوتیان تهین کہ انجیت وہ پري (کہ جسکا مذکور تھا) نہایت ٹھسّے سے بناؤ کئے هوئے آپہنچی اور پادشاہ کا تخت وهان سے چلا گیا * تب مین

اِسم اعظم اور حاضرات جن و پری کی اور روحونکی مُلاقات اور تسخیرِ آفتاب کی ترکیب لکھی ھی *

ایسی دولت کے ھاتھہ لگنے سے نہایت خوشی حاصل ھوئی اور اُنھر عمل کرنا شُروع کیا * دروازہ باغ کا کھول دیا - اپنے اُس امیر کو اور ساتھہ والونکو کہا کہ کشتیان منگواکر یہہ سب جواھر و نقد و جنس اور کتابین بار کر لو - اور ایک نواڑے پر آپ سوار ھوکر وھانسے بحر کو روانہ کیا * آتے آتے جب نزدیک اپنے مُلک کے پہنچا - جہان پناہ کو خبر ھوئی * سوار ھوکر اِستقبال کیا اور اِشتیاق سے بیقرار ھوکر کلیجے سے لگا لیا * مین نے قدم بوسی کرکر کہا کہ اِس خاکسار کو قدیم باغ مین رھنے کا حُکم ھو * بولے کہ ای برخوردار ! وہ مکان میرے نزدیک منحوس ٹھہرا لہذا اُسکی مرمّت اور تیّاری موقوف کی - اب وہ مکان لایق اِنسان کے رھنے کے نہین رھا اور جِس محل مین جی چاھے اُترو * بہتر یون ھی کہ قلعے مین کوئی جگھہ پسند کرکے میری آنکھونکے روبرو رھو اور پائین باغ جیسا چاھو تیّار کرواکر سیر تماشا دیکھا کرو * مین نے بہت ضِد اور ھٹ کرکر اُس باغ کو نیئے سر سے تعمیر کروایا اور بہشت کی مانند آراستہ کر داخِل ھوا - پھر فراغت سے جِنونکی تسخیر کی خاطِر چِلّے بیٹھا اور ترکِ حیوانات کرکر حاضِرات کرنے لگا *

جب چالیس دن پورے ھوئے تب آدھی رات کو ایک ایسی آندھی آئی کہ بڑی بڑی عِمارتین گِر پڑین اور درخت جڑ پیڑ سے اُکھڑ کر کہین سے کہین جا پڑے اور پریزادون کا لشکر

Digitized by Google

توجّہ سے بارے اِتنا تو ہوا * وہ اپني عادت پر دریا کے گھاٹ تک گیا اور اِشنان پوجہ جس طرح ہر سال کرتا تھا کي - پھرتي بار بیمارون کو دیکھتا بھالتا چلا آتا تھا *

اِتّفاقًا سودائیون کے غول مین ایک جوان خوبصورت شکیل کہ ضعف سے کھڑے ہونے کي طاقت اُس مین نہ تھي نظر پڑا - مُجھکو کہا کہ اِسکو ساتھہ لے آؤ * سب کي دارو درمن کرکے جب خلوت خانے مین گیا - تھوڑي سي کوپڑي اُس جوان کي تراش کر چاہا کہ کنکھجورا جو مغز پر بیٹھا تھا زنبور سے اُٹھا لیوے * میرے خیال مین گُذرا - اور بول اُٹھا - کہ اگر دست پناہ آگ مین گرم کر کر اُسکي پیٹھہ پر رکھئے تو خوب ہي - آپ سے آپ نکل آویگا - اور جو یون کھینچےگا تو مغز کے گودیکو نچوڑیگا - پھر خوف زندگي کو ہی * یہہ سُنکر میري طرف دیکھا اور چُپکا اُٹھہ باغ کے کونے مین ایک درخت کو کولے مین پکڑ جتّا کي لت کي گلے مین پھانسي لگاکر رہ گیا * مین پاس جاکر جودیکھا تو واہ واہ یہہ تو مرگیا ! یہہ اچنبھا دیکھہ نہایت افسوس ہوا - لاچار جي مین آیا اُسے کاٹ دون * جون درخت سے جدا کرنے لگا دو کنجیان اُسکي لنگون مین سے گر پڑین * مین نے اُنکو اُٹھا لیا اور اُس گنج خوبي کو زمین مین دفن کیا * وے دونون کنجیان لیکر سب قفلون مین لگانے لگا * اِتّفاقًا دو حُجرون کے تالے اُن تالیون سے کُھلے - دیکھا تو زمین سے چھت تلک جواہر بھرا ہوا ہی اور ایک پیٹي مخمل سے مڑھي سونے کے پتر لگي قُفل دي ہوئي ایک طرف دھري ہی * اُسکو جو کھولا تو ایک کتاب دیکھي کہ اُس مین

هوئیں کھڑا رہ کر غور میں گیا اور مُجھہ سے کہنے لگا کہ ہمارے ساتھہ آؤ * میں ہمراہ ہولیا *

جب سب کي نوبت ہو چُکي میرے تئیں باغ کے اندر لے گیا - اور ایک مُقطّع خوش نقشے خلوت خانے میں مُجھے فرمایا کہ یہاں تُم رہا کرو - اور آپ اپنے اِستھان میں گیا * جب ایک چِلّہ گُذرا تو میرے پاس آیا اور آگے کي نسبت مُجھے خوش پایا - تب مُسکراکر فرمایا کہ اِس باغیچے میں سیر کیا کرو - جس میوے پر جي چاہے کھایا کرو * اور ایک قُلفي چیني کي معجون سے بھري ہوئي دي - کہ اِس میں سے چھہ ماشہ ہمیشہ بلاناغہ نہار نوشجان فرمایا کر * یہہ کہکر وہ تو چلا گیا اور میں نے اُسکے کہنے پر عمل کیا * ہر روز قُوّت بدن میں اور فرحت دِل کو معلوم ہونے لگي لیکن حضرتِ عِشق کو کُچھہ اثر نکیا - اُس پري کي صورت نظروں کے آگے پھرتي تھي *

ایک روز طاق میں ایک جِلد کتاب کي نظر آئي - اُتار کر دیکھا تو سارے عِلم دین دُنیا کے اُس میں جمع کئے تھے - گویا دریا کو کوزے میں بھر دیا تھا * ہر گھڑي اُسکا مُطالعہ کیا کرتا - عِلم حِکمت اور تسخیر میں نہایت قُوت بہم پہنچائي * اِس عرصے میں برس دن گذر گیا - پھر وہي خوشي کا دن آیا - جوگي اپنے آسن پر سے اُٹھہ کر باہر نِکلا * میں نے سلام کیا - اُنہں قلمدان مُجھے دیکر کہا ساتھہ چلو - میں بھي ساتھہ ہولیا * جب دروازے سے باہر نِکلا - ایک عالم دُعا دینے لگا - وہ امیر سوداگر مُجھے ساتھہ دیکھکر گُسائیں کے قدموں پر گرے اور اداے شکر کرنے لگے کہ آپکي

Digitized by Google

امیر معتبر جہان دیدہ کار آزمودہ کو اور اُس تاجر کو میری رکاب میں تعینات کیا اور اسباب ضروری ساتھہ کردیا * نواڑے بجرے مورپنکھی پلوار لچکے کھیلنے اُلاق پٹیلوں پر مع سرانجام سوار کر کر رخصت کیا * منزل منزل جلتے چلتے اُس ٹھکانے پر جا پہنچے * نئی ہوا اور نیا دانہ پانی کھانے پینے سے کچھہ مزاج ٹھہرا لیکن خاموشی کا وہی عالم تھا اور رونے سے کام * دم بدم یاد اُس پری کی دل سے بھولتی نہ تھی - اگر کبھو بھولتا تو یہہ بیت پڑھتا *

نجانوں کس پری رو کی نظر ہوئی
ابھی تو تھا بھلا چنگا میرا دل

بارے جب دو تین مہینے گذرے اُس پہاڑ پر قریب چار ہزار مریض کے جمع ہوئے لیکن سب یہی کہتے تھے کہ اب خدا چاہے تو گسائیں اپنے منّہہ سے نکلینگے اور سب کو اُنکے فرمانے سے شفاے کُلّی ہوگی * القصّہ جس دن وہ دن آیا صُبح کو جوگی مانند آفتاب کے نکل آیا اور دریا میں نہایا اور پیرا - پار جاکر پھر آیا اور بھبوت بھسم تمام بدن میں لگایا - وہ گورا بدن مانند انگاریکے راکھہ میں چھپایا اور ماتھے پر ملاگیر کا ٹیکا دیا - لنگوٹ باندھکر انگوچھا کاندھے پر ڈالا - بالوں کا جوڑا باندھا - موچوں پر تاؤ دیکر چڑھواں جوتا اڑایا * اُسکے چہرے سے یہہ معلوم ہوتا تھا کہ ساری دُنیا اُنکے نزدیک کُچھہ قدر نہیں رکھتی * ایک قلمدان جڑاؤ بغل میں لیکر ایک ایک کی طرف دیکھتا اور نسخہ دیتا ہوا میرے نزدیک آپہنچا * جب میری اور اُسکی چار نظریں

Digitized by Google

نظر پڑا یا کسو سے مذکور اُسکا سُنا ؟ اُسنے اِلتماس کیا کہ قبلۂ عالم ! غُلام نے بہت سیر کی لیکن ہندوستان مین دریا کے بیچ ایک پہاڑی ہی وہان ایک گسائین جٹادھاری نے بڑا مندھپ مہادیو کا اور مندر اور باغ بڑی بہار کا بنایا ہی اور اُس مین رہتا ہی * اور اُسکا یہہ قاعدہ ہی کہ برسوین دن شیوراتر کے روز اپنے اِستھان سے نِکل کر دریا مین پیرتا ہی اور خوشی کرتا ہی * اِشنان کے بعد جب اپنے آسن پر جانے لگتا ہی تب بیمار اور دردمند دیس دیس اور مُلک مُلک کے جو دور دور سے آتے ہین دروازے پر جمع ہوتے ہین * اُنکی بڑی بھیڑ ہوتی ہی *

وہ مہنت (جسے اُس زمانے کا افلاطون کہا چاہئے) قارورہ اور نبض دیکھتا ہوا اور ہر ایک کو نسخہ لکھہ کر دیتا ہوا چلا جاتا ہی * خدا نے ایسا دستِ شفا اُس کو دیا ہی کہ دوا پیتے ہی اثر ہوتا ہی اور وہ مرض بالکل جاتا رہتا ہی * یہہ ماجرا مین نے بہ چشم خود دیکھا اور خدا کی قُدرت کو یاد کیا کہ ایسے ایسے بندے پیدا کئے ہین * اگر حکم ہو تو شاہزادۂ عالمیان کو اُس کے پاس لے جاوین - اُس کو ایک نظر دیکھاوین - اُمید قوی ہی کہ جلد شفاے کامل ہو * اور ظاہر مین بھی یہہ تدبیر اچھی ہی کہ ہر ایک مُلک کی ہوا کھانے سے اور جا بجا کے آب و دانے سے مِزاج مین فرحت آتی ہی * بادشاہ کو اُس کی صلاح پسند آئی اور خوش ہوکر فرمایا - بہت بہتر شاید اُسکا ہاتھہ راس آوے اور میرے فرزند کے دل سے وحشت جاوے * ایلچی

Digitized by Google

اِس خرابي سے دائي اور مُعلّم خبردار هوئے - ڈرتے ڈرتے بادشاہ کے روبرو گئے اور عرض کي - کہ بادشاہ زادۂ عالميان کا يہہ حال هی - معلوم نہين خود بخود يہہ کيا غضب ٹوٹا جو اُن کا آرام اور کھانا پينا سب چھوٹا * تب بادشاہ وزير اُمراے صاحب تدبير اور حکيم حاذق - منجّم صادق - مُلا سيانے خوب - درويش سالک اور مجذوب اپنے ساتھہ ليکر اُس باغ مين رونق افزا هوئے *

ميري بے قراري اور نالہ و زاري ديکھکر اُنکي بھي حالت اِضطراب کي هوگئي * آبديدہ هوکر بے اختيار گلے سے لگا ليا اور اُسکي تدبير کي خاطر حُکم کيا * حکيمون نے قُوّتِ دِل اور خلل دماغ کے واسطے نُسخے لکھے اور مُلّاون نے نقش و تعويذ پلانے اور پاس رکھنے کو ديئے - دعائين پڑھہ پڑھہ کر پھونکنے لگے * اور نجومي بولے کہ ستارون کي گردش کے سبب سے يہہ صورت پيش آئي هی - اُسکا صدقہ ديجئے * غرض هر کوئي اپنے اپنے عِلم کي باتين کہتا تھا - پر مجھپر جو گذرتي ميرا دل هي سہتا تھا - کِسو کي سعي اور تدبير ميري تقدير بد کے کام نہ آئي - دن بدن ديوانگي کا زور هوا - اور ميرا بدن بے آب و دانہ کے کم زور هو چلا * رات دن چلانا اور سر پيٹنا هي باقي رها * اُس حالت مين تين سال گذرے - چوتھے برس ايک سوداگر سير و سفر کرتا هوا آيا اور هر ايک مُلک کے تحفے تُحائف عجيب و غريب جہان پناہ کے حضور مين لايا - مُلازمت حاصِل کي *

بادشاہ نے بہت توجہ فرمائي اور احوال پرسي اُسکي کر کے پوچھا - کہ تم نے بہت مُلک ديکھے - کہين کوئي حکيم کامِل بھي

سمجھہ سے بولي لہ اي پيارے ! دل تو يہہ چاھتا تھا کہ کوئي دم تيرے ساتھہ بيٹھکر دل بھلاؤں اور اِسي طرح ھميشہ آؤں يا تجھے اپنے ساتھہ ليجاؤں * پر يہہ آسمان دو شخص کو ايک جگھہ آرام اور خوشي سے رھنے نہيں ديتا * لے - جانان ! تيرا خدا نگھبان ھی * يہہ سُنکر ميرے حواس جاتے رھے اور طوطي ھاتھہ کي اُڑگئي * ميں نے کہا کہ اجي اب پھر کب مُلاقات ھوگي ؟ يہہ کيا تم نے غضب کي بات سُنائي ؟ اگر جلد آؤگي تو مجھے جيتا پاؤگي نہيں تو پچتاؤگي - يا اپنا ٹھکانا اور نام و نشان بتاو کہ ميں ھي اُس پتے پر ڈھونڈھتے ڈھونڈھتے اپنے تئيں تمھارے پاس پھنچاؤں * يہہ سنکر بولي - دور پار شيطان کے کان بھرے - تمھاري صد و بيست سال کي عُمر ھووے - اگر زِندگي ھي تو پھر مُلاقات ھو رھيگي * ميں جِنون کے بادشاہ کي بيٹي ھون اور کوہ قاف ميں رھتي ھون * يہہ کہکر تخت اُٹھايا اور جِس طرح اُترا تھا وونہيں بلند ھونے لگا *

جب تلک سامھنے تھا ميري اور اُسکي چار آنکھيں ھو رھيں تھيں * جب نظروں سے غايب ھوا يہہ حالت ھوگئي جيسے پري کا سايہ ھوتا ھی - عجب طرح کي اُداسي دل پر چھا گئي - عقل و ھوش رُخصت ھوا - دُنيا آنکھونکے تلے اندھيري ھو گئي * حيران پريشان زار زار رونا - اور سر پر خاک اُڑانا - کپڑے پھاڑنا - نہ کھانے کي سُدھہ - نہ بھلے بُرے کي بُدھہ *

اِس عِشق کي بدولت کيا کيا خرابياں ھيں
دِل ميں اُداسياں ھيں اور اِضطرابياں ھيں

Digitized by Google

کا نظر پڑا کہ دیکھتے دیکھتے بڑا ہوتا جاتا تھا * میں نے چاہا کہ ہاتھہ سے پکڑ لوں - جوں جوں میں ہاتھہ لنبا کرتا تھا وہ اونچا ہوا جاتا تھا * میں حیران ہوکر اُسے تک رہا تھا * و ونہیں ایک آواز قہقہہ کی میرے کان میں آئی - میں نے اُسکے دیکھنے کو گردن اُٹھائی * دیکھا تو نمدا چیر کر ایک مُکھڑا چاند کا سا نکل رہا ہی - دیکھتے ہی اُسکے میرے عقل و ہوش بجا نرہے - پھر اپنے تئیں سنبھال کر دیکھا تو ایک مُرصّع کا تخت پریزادوں کے کاندھے پر مُعلّق کھڑا ہی اور ایک تخت نشیں تاج جواہر کا سر پر اور خلعت جھلابور بدن میں پہنے ہاتھہ میں یاقوت کا پیالا لئے اور شراب پیئے ہوئے بیٹھی ہی * وہ تخت بلندی سے آہستہ آہستہ نیچے اُتر کر اُس بُرج میں آیا * تب پری نے مجھے بُلایا اور اپنے نزدیک بٹھایا باتیں پیار کی کرنے لگی اور منہہ سے منہہ لگاکر ایک جام شراب گل گلاب کا میرے تئیں پلایا اور کہا - آدمی زاد بیوفا ہوتا ہی لیکن دل ہمارا تجھے چاہتا ہی * ایک دم میں ایسی ایسی انداز و ناز کی باتیں کیں کہ دل محو ہوگیا اور ایسی خوشی حاصل ہوئی کہ زندگانی کا مزا پایا اور یہہ سمجھا کہ آج تو دنیا میں آیا *

حاصل یہہ ہی کہ میں تو کیا ہوں ؟ کسوںنے یہہ عالم نہ دیکھا ہوگا - نہ سنا ہوگا * اُس مزے میں خاطر جمع سے ہمدونوں بیٹھے تھے کہ گُریال میں غُلیلا لگا * اب اِس حادثۂ ناگہانی کا ماجرا سُن - کہ وونہیں چار پریزاد نے آسمان پر سے اُتر کر کچھہ اُس معشوقہ کے کان میں کہا * سُنتے ہی اُسکا چہرا تغیر ہو گیا - اور

Digitized by Google

ایک بڑا خطرہ نظر آتا ہی - بلکہ یہہ وسواس ہی کہ جنونی اور سودائی ہوکر بہت آدمیون کا خون کرے اور بستی سے گھبراوے جنگل مین نکل جاوے اور چرند پرند کے ساتھہ دل بہلاوے * اِسکا تقید رہے کہ رات دن آفتاب ماہتاب کو نہ دیکھے - بلکہ آسمان کی طرف بھی نگاہ نکرنے پاوے * جو اِتنی مُدّت خیر و عافیت سے کٹے - تو پھر ساری عُمر سُکھہ اور چین سے سلطنت کرے *

یہہ سُنکر پادشاہ نے اِسی لئے اِس باغ کی بِنا ڈالی اور مکان مُتعدّد ہر ایک نقشے کے بنوائے * میرے تئین تہخانے مین پلنے کا حُکم کیا اور اوپر ایک برج نمدے کا تیّار کروایا تو دھوپ اور چاندنی اُسمین سے نہ چھنے * مین دائی دودھہ پلائی اور انکا چھوچھو اور کئی خواصون کے ساتھہ اُسی مُحافظت سے اس مکان عالی شان مین پرورش پانے لگا اور ایک اُستاد دانا کار آزمودہ واسطے میری تربیت کے مُتعین کیا - تو تعلیم ہر علم اور ہُنر کی اور مشق ہفت قلم لکھنے کی کرے اور جہان پناہ ہمیشہ میرے خبر گیران رہتے - دم بدم کی کیفیت روز مرّہ حضور مین عرض ہوتی * مین اُس مکان ہی کو عالم دُنیا جان کر کھلونون اور رنگ برنگ کے پھولون سے کھیلا کرتا اور تمام جہان کی نعمتین کھانے کے واسطے موجود رہتین - جو چاہتا سو کھاتا * دس برس کی عمر تک جتنی صنعتین اور قابلیتین تھین تحصیل کین *

ایک روز اُس گنبد کے نیچے روشن دان سے ایک پھول اچنبھے

Digitized by Google

بعد ایک لمحے کے ہوش میں آکر ایک آہ جگر سوز بھری - سارا مکان گونج گیا - تب مجھے یقین ہوا کہ یہہ بھی اسی عشق کی بلا میں گرفتار ہی اور اِسی مرض کا بیمار ہی * تب تو میں نے دل چلاکر کہا کہ میں نے اپنا احوال سب عرض کیا - آپ توجّہ فرما کر اپنی سرگذشت سے بندے کو مُطلع فرمائیے - تو بمقدور اپنے پہلے تمہارے واسطے سعی کروں اور دِل کا مطلب کوشش کر کر ہاتھہ میں لاؤں * القصہ وہ عاشقِ صادق مجھکو اپنا ہمراز اور ہمدرد جان کر اپنا ماجرا اِس صورت سے بیان کرنے لگا - کہ سن اے عزیز ! میں پادشاہ زادہ جگر سوز اِس اِقلیم نیم روز کا ہوں * پادشاہ یعنے قبلہ گاہ نے میرے پیدا ہونے کے بعد نجّومی اور رمّال اور پنڈت جمع کئے اور فرمایا کہ احوال شہزادے کے طالعوں کا دیکھو اور جانچو اور جنم پتری درست کرو اور جو جو کچھہ ہونا ہی حقیقت پل پل گھڑی گھڑی اور پہر پہر اور دِن دِن مہینے مہینے اور برس برس کی مُفصل حضور میں عرض کرو * بموجب حکم پادشاہ کے سب نے مُتّفق ہو اپنے اپنے علم کی روسے ٹھہرایا اور سادھکر التماس کیا - کہ خدا کے فضل سے ایسی نیک ساعت اور سُبھہ لگن میں شہزادے کا تولّد اور جنم ہوا ہی کہ چاہیئے سکندر کی سی بادشاہت کرے اور نوشیروان سا عادِل ہو اور جتنے علم اور ہنر ہیں اُن میں کامِل ہو اور جِس کام کی طرف دِل اُسکا مائِل ہو وہ بخوبی حاصِل ہو * سخاوت و شُجاعت میں ایسا نام پیدا کرے کہ حاتم اور رستم کو لوگ بھول جاویں لیکن چودہ برس تک سورج اور چاند کے دیکھنے سے

Digitized by Google

جوان نے وہ سونٹا جس سے مارتاتھا ہاتھہ سے ڈال دیا اور ایک مکان کا قفل کُنجي سے کھولا اور اندر گیا * پھر وونہیں باہر نکل کر نرگاو کی پیٹھہ پر ہاتھہ پھرا اور مُنہہ چوما - اور دانا گھاس کھلاکر اِدھر کو چلا * میں دیکھتے ہي جلد دوڑ کر پھر کوٹھري میں جا چھپا *

اُس جوان نے زنجیریں سب دروازونکي کھول دیں - سارے غُلام باہر نکلے * زیرانداز اور سلپچی آفتابہ لیکر حاضر ہوئے * وہ وضوکر نماز کي خاطر کھڑا ہوا - جب نماز ادا کر چُکا پُکارا کہ وہ درویش کہاں ہی ؟ اپنا نام سُنتے ہي میں دوڑ کر روبرو جاکھڑا ہوا* فرمایا بیٹھہ - میں تسلیم کر کر بیٹھا * خاصہ آیا - اُس نے تناوُل فرمایا - مجھے بھي عنایت کیا - میں نے بھي کھایا * جب دستر خوان بڑھایا اور ہاتھہ دھوئے غُلامونکو رُخصت دي کہ جاکر سورہو * جب کوئي اُس مکان میں نہ رہا تب مُجھہ سے ہم کلام ہوا اور پوچھا کہ اي عزیز! تُجھہ پر کیا ایسي آفت آئي ہی جو تو اپني موت کو ڈھونڈھتا پھرتا ہی ؟ میں نے اپنا احوال آغاز سے انجام تک جو کُچھہ گُذرا تھا تفصیل وار بیان کیا اور کہا - آپ کي توجّہ سے اُمید ہی کہ اپني مُراد کو پہنچوں * اُس نے یہہ سُنتے ہي ایک ٹھنڈھي سانس بھري اور بیہوش ہوا اور کہنے لگا - ہاے خدایا ! عشق کے درد سے تیرے سِوا کون واقف ہی * جسکي نہ پھٹي ہو بوائي کیا جانے وہ پیر پرائي * اِس درد کي قدر جو دردمند ہو سو جانے *

آفتون کو عشق کي عاشق سے پوچھا چاہیئے
کیا خبر فاسق کو ہی؟ صادق سے پوچھا چاہیئے

Digitized by Google

بناتا ہی - جا اپني راہ لے - کیا جان بھاري پڑي ہی * میں نے اُسکا کہا نہ مانا اور قدم آگے دھرا - پھر اُسنے دیدہ و دانستہ آنا کاني دي اور میں پیچھے لگ لیا * جاتے جاتے دو کوس وہ جھاڑ جنگل طي کیا * ایک چار دیواري نظر آئي * وہ جوان دروازے پر گیا اور ایک نعرۂ مُہیب مارا * وہ در آپ سے آپ کُھل گیا * وہ اندر بیٹھا - میں باہر کا باہر کھڑا رہ گیا * اِلہي اب کیا کروں ! حیران تھا - بارے ایکدم کے بعد غُلام آیا اور پیغام لایا کہ چل تُجھے رو برو بُلایا ہی * شاید تیرے سر پر اجل کا فرشتہ آیا ہی * کیا تُجھے کم بختي لگي تھي ! میں نے کہا زہے نصیب ! اور بیدھڑک اُسکے ساتھہ اندر باغ کے گیا *

آخر ایک مکان میں لے گیا جہاں وہ بیٹھا تھا - میں نے اُسے دیکھر فرّاشي سلام کیا - اُسنے اِشارت بیٹھنے کي کي * میں ادب سے دوزانو بیٹھا - کیا دیکھتا ہوں - کہ وہ مرد اکیلا ایک مسند پر بیٹھا ہی اور ہتیار زرہ گري کے آگے دھرے ہیں اور ایک جھاڑ زُمرّد کا تیّار کرچُکا ہی * جب اُسکے اُٹھنے کا وقت آیا جتنے غُلام اُس شہنشین کے گِرد پیش حاضر تھے حُجروں میں چھپ گئے * میں بھي مارے وسواس کے ایک کوٹھري میں جا گھُسا * وہ جوان اُٹھکر سب مکانوں کي کُنڈیاں چڑھاکر باغ کے کونے کي طرف چلا اور اپني سواري کے بیل کو مارنے لگا * اُس کے چِلّانے کي آواز میرے کان میں آئي - کلیجا کانپنے لگا - لیکن اس ماجرے کے دریافت کرنے کي خاطر یہہ سب آفتیں سہیں تھیں * ڈرتے ڈرتے دروازہ کھول کر ایک درخت کے تنے کي آڑ میں جاکر کھڑا ہوا اور دیکھنے لگا *

کر کر سوار هوا اور چلا * میں نے اُسکا پیچھا کیا اور دوڑتا دھوپتا ساتھہ هولیا * اُس عزیز نے آهٹ سے معلوم کیا کہ کوئي چلا آتا هی * ایک بارگي باگ موڑ کر ایک نعرہ مارا اور گھرکا * تلوار کھینچ کر میرے سر پر آپہنچا - چاهتا تھا کہ حملہ کرے * میں نے نہایت ادب سے نہرکر سلام کیا اور دونوں هاتھہ باندھہ کر کھڑا رہ گیا * وہ قاعدہ داں متکلم هوا کہ ای فقیر ! تو ناحق مارا گیا هوتا پر بچ گیا * تیري حیات کچھہ باقي هی * جا کہاں آتا هی؟ اور جڑاو خنجر موتیوں کا آویزہ لگا هوا کمر سے نکال کر میرے آگے پھینکا اور کہا - اِسوقت میرے پاس کچھہ نقد موجود نہیں جو تجھے دوں - اِسکو پادشاہ پاس لیجا - جو تو مانگیگا ملیگا * ایسي هیبت اور ایسا رُعب اُسکا مجھہ پر غالب هوا کہ نہ بولنے کي قدرت نہ چلنے کي طاقت * منھہ میں گھگي باندھہ گئي - پانوں بھاري هو گئے *

اِتنا کہکر وہ غازي مرد نعرہ بھرتا هوا چلا * میں نے دل میں کہا هرچہ بادا باد - اب رہ جانا تیرے حق میں بُرا هی - پھر ایسا وقت نہ ملیگا * اپني جان سے هاتھہ دهوکر میں بھي روانہ هوا - پھر وہ پھرا اور بڑے غصے سے ڈانٹا اور مقرر اِرادہ میرے قتل کا کیا * میں نے سر جھکا دیا اور سوگند دي کہ ای رستم وقت ایسي هي ایک سیف مار کہ صاف دو ٹکڑے هوجاؤں - ایک تھمہ باقي نرہے - اور اس حیراني اور تباهي سے چھوٹ جاؤں - میں نے خون اپنا معاف کیا * وہ بولا کہ ای شیطان کي صورت ! کیوں اپنا خون ناحق میري گردن پر چڑھاتا هی - اور مجھے گنہگار

Digitized by Google

چاندرات آئي - مجھے گویا عید ہوئي - غُرّے کو پھر پادشاہ خلقت سمیت وونہیں جاکر اِکٹھے ہوئے - تب مین نے دل مین مُصمّم اِرادہ کیا کہ ابکي بار جو ہو سو ہو - اپنے تئین سنبھال کر اِس ماجرائے عجیب کو معلوم کیا چاہئے *

ناگاہ جوان بدستور زرد بیل پر زین باندھے سوار ہو آپہنچا اور اُتر کر دو زانو بیٹھا * ایک ہاتھہ مین ننگي سیف اور ایک ہاتھہ مین بیل کي نانھہ پکڑي - اور مرتبان غُلام کو دیا * غُلام ہر ایک کو دکھا کر لے گیا - آدمي دیکھکر رونے لگے - اُس جوان نے مرتبان پھوڑا - اور غُلام کو ایک تلوار ایسي ماري کہ سر جُدا ہوگیا - اور آپ سوار ہوکر مُڑا * مین اُسکے پیچھے جلد قدم اُٹھا کر چلنے لگا - شہر کے آدمیون نے میرا ہاتھہ پکڑا اور کہا یہہ کیا کرتا ہی - کیون جان بوجھہ کر مرتا ہي ؟ اگر ایسا ہي تیرا دم ناک مین آیا ہی - تو بہتیري طرحین مرنیکي ہین - مر رہیو * ہرچند مین نے مِنّت کي - اور زور بھي کیا کہ کِسو صورت سے اُنکے ہاتھہ سے چھوٹون چھٹکارا نہوا * دو چار آدمي لپٹ گئے اور پکڑے ہوئے بستي کی طرف لے آئے * عجب طرح کا قلق پھر مہینے بھر گذرا *

جب وہ بھي مہینا تمام ہوا اور سلخ کا دن آیا - صُبح کو اُسي صورت سے سارے عالم کا وہان اِزدحام ہوا * مین الگ سب سے نمازکے وقت اُٹھہ کر آگے جنگل مین (جو عین اُس جوان کي راہ پر تھا) گُھس کر چھپ رہا کہ یہان تو کوئي میرا مُزاحم نہوگا * وہ شخص اُسي قاعدے سے آیا - اور وہي حرکتین

دائي نے يہہ بات کہکر کہا کہ اب اگر قصد وہانکے جانے کا اور اُسکي خبر لانے کا دل مين مُقرّر رکھتے ہو - تو جلد روانہ ہو * مين نے کہا اِسي وقت مين جاتا ہون - اور خدا چاہے تو جلد پھر آتا ہون آخر رُخصت ہوکر اور فضل الٰہي پر نظر رکھہ کر اُس سمت کو چلا *

برس دنکے عرصے مين ہرج مرج کھينچتا ہوا شہر نيمروز مين جا پُہنچا * جتنے وہانکے آدمي ہزاري اور بزاري نظر پڑے - سياہ پوش تھے - جيسا احوال سنا تھا اپني آنکھون سے ديکھا * کئي دنونکے بعد چاندرات ہوئي * پہلي تاريخ سارے لوگ اُس شہر کے چھوٹے بڑے لڑکے بالے اُمرا پادشاہ عورت مرد ايک ميدان مين جمع ہوئے * مين بھي اپني حالت مين حيران سرگردان اُس کثرت کے ساتھہ اپنے مال مُلک سے جُدا فقير کي صورت بنا ہوا کھڑا ديکھتا تھا کہ ديکھئے پردۂ غيب سے کيا ظاہر ہوتا ہی * اِتنے مين ايک جوان گاو سوار مُنہہ مين کف بھرے جوش خروش کرتا ہوا جنگل مين سے باہر نکلا * يہہ عاجز جو اِتني محنت کرکے اُسکے احوال دريافت کرنيکي خاطر گيا تھا - ديکھتے ہي اُسے حواس باختہ ہوکر حيران کھڑا رہگيا * وہ جوانمرد قديم قاعدے پر جو جو کام کرتا تھا کرکر پھر گيا اور خلقت شہر کي طرف مُتوجّہ ہوئي * جب مُجھے ہوش آيا تب مين پہچتايا کہ يہہ کيا تُجھہ سے حرکت ہوئي * اب مہينے بھر پھر راہ ديکھني پڑي * لاچار سبکے ساتھہ چلا آيا اور اُس مہينے کو ماہ رمضان کي مانند ايک ايک دِن گِن کر کاٹا * بارے دوسري

Digitized by Google

گذرانے - اور آپ دونون هاتهه باندهے روبرو کهڑی رهین * پادشاه نے بهت مهرباني سے فرمایا که تم کس مُلک کي شهزادي هو - اور یهان کس صورت سے آنا هوا ؟

ملکه نے آداب بجالاکر اِلتماس کیا که یهه لونڈي وهي گُنهگار هی جو غضب سُلطاني کے باعث اِس جنگل مین پُهنچي - اور یهه سب تماشے خدا کے هین جو آپ دیکهتے هین * یهه سُنتے هي پادشاه کے لهو نے جوش مارا - اُٹهه کر محبّت سے گلے لگایا اور هاتهه پکڑ کے اپنے تخت کے پاس کُرسي بچهواکر حُکم بیٹهنے کا کیا * لیکن پادشاه حَیران اور مُتعجّب بیٹهے تهے - فرمایا که پادشاه بیگم کو کهو که پادشاهزادیونکو اپنے ساتهه لیکر جلد آوین * جب وے آئین ما بهنون نے پهچانا - اور گلے ملکر روئین اور شُکر کیا * ملکه نے اپني والده اور چهوٹے همشیرونکے روبرو اِتنا کُچهه نقد اور جواهر رکها که خزانه تمام عالم کا اُسکے پاسنگ مین نه چڑهے پهر پادشاه نے سبکو ساتهه بٹهاکر خاصه نوشجان فرمایا *

جب تلک جهان پناه جیتے رهے - اسي طرح گذري * کبهو کبهو آپ آتے - اور کبهي ملکه کو بهي اپنے ساتهه محلون مین لے جاتے * جب بادشاه نے رحلت فرمائي - سلطنت اس اقلیم کي ملکه کو پُهنچي - که اِنکے سوا دوسرا کوئي لائق اِس کام کے نهتها * ای عزیز ! سرگُذشت یهه هی جو تونے سُني - پس دولت خدا داد کو هرگز زوال نهین هوتا - مگر آدمي کی نیّت دُرست چاهئے بلکه جتني خرچ کرو اُس مین اُتني هي برکت هوتي هی * خداکي قُدرت مین تعجّب کرنا کسي مذهب مین روا نهین *

Digitized by Google

هی * آپ کي ذات که مُشابه آفتاب کے هی - تشریف فرماکر اپنے نور سے اس ذرّۂ بے مقدار کو قدر و منزلت بخشئے اور جو کُچھه اِس عاجزه سے مُیسّر هوسکے نوشجان فرمائے - یهه عین غریب نوازي اور مُسافر پروري هی - زیاده حدِّ ادب * اور اُس عمده کو بهي کچهه تواضع کر کر رخصت کیا *

پادشاه نے عرضي پڑهي اور کهلا بهیجا که همنے تمهاري دعوت قبول کي - البتّه آوینگے * ملکه نے نوکرون اور سب کاربارِیونکو حکم کیا که لوازمه ضِیافت کا ایسے سلیقے سے تیّار هو که پادشاه دیکهکر اور کهاکر بهت محظوظ هون - اور ادنیٰ اعلیٰ جو بادشاه کي رِکاب مین آوین - سب کها پي کر خوش هوکر جاوین * ملکه کے فرما نے اور تاکید کرنے سے سب قسم کے کهانے سلونے اور میٹهے اس ذایقه کے تیّار هوئے که اگر باهمن کي بیٹي کهاتي تو کلمه پڑهتي * جب شام هوئي بادشاه مُنڈے تخت پر سوار هوکر ملکه کے مکان کي طرف تشریف لائے * ملکه اپني خاص خواص سهیلیونکو لیکر اِستقبال کے واسطے چلین * جون هي پادشاه کے تخت پر نظر پڑي - اِس اَدب سے مُجرا شاهانه کیا که یهه قاعده دیکهکر بادشاه کو اور بهي حَیرت نے لیا - اور اُسي انداز سے جلوه کر کر پادشاه کو تخت مُرصّع پر لابٹهایا * ملکه نے سوا لاکهه روپی کا چبوترہ تیّار کروا رکها تها - اور ایک سو ایک کشتي جواهر اور اشرفي اور پشمینه اور نورِبافي اور ریشمي اور طلابافي اور زر دوزي کي لگا رکهي تهي اور دو زنجیر فیل اور دس راس اسپِ عراقي اور یمني مُرصّع کے ساز سے تیّار کر رکهے تهے - نذر

ایک کاغذ پر درست کرکے حضور میں لاویں جو پسند کیا جاوے *
فقیر نے ایسے ہي کارکن کار کردہ ذي هوش لاکر حاضر کئے *
مُوافق فرمانیکے تعمیر عمارت کي هونے لگي - اور نوکر چاکر هر
ایک کارخانجات کي خاطر چن چن کر فهمیدہ اور بادیانت
ملازم هونے لگے * اُس عمارت عالیشان کي تیّاري کي خبر
رفتہ رفتہ پادشاہ ظلّ سبحاني کو (جو قبلہ گاہ ملکہ کے تھے)
پُهنچي سُنکر بہت مُتعجّب هوئے - اور هر ایک سے پوچھا کہ یہہ
کون شخص هی جن نے یہہ محلات بنانے شروع کئے هیں * اُس
کي کیفیت سے کوئي واقف نہ تھا جو عرض کرے - سبھوں نے
کانوں پر هاتھہ رکھے کہ کوئي غلام نہیں جانتا کہ اِس کا باني کون
هی * تب پادشاہ نے ایک امیر کو بھیجا اور پیغام دیا کہ میں
اُن مکانوں کے دیکھنے کو آیا چاهتا هوں - اور یہہ بھي معلوم نہیں
کہ تم کہانکي بادشاهزادي هو اور کس خاندان سے هو * یہہ سب
دریافت کرني اپنے تئیں منظور هی *
جو نہیں ملکہ نے یہہ خوش خبري سُني - دل میں بہت
شاد هوکر عرضي لکھي - کہ جہان پناہ سلامت ! حضور کے
تشریف لانیکي خبر طرف غریب خانے کي سُنکر نہایت خوشي
حاصل هوئي - اور سبب حرمت اور عزت اس کمترین کا هوا *
زہے طالع اُس مکان کے ! کہ جہان قدم مُبارک کا نشان پڑے -
اور وهان کے رهنے والوں پر دامنِ دَولت سایہ کرے - اور نظرِ توجّہ
سے وے دونوں سرفراز هوویں * یہہ لونڈي اُمیدوار هی کہ کل روز
پنجشنبہ روز مُبارک هی - اور میرے نزدیک بہتر روز نو روز سے

Digitized by Google

بے حد دیکھي - تب اُن کے بھي مزاج کو استقلال ہوا * اُس روز سے اُس پیر مرد نے یہہ مُقرّر کیا کہ صُبح کو بھیکھہ مانگنے کے لئے شہر مین نِکل جاتا - جو ٹُکڑا پارچہ پاتا - ملکہ کے پاس لے آتا اور کھلاتا *

اِس طور سے تھوڑے روز گُذرے * ایک دن ملکہ نے تیل سر مین ڈالنے اور کنگھي چوٹي کرنے کا قصد کیا * جونہین مُحباف کھولا - چُٹلے مین سے ایک موتي کا دانہ گول آبدار نکل پڑا * ملکہ نے اُس درویش کو دیا اور کہا - شہر مین سے اِسکو بیچ لاؤ * وہ فقیر اُس گوہر کو بیچ کر اُسکي قیمت پادشاہزادي کے پاس لے آیا * تب ملکہ نے حُکم کیا کہ ایک مکان موافق گذران کے اِس جگہہ بنواؤ * فقیر نے کہا اے بیٹي ! نیو دیوار کي کھودکر تھوڑي سي مِٹّي جمع کرو - ایک دن مین پاني لاکر گارا کرکر گھرکي بنیاد دُرست کرونگا * ملکہ نے اُسکے کہنے سے مِٹّي کھودني شروع کي جب ایک گز عمیق گڑھا کھوداگیا - زمین کے نیچے سے ایک دروازہ نمود ہوا * ملکہ نے اُس در کو صاف کیا - ایک بڑا گھر جواہر اور اشرفیون سے معمور نظر آیا * ملکہ نے پانچ چار لپ اشرفیونکي لیکر پھر بند کیا - اور مِٹّي دیکر اوپر سے ہموار کردیا * اتنے مین فقیر آیا - ملکہ نے فرمایا کہ راج اور مِعمار کاریگر اور اپنے کام کے اُستاد اور مزدور جلددست بلاؤ جو اِس مکان پر ایک عمارت پادشاہانہ کہ طاقِ کِسریٰ کا جُفت ہو - اور قصرِ نُعمان سے سبقت لیجاے - اور شہر پناہ اور قلعہ اور باغ اور باولي اور ایک مُسافر خانہ کہ لاثاني ہو - جلد تیار کرین - لیکن پہلے نقشہ اُن کا

Digitized by Google

جان کو دیت - آجان کو دیت - جہان کو دیت - سو تو کو بھي دی ھی *

سچھی جب کُچھہ بن نہین آتا - تب خدا ھي یاد آتا ھی * نہین تو اپني اپني تدبیر مین ھر ایک لُقمان اور بوعلي سینا ھی * اب خدا کے کارخانے کا تماشا سُنو - اسي طرح تین دن رات صاف گذر گئے کہ ملکہ کے مُنہہ مین ایک کھیل بھي آ کر نہ گئي - وہ پھول سا بدن سوکھہ کر کانٹا ھوگیا - اور وہ رنگ جو کُندن سا دمکتا تھا - ھلدي سا بن گیا - مُنہہ مین پھپھڑي پندھہ گئي - آنکھین پتھرا گئین - مگر ایک دم اٹک رھا تھا کہ وہ آنا جانا تھا * جب تلک سانس تب تلک آس - چوتھے روز صُبح کو ایک درویش خضر کي سي صورت نوراني چہرہ روشن دل آکر پیدا ھوا * ملکہ کو اُس حالت مین دیکھکر بولا ای بیٹي ! اگرچہ تیرا باپ پادشاہ ھی لیکن تیري قسمت مین یہہ بھي بدا تھا * اب اِس فقیر بوڑھے کو اپنا خادم سمجھہ - اور اپنے پیدا کرنیوالے کا رات دن دھیان رکھہ خدا خوب کریگا * اور فقیر کے کچکول مین جو ٹکرے پھیکھہ کے موجود تھے - ملکہ کے روبرو رکھے اور پاني کی تلاش مین پھرنے لگا * دیکھے تو ایک کونوان تو ھی - پرتدول رسي کھان - جس سے پاني بھرے ؟ تھوڑے پتّے درخت سے توڑکر دونا بنایا - اور اپني سیلي کھول کر اُس مین باندھہ کر نکالا - اور ملکہ کو کُچھہ کھلایا پلایا * بارے ٹک ھوش آیا - اُس مرد خدا نے بے کس اور بے بس جان کر بہت سي تسلّي دي - خاطر جمع کي اور آپ بھي رونے لگا * ملکہ نے جب غم خواري اور دلداري اُسکي

Digitized by Google

بموجب حُکم پادشاہ کے اُس آدھي رات مین کہ (عَین اندھیري تھي) ملکہ کو (جو چونرے بھونرے مین پلی تھی اور سواے اپنے محل کے دوسری جگھہ نہ دیکھي تھي) بھوئے لیجاکر ایک میدان مین (کہ وھان پرندہ پر نہ مارتا - اِنسان کا تو کیا ذکر ھی) چھوڑ کر چلے آئے * ملکہ کے دل پر عجب حالت گذرتي تھي کہ ایک دم مین کیا تھا اور کیا ھوگیا ؟ پھر اپنے خدا کي جناب مین شُکر کرتین اور کہتین - تو ایسا ھي بے نیاز ھی جو چاھا سو کیا - اور جو چاھتا ھي سو کرتا ھی - اور جو چاھیگا سو کریگا * جب تلک نتھنون مین دم ھی تجھہ سے ناامید نہین ھوتی * اِسي اندیشے مین آنکھہ لگ گئي * جسوقت صُبح ھونے لگي - ملکہ کي آنکھہ کُھل گئي - پُکارین کہ وضو کو پاني لانا - پھر ایکبارگي رات کي بات چیت یاد آئي کہ تو کہان اور یہہ بات کہان ؟ یہہ کہکر اُٹھکر تیمّم کیا - اور درگاہ شُکر کا پڑھا * ای عزیز ! ملکہ کي اِس حالت کے سُننے سے چھاتي پھٹتي ھی - اُس بھولے بھالے جي سے پوچھا چاھئے کہ کیا کہتا ھوگا *

غرض اُس میانے مین بیٹھي ھوئي خدا سے لَو لگائے رھین تھین - اور یہہ کِبت اُس دم پڑھتي تھین *

جب دانت نہ تھے تب دودھہ دئیو - جب دانت دیئے کہا آن نہ دی ھی *

جو جل مین تھل مین پنچھي پسو کي سُدھہ لیت سو تیری بھي لی ھی *

کاہے کو سوچ کرے - من مورکھہ سوچ کرے کُچھہ ھاتھہ نہ آے ھی *

Digitized by Google

دیکھا اور کہا : کیوں بی بی تم کچھہ نہ بولیں * اسکا کیا باعث ہی ؟ تب ملکہ نے دونوں ہاتھہ اپنے رومال سے باندھکر عرض کی کہ اگر جانکی امان پاؤں اور تقصیر مُعاف ہو تو یہہ لونڈی اپنے دل کی بات گذارش کرے * حُکم ہوا کہ کہہ - کیا کہتی ہی؟ تب ملکہ نے کہا کہ قبلۂ عالم آپ نے سُنا ہی کہ سچّی بات کڑوی لگتی ہی سو اِسوقت میں اپنی زندگی سے ہاتھہ دھوکر عرض کرتی ہوں - اور جو کچھہ میری قسمت میں لکھنے والے نے لکھا ہی اُسکا مٹانے والا کوئی نہیں - کِسو طرح نہیں ٹلنے کا *

خواہ تم پانوں گھسو - یا کہ رکھو سر بہ سجود
بات پیشانی کی جو کچھہ ہی سو پیش آتی ہی

جس بادشاہ علی الاطلاق نے آپ کو بادشاہ بنایا - اُنہیں نے مجھے بھی بادشاہزادی کہلوایا * اُسکی قدرت کے کارخانے میں کسوکا اختیار نہیں چلتا * آپ کی ذات ہماری ولی نعمت اور قبلہ و کعبہ ہی حضرت کے قدم مُبارک کی خاک کو اگر سُرمہ کروں تو بجا ہی - مگر نصیب ہر ایک کے ہر ایک کے ساتھہ ہیں * بادشاہ یہہ سُنکر طیش میں آئے اور یہہ جواب دل پر سخت گران معلوم ہوا - بیزار ہو کر فرمایا - چھوٹا مُنھہ بڑی بات - اب اِسکی یہی سزا ہی کہ گہنا پاتا جو کچھہ اسکے ہاتھہ گلے میں ہی اُتار لو - اور ایک میا نے میں چڑھا کر ایسے جنگل میں جہاں نام و نشان آدمی آدمزاد کا نہو پھینک آو - دیکھیں اِسکے نصیبوں میں کیا لکھا ہی *

دائي يہہ کہکر گئي - اور اُنہين پانون پھر آئي - کہ چلو حضور مين * يہ مُجرّد اُس مکان مين جاتے ہی بھيچک رہگيا نہ معلوم ہوا کہ دروازہ کہان اور ديوار کدھر ہی - اِسواسطے کہ جلبي آئينہ قدِّ آدم چارون طرف لگے - اور اُنکي پردازون مين ہيرے اور موتي جڑے ہوئے تھے * ايک کا عکس ايک مين نظر آتا تو يہہ معلوم ہوتا جواہر کا سارا مکان ہی * ايک طرف پردہ پڑا تھا - اُسکے پيچھے ملکہ بيٹھي تھين * وہ دائي پردے سے لگ کر بيٹھي اور مجھے بھي بيٹھنے کو کہا - تب دائي ملکہ کے فرمانے سے اس طور بيان کرنے لگي * کہ سُن اے جوان دانا ! سُلطان اِس اقليم کا بڑا بادشاہ تھا - اُسکے گھر مين سات بيٹياں پيدا ہوئين * ايک روز بادشاہ نے جشن فرمايا - بے ساتون لڑکياں سولہ سنگار بارہ ابھرن بال بال گچ موتي پرو کر بادشاہ کے حضور کھڑي تھين * سُلطان کے کچھہ جي مين آيا - تو بيٹيونکي طرف ديکھکر فرمايا - اگر تمہارا باپ بادشاہ نہوتا اور کسي غريب کے گھر تم پيدا ہوتين تو تمہين بادشاہزادي اور ملکہ کون کہتا ؟ خدا کا شُکر کرو کہ شاہزاديان کہلاتي ہو * تمہاري يہہ ساري خوبي ميرے دم سے ہی *

چھہ لڑکياں ايک زبان ہوکر بولين کہ جہان پناہ جو فرماتے ہين بجا ہی اور آپ ہی کي سلامتي سے ہمارے بھائي ہی * ليکن يہہ ملکۂ جہان سب بہنون سے چھوٹي تھين پر عقل و شعور مين اُس عمر مين بھي گويا سب سے بڑي تھين - چپکي کھڑي رہين - اس گفتگو مين بہنونکي شريک نہوئين - اسواسطے کہ يہہ کلمہ کُفر کا ہی * بادشاہ نے نظرِ غضب سے اُنکي طرف

Digitized by Google

جس وقت میرے سامھنے کھولے - بوباس سے دماغ مُعطّر ھوا اور روح بھر گئي * جتنا کھا سکا کھا لیا - باقي اُن سبھونکو اُٹھا دیا اور شُکرِ نعمت کہہ بھجایا * پارے جب آفتاب تمامِ دنکا مُسافر تھکا ھوا گرتا پڑتا اپنے محل میں داخل ھوا اور ماھتاب دیوان خانے میں اپنے مصاحبوں کو ساتھہ لیکر نکل بَیٹھا - اُس وقت دائي آئي - اور مجھسے کھنے لگي کہ چلو پادشاھزادي نے یاد فرمایا ھی * میں اُسکے ھمراہ ھولیا - خلوت خاص میں لے گئي - روشني کا یہہ عالم تھا کہ شب قدر کو وھاں قدر نہ تھي - اور پادشاھي فرش پر مسند مُغرّق بچھي - مرصع کا تکیہ لگا ھوا اور اُسپر ایک شامیانہ موتیونکي جھالر کا جراو اِستادون پر کھڑا ھوا - سامھنے مسند کے جواھر کے درخت پھول پات لگے ھوئے (گویا عین قُدرتي ھین) سونے کي کیاریون میں جمے ھوئے - اور دونون طرف دستِ راست اور دستِ چپ شاگرد پیشے اور سجرائي دست بستہ با ادب آنکھین نیچے کئے ھوئے حاضر تھے - اور طوائف اور گائنین سارونکے سر بنائے مُنتظر * یہہ سماں اور یہہ تیّاري کرّو فر کي دیکھکر عقل تھکا نے نہ رھي * دائي سے پوچھا کہ دن کو وہ زیبایش اور رات کو یہہ آرایش کہ دن عید اور رات شب برات کہا چاھئے - بلکہ دُنیا میں بادشاہِ ھفت اقلیم کو یہہ عَیش مُیسّر نہوگا - ھمیشہ یہي صورت رھتي ھی ؟ دائي کہنے لگي کہ ھماري ملکہ کا جتنا کارخانہ تُمنے دیکھا - یہہ سب اسي دستور سے جاري ھی - اِس میں ھرگز خلل نہیں بلکہ افزون ھی * تُم یہاں بیٹھو - ملکہ دوسرے مکان میں تشریف رکھتي ھیں - جاکر خبر کرون *

Digitized by Google

لیجاؤ - نہیں تو ایک کوٹھری میں بند کر کر اپنے مُہر کرو جب تمہاری خوشی ہوگی پھرتے ہوئے لیئے جائیو * میں نے یونہیں کیا - پر یہہ حیرت ہی کہ جب مجھہ سے فقیر تن تنہا سے یہہ سلوک ہوا - تو ایسے غریب ہزاروں تمہارے مُلکوں میں آتے جاتے ہونگے - پس اگر ہر ایک سے یہی مہمانداری کا طور رہتا ہوگا - تو مبلغ بے حساب خرچ ہوتے ہونگے * پس اِتنی دولت کہ جس کا یہہ صرف ہی کہانسے آئی اور کیسی ہی؟ اگر گنج قارون ہو تو بھی وفا نکرے - اور ظاہر میں اگر ملکہ کی سلطنت پر نگاہ کیجئے تو اُسکی آمد فقط باورچی خانے کے خرچ کو بھی کفایت نہ کرتی ہوگی - اور خرچوں کا تو کیا ذکر ہی * اگر اِسکا بیان ملکہ کی زبان سے سنوں تو خاطرجمع ہو قصد مُلکہ نیمروز کا کروں - اور جوں توں وہاں جا پہنچوں - پھر سبب احوال دریافت کر کے ملکہ کی خدمت میں بشرط زندگی بارِ دیگر حاضر ہوں - اپنے دل کی مراد پاؤں *

یہہ سُنکر ملکہ نے اپنی زبان سے کہا کہ ای جَوان ! اگر تجھے آرزو کمال ہی کہ یہہ ماہیت دریافت کرے تو آج کے دن بھی مقام کر - شام کو تجھے حضور میں طلب کر کر جو کچھہ احوال اِس دولتِ بے زوال کا ہی بے کم و کاست کہا جائیگا * میں یہہ تسلی پاکر اپنی اِستقامت کے مکان پر آکر مُنتظر تھا کہ کب شام ہو جو میرا مطلب تمام ہو * اِتنے میں خواجہ سرا کئی چوگوشے تورہ پوش پڑے بھویونکے سر پر دھرے آکر موجود ہوا اور بولا کہ حضور سے آلش خاص عنایت ہوا ہی - اِسکو تناول کرو *

Digitized by Google

چاہے کہ اگے جاؤن * ایک طرف چلّون پڑي تھي اور مونڈھا جڑاو بچھوا رکھا تھا - اور ایک چوکي بھي صندل کي بچھي تھي * دائي نے مجھے بیٹھنے کي اِشارت کي * مین مونڈھے پر بیٹھہ گیا اور وہ چوکي پر - کہنے لگي - لو اب جو کہنا ھی سو جي بھر کر کہو *

مین نے ملکہ کي خوبیون کي اور عدل و انصاف داد دھش کي پہلے تعریف کي - پھر کہنے لگا - جب سے مین اِس مُلک کي سرحد مین آیا - ھر ایک منزل مین یہي دیکھا کہ جابجا مُسافر خانے اور عمارتین عالي بني ھوئي ھین - اور آدمي ھر ایک عہدے کے تعینات ھین کہ خبر گیري مُسافرون اور محتاجون کي کرتے ھین - مجھے بھي تین تین دن ھر ایک مقام مین گذرے * چوتھے روز جب رُخصت ھونے لگا تب بھي کسو نے خرشي سے نہ کہا کہ جاؤ - اور جتنا اسباب اُس مکان مین تھا - شطرنجي - چاندني - قالینین - سیتلپاٹي - مینگل کوٹي و دیوار گیري - چھت پڑے - چاونین - سائبان - نمگیرے - چھپرکھٹ معہ غلاف - اوڑھنے - توشک - بالاپوش - سیج بند - چادر - تکیئے - تکیئي - گل تکیئے - مسند - گاوتکیئے - دیگ - دیگچے - پتیلے - طباق - رکابي - بادیئے - تشتري - چمچے - پکاولي - کفگیر - طعام بخش - سرپوش - سیني - جوان پوش - توڑہ پوش - آب خورے - بجھوے - صُراحي - لگن - پاندان - چرگٹرے - چنگیر - گلاب پاش - عود سوز - آتشدہ - چلمچي - سب میرے حوالے کیئے - کہ یہہ تمہارا مال ھی - چاھو اب

یہہ ماجرا تُم نے سب سُنا * اپنے دل میں غَور کرو اگر تم اُس جوان کی خبر لا سکو تو قصد مُلک نیمروز کا کرو اور جلد روانہ ہو - نہیں تو اِنکار کر کر اپنے گھر کی راہ لو * میں نے جواب دیا کہ اگر خدا چاہے تو جلد اُس کا احوال سر سے پانوں تک دریافت کر کر پادشاھزادی کے پاس آپہنچتا ہوں اور کامیاب ہوتا ہوں اور جو میری قسمت بد ہی تو اِس کا کچھہ علاج نہیں - لیکن ملکہ اسکا قول قرار کریں کہ اپنے کہنے سے نہ پھریں - اور بالفعل ایک اندیشۂ مُشکل میرے دل میں خلش کر رہا ہی - اگر ملکہ غریب نوازی اور مُسافر پروری سے حُضور میں بُلاویں اور پردے کے باہر بٹھلاویں اور میرا اِلتماس اپنے کانوں سُنیں اور اُسکا جواب اپنی زبان سے فرماویں - تو میری خاطر جمع ہو اور مجھہ سے سب کچھہ ہو سکے * یہہ میرے مطلب کی بات اُس ماما نے رو برو اُس پری پیکر کے عرض کی - بارے قدر دانی کی راہ سے حُکم کیا کہ اُنہیں بُلالو *

دائی پھر باہر آئی اور مجھکو اپنے ساتھہ جس محل میں پادشاھزادی تھی لیگئی * کیا دیکھتا ہوں کہ دو رویہ صف باندھے دست بستہ سہیلیاں اور خواصیں اور آراستہ پیراستہ قلماقنیاں تُرکنیاں حبشنیاں اُزبکنیاں کشمیرنیاں جواہر میں جڑی عہدے لئے کھڑی ہیں * اِندر کا اکھاڑا کہوں یا پریوں کا اُتارا ؟ بے اختیار ایک آہ بے خودی سے زبان تلک آئی - اور کلیجہ تھلکنے لگا پر بزور اپنے تئیں تھامیا * اُنکو دیکھتا بھالتا اور سیر کرتا ہوا آگے چلا - لیکن پانوں سو سو من کے ہوگئے * جسکو دیکھوں پھر یہہ نہ جیہ

برس کا سن و سال غُل اور شور کرتا هوا اور کف مُنهه سے جاري -
زرد بیل کي سواري - ایک هاتهه مین کچهه لئے مُقابل خلق الله
کے آیا اور اپنے بَیل پر سے اُترا - ایک هاتهه مین ناتهه اور ایک
هاتهه مین ننگي تلوار لیکر دوزانو بیٹها * ایک گل اندام بري چهره
اُسکے همراه تها - اُسکو اُس جَوان نے وه چیز جو هاتهه مین تهي
دي * وه یقیم لیکر ایک سرے سے هر ایک کو دکهاتا جاتا تها -
لیکن یهه حالت تهي که جو کوئي دیکهتا تها بے اختیار دارهه
مارکر روتا تها * اِسي طرح سبکو دکهاتا اور رُلاتا هوا سبکے سامهنے سے
هوکر اپنے خاوند کے پاس پهر گیا *

اُسکے جاتے هی وه جوان آٹها اور اُس غلام کا سر شمشیر سے
کاٹ کر اور سوار هوکر جدهر سے آیا تها اُودهر کو چلا * سب کهڑے
دیکها کئے - جب نظرون سے غایب هوا لوگ شهر کي طرف
پهرے * مین هر ایک سے اِس ماجرے کي حقیقت پوچهتا
تها - بلکه روپیونکا لالچ دیتا اور خوشامد مِنّت کرتا که مجهے ذرا
بتادو که یهه جوان کون هی ؟ اور اِسنے یهه کیا حرکت کي - اور
کهان سے آیا - اور کهان گیا ؟ هرگز کسي نے نه بتلایا اور نه کچهه
میرے خیال مین آیا * یهه تعجب دیکهکر جب مین یهان آیا اور
ملکه کے روبرو اظهار کیا تب سے پادشاهزادي بهي حیران هورهي
هی اور اُسکي تحقیق کرنے کي خاطر دو دلي هورهي هی *
لهذا مهر اپنا یهي مُقرّر کیا هی - که جو شخص اُس عجوبے کي
کما حقّهٗ خبر لاوے - اُسکو پسند فرماوے اور وهي مالک سارے
مال مُلک کا اور ملکه کا هووے *

Digitized by Google

کي کمر مين لٹکين هوئين * سلام عليک کر کر ميرے پاس آکر
بيٹھا * وهي دائي کهنے لگي که بهروز ! تونے جو کچهه ديکها
هي مفصّل اسکا بيان کر * 17 -

بهروز نے يهه داستان کهنے شروع کي اور مجهه سے مخاطب
هو کر بولا - اي عزيز ! هماري بادشاهزادي کي سرکار مين هزارون
غلام هين که سوداگري کے کام مين متعيّن هين - اُن مين سے ايک
مين بهي ادني خانه زاد هون * هر ايک مُلک کي طرف لاکهون
روپيي کا اسباب اور جنس ديکر رخصت فرماتي هين - جب وه
وهان سے پهر آتا هي تب اُس سے اُس ديس کا احوال اپنے
حضور مين پوچهتي هين اور سُنتي هين * ايکبار يهه اتفاق هوا
که يهه کمترين تجارت کي خاطر چلا اور شهر نيمروز مين پهنچا -
وهان کے باشندونکو ديکها تو سب کا لباس سياه هي - * اور هر دم
ناله و آه هي - ايسا معلوم هوتا تها که اُنپر کچهه بڑي مصيبت
پڑي هي * اِسکا سبب جس سے مين پوچهتا کوئي جواب ميرا
نه ديتا * اِسي حيرت مين کئي روز گذرے * ايکدن جونهين
صبح هوئي تمام آدمي چهوٹے بڑے لڑکے بوڑهے غريب غني
شهر کے باهر چلے * ايک ميدان مين جاکر جمع هوئے - اور اُس
مُلک کا پادشاه بهي سب اميرون کو ساتهه ليکر سوار هوا اور
وهان گيا - تب سب برابر قطار باندهکر کهڑے هوئے *

مين بهي اُنکے درميان کهڑا تماشا ديکهتا تها - پر يهه معلوم
هوتا تها که وے سب کسوکا انتظار کهينچ رهے هين - ايک گهڑي
کے عرصے مين دور سے ايک جوان پرهزاد صاحب جمال پندره سوله

Digitized by Google

ایک ساعت کے بعد بولي کہ ای جوان ! پادشاهزادي نے سلام کہا هی اور فرمایا هی کہ مجھکو خاوند کرنے سے عیب نہین - تم نے میري درخواست کي - لیکن اپني پادشاهت کا بیان کرنا اور اِس فقیري مین اپنے تئین پادشاہ سمجھنا اور اُسکا غرور کرنا نپٹ بیجا هی - اِسواسطے کہ سب آدمي آپس مین فی الحقیقت ایک هین لیکن فضیلت دین اسلام کي البتہ هی * اور مین بھي ایک مُدت سے شادي کرنیکي آرزو مند هون اور جیسے تم دولت دنیا سے بے پروا هو - میرے تئین بھي حق تعالی نے اِتنا مال دیا هی کہ جسکا کچھہ حساب نہین * پر ایک شرط هی کہ پہلے مہر ادا کرلو - اور مہر شاهزادي کا ایک بات هی جو تم سے هوسکے * مین نے کہا - مین سب طرح حاظر هون - جان و مال سے دریغ نہین کرنیکا - وہ بات کیا هی ؟ کہو تو مین سنو * تب اُسنے کہا - آج کے دن رہ جاؤ - کل تمھین کہہ دونگي * مین نے خوشي سے قبول کیا اور رخصت هوکر باهر آیا * -

دن تو گذرا - جب شام هوئي مجھے ایک خواجہ سرا محل مین بلا کر لے گیا * جاکر دیکھا تو اکابر عالم اور فاضل صاحب شرع حاضر هین - مین بھي اُسي جلسے مین جاکر بیٹھا کہ اِتنے مین دستر خوان بچھایا گیا - اور کھانے اقسام اقسام کے شیرین اور نمکین چنے گئے * وے سب کھانے لگے - اور مجھے بھي تواضع کرکر شریک کیا * جب کھانے سے فراغت هوئی ایک دائي اندر سے آئي اور بولي کہ بہروز کہان هی ؟ اُسے بلاؤ * یساول نے وهین حاضر کیا * اُسکي صورت بہت مرد آدمي کي سي اور بہت سي کنجیان روپے سونے

Digitized by Google

خبر گیري هوهی - جیسے خوبیان اور نیکامیان ملکه کي سنکر
اِشتیاق دیکھنے کا هوا تها اُس سے چار چند پایا * اب حضور کے
ارکان دولت یون کہتے هین - که جو مطلب اور تمنّا تیري هو سو
ظاهر کر - اِسواسطے بے حجابانه جو دل کی آرزو هی سو عرض
کرتا هون - که مین دنیاکے مال کا محتاج نهین اپنے مُلک کا مین
بهي پادشاه هون - فقط یهان تک آنا اور محنت اُٹهانا آپکے اِشتیاق
کے سبب سے هوا جو تن تنها اِس صورت سے آپهنچا هون - اب ۱۹
اُمید هی که حضور کي توجه سے یهه خاک نشین مطلب دلي
کو پهنچے تو لایق هی - آگے جو مرضي مُبارک * لیکن اگر یهه
اِلتماس خاکسار کا قبول نه هوگا - تو اِسي طرح خاک چهانتا
پهریگا اور اِس جان بیقرار کو آپکے عشق مین نثار کریگا * مجنون
اور فرهاد کي مانند جنگل مین یا پهاڑ پر مر رهیگا *

یهي مُدعا لکهه کر اُس خوجے کو دیا - اُسنے پادشاه زادي تلک
پهنچایا * بعد ایک دم کے پهر آیا اور میرے تئین بلایا اور اپنے
ساتهه محل کي ڈیوڑهي پر لے گیا * و هان جاکر دیکها تو ایک
بوڑهي سي عورت صاحب لیاقت سنهري کرسي پر گهنا پاتا پهنے
هوئے بیٹهي هی - اور کئي خوجے خدمتگار تکلف کے لباس پهنے
هوئے هاتهه باندهے سامهنے کهڑے هین * مین اُسے مختار کار جانکر
اور دیرینه سمجهکر دست بسر هوا * اُس ماما نے بهت مهرباني
سے سلام کیا اور حکم کیا که آو بیٹهو خوب هوا جو تم آئے * تمهین
نے ملکه کے اِشتیاق کا رقعه لکها تها ؟ مین شرم کهاکر چپ هورها
اور سر نیچا کرکے بیٹها *

Digitized by Google

مین یے باتین سنکر حیران هوا - اور چاها که کسي نه کسي طرح یهان سے رخصت هوکر بهاگون * میرے بشرے کو دیکهکر وه محلي بولا - ای خدا کے بندے ! جوتیرا مطلب یا آرزو هوسومجهه سے کهه - تو حضور مین ملکه کے جاکر عرض کرون * مین نے کها - مین فقیري کے لباس مین دنیا کا مال کیا مانگون که تم بغیر مانگے دیتے هو اور مین اِنکار کرتا هون ؟ تب وه کهنے لگا که حرص دنیا کي کسي کے جي سے نهین گئي - چنانچه کسو کب نے یهه کبت کها هی *

نکهه بن کنّا دیکهے - سیس بهاري جنّا دیکهے - جوگي کن پهٹّا دیکهے - چهار لائے تن مین *

موني انبول دیکهے - سیورا سر چهول دیکهے - کرت کلول دیکهے - بن کهنڈي بن مین *

بیر دیکهے سوردیکهے - سب گنی اورکوڑهه دیکهے - مایا کے بهرپور دیکهے - بهول رهے دهن مین *

آدانت سُکهي دیکهے - جنم هي کے دُکهي دیکهے - پروے ندیکهے - جن کے نانهین اوبهه من مین *

مین نے یهه سنکر جواب دیا که یهه سچ هی پر مین کچهه نهین چاهتا - اگر فرماؤ تو ایک رقعه سربه مهر اپنے مطلب کا لکهه کر دون - جو حضور ملکه کے پهنچا دو تو بڑي مهر باني هی گویا تمام دنیا کا مال مجهکو دیا - بولا به سر و چشم کیا مُضایقه * مین نے ایک رقعه لکها - پهلے شکر خدا کا - پهراحوال - که یهه بنده خدا کا کئي روزسے اِس شهرمین وارد هی - اور سرکارسے سب طرح کي

ایسي هی بے پروائي هي تو اِن سبکو ایک کوٹهري مین امانت بند کرکر دروازے کو سربہ مہر کردو - پهر جو چاهو سوکیجو *

مین نہ قبول کرتا تها - اور وہ بهي نہ مانتا تها - لاچار یهي صلاح ٹهہري کہ سب اسباب کو بند کرکر قفل کردیا - اور مُنتظر رخصت کا هوا * اتنے مین ایک خواجہ سرا معتبر هر پر سرپیچ اور گوش پیچ اور کمر مین بندي باندهے - ایک عصا سونیکا جڑاؤ هاتهہ مین اور ساتهہ اُسکے کیئي خدمتگار معقول عهدے لئے هوئے اِس شان و شوکت سے میرے نزدیک آیا * ایسي ایسي مہربانگي اور ملایمت سے گفتگو کرنے لگا کہ جسکا بیان نہین کرسکتا - پهر بولا کہ ای میان ! اگر توجہ اور کرم کرکر اس مشتاق کے غریب خانے کو اپنے قدم کي برکت سے رونق بخشو - تو بندہ نوازي اور غریب پروري سے بعید نہین * شاید شہزادي سنے کہ کوئي مسافر یہان آیا تها - اُسکي تواضع مدارات کسونے نکي - وہ یونہین چلاگیا - اسواسطے اللہ اعلم مجهہ پر کیا آفت لاوے اور کیسي قیامت اُٹهاوے بلکہ حرف زندگي بر هی *

مین نے اِن باتون کو نہ مانا - تب خواہ نخواہ مفتین کرکے میرے تئین اور ایک حویلي مین (کہ پہلے مکان سے بہتر تهي) لے گیا - اُسنے پہلے میزبان کي مانند تین دن رات دونو وقت ویسے هي کهانے اور صبح اور تیسرے پہر شربت اور تفنّن کي خاطر میوے کهلائے اور باسن نقرئي و طلائي اور فرش فروش اور اسباب جو کچهہ وهان تها مجهسے کہنے لگا کہ ان سب کے تم مالک مختار هو - جو چاهو سو کرو *

Digitized by Google

سیچ سے بھي نرم تھے) جاکر لیتا * دونو پتیونکي طرف گلدان اور چنگیریں پھولونکي چني هوئیں - اور عودسوز اور لخلخے روشن تھے * جدهر کي کروٹ لیتا دماغ مُعطر هوجاتا * اس عالم میں سورها * جب صبح هوئي ناشتے کو بھي بادام - پستے - انگور - انجیر - ناشپاتي - انار - کشمش - چھهارے اور میوے کا شربت لا حاضر کیا * اسیطور سے تین دن رات رها - چوتھے روز میں نے رخصت مانگي * هاتھہ جوڑکر کهنے لگا شاید اِس گنهگارسے صاحب کي خدمتگاري میں کچھہ قصور هوا - که جسکے باعث مزاج تمهارا مُکدر هو ! میں نے حیران هوکر کها - برائے خدا یهہ کیا مذکور هی ؟ لیکن مهماني کي شرط تین دن تلك هی - سو میں رها زیادہ رهنا خوب نهیں - اور علاوہ یهہ فقیر واسطے سیر کے نکلا هی - اگر ایك هي جگهہ رہ جاوے تو مُناسب نهیں - اِسلئے اِجازت چاهتا هی - نهیں تو تمهاري خوبیاں ایسي نهیں که جدا هونے کو جي چاهے *

تب وہ بولا جیسي مرضي - لیکن ایك ساعت توقف کیجئے که بادشاہ زادي کے حضور میں جاکر عرض کروں - اور تم جو جایا چاهتے هو تو جو کچھہ اسباب اوڑهنے بچھانے کا اور کهانے کے باسن روپے سونے کے اور جواہر کے اِس مهمان خانے میں هیں یهہ سب تمهارا مال هی - اِسکے ساتھہ لیجانیکي خاطر جو فرماوے تدبیر کي جاوے *

میں نے کها - لاحول پڑهو - هم فقیر نه هوئے بهات هوئے - اگر یهي حرص دل میں هوتي تو فقیر کاهےکو هوتے - دنیا داري کیا بري تهي ؟ اُس عزیز نے کها اگر یهہ احوال ملکه سنے تو خدا جانے مجھے اِس خدمت سے تغیر کرکر کیا سلوک کرے - اگر تمهیں

اچارڈان - دھي کي قلفيان - يے نعمتين ديھکر روح بھر گئي - جب ايك ايك نوالا ھر ايك سے ليا پيٹ بھي بھر گيا تب ھاتھہ کھانے سے کھينچا *

وہ شخص مُجوّز ھوا کہ صاحب نے کيا کھايا ؟ کھانا تو سب امانت دھرا ھی - يے تکلف اور نوشجان فرمائے * مين نے کہا کھانے مين شرم کيا ھی ؟ خدا تمھارا خانہ آباد رکھے - جو کچھہ ميرے پيٹ مين سمايا سو مين نے کھايا - اور ذايقے کي اُسکے کيا تعريف کرون ! کہ اب تک زبان چاٹتا ھون - اور جو ذکار آتي ھی سو معطر - لو اب مزيد کرو * جب دستر خوان اُٹھا - زير انداز کاشاني مخمل کا مُقّيشي بچھاکر چلمچي آفتابہ طلائي لاکر بيسن دان مين سے خوشبو بيسن ديکر گرم پاني سے ميرے ھاتھہ دھلائے * پھر پاندان جڑاو مين گلوريان سونيکے پکھروٹون مين بندھي ھوئين اور چوگھڑون مين کِھلوريان اور چکني سپاريان اور لونگ الاچيان روپے کے ورقون مين مڑھي ھوئين لاکر رکھين * جب مين پاني پينے کو مانگتا تب صراحي برف مين لگي ھوئي آبدار لےآتا * جب شام ھوئي فانوسون مين کافوري شمعين روشن ھوئين * وہ عزيز بيٹھا ھوا باتين کرتا رھا * جب پھر رات گئي - بولا اب اِس چھپرکھٹ مين (کہ جسکے آگے دلدا پيش گير کھڑا ھی) آرام کيجئے * فقير نے کہا اي صاحب ! ھم فقيرون کو ايك بوريا يا مرگ چھالا بستر کے لئے بہت ھی - يہہ خدا نے تم دنيا دارون کے واسطے بنايا ھی *

کہنے لگا - يہہ سب اسباب درويشون کي خاطر ھی - کچھہ ميرا مال نہين * اُسکے بجد ھونے سے اُن بچھوانون پر (کہ پھولون کي

Digitized by Google

کي - آخر بصرے مين داخل هوا * وهين ايك جوان شكيل خوش لباس نيك خو صاحب مروت (كه دانائي اُسكے قيافے سے ظاهر تهي) ميرے پاس آيا اور نهايت شيرين زباني سے كهنے لگا - كه مين فقيرون كا خادم هون - هميشه اِسي تلاش مين رهتا هون كه جو كوئي مُسافر فقير يا دنيادار اِس شهر مين آوے ميرے گهر مين قدم رنجه فرماوے * سواے ايك مكان كے يهان اور بديسي كے رهنے كي جگهه نهين هي * آپ تشريف لے چلئے اور اُس مقام كو زينت بخشئے اور مجهے سرفراز كيجئے *

فقير نے پوچها - صاحب كا اسم شريف كيا هي * بولا اِس گمنام كا نام بيدار بخت كهتے هين * اُسكي خوبي اور تملق ديكهه كر يهه عاجز اُسكے ساتهه چلا - اور اُسكے مكان مين گيا * ديكها تو ايك عمارت عاليشان لوازم شاهانه سے تيار هي * ايك دالان مين اُسنے ليجاكر بٹهايا اور گرم پاني منگواكر هاتهه پاؤن دهلوائے * اور دسترخوان بچهواكر مجهه تن تنها كے روبرو بكاول نے ايك توڑے كا توڑا چن ديا * چار مشقاب ايك مين يخني پلاؤ دوسرے مين قورما پلاؤ تيسرے مين مُتنجن پلاؤ چوتهے مين كوكو پلاؤ - اور ايك قاب زردے كي اور كئي طرح كے قليے - دوپيازه - نرگسي - بادامي روغن جوش اور روٹيان كئي قسم كي - باقرخاني - تنكي - شيرمال - گاوديده - گاوزبان - نان نعمت - پراٹهے اور كباب كوفتے كے تكے كے - مُرغ كے خاگينه - ملغوبه - شبديگ - دم بخت - حليم - هريسه - سموسے - ورقي - قبولي - فرني - شيربرنج - ملائي - حلوا - فالوده - پن بهتا - فمش - آبشوره - ساق عروس - لوزيات - مُربا -

Digitized by Google

کرتے * یہہ سنکر میں نے بہت منت کي - اور قسمیں دیں
کہ میري تقصیر مُعاف کرو اور جو چاھئے سو لو * میرا دیا ھرگز
نہ لیا - اور یہہ بات کہتا ھوا چلا - اب اگر اپني ساري پادشاھت
مجھے دے تو اُسپر بھي نہ تھوکوں * یہہ کہکر وہ تو چلا گیا - پر
بصرے کي پادشاھزادي کي یہہ تعریف سُنّے سے دل بیکل ھوا
کسیطرح کل نہ تھي * اب یہہ آرزو ھوئي کہ کسي صورت سے
بصرے چلکر اُسکو دیکھا چاھئے *

اِس عرصے میں پادشاہ نے وفات پائي - اور تخت پر میں بیٹھا -
سلطنت ملي پر وہ خیال نہ گیا - وزیر اور امیروں سے (جو پاے
تخت سلطنت کے اور ارکان مملکت کے تھے) مشورت کي کہ سفر
بصرے کا کیا چاھتا ھوں * تم اپنے کام میں مُستعد رھو - اگر زندگي
ھي تو سفر کي عمر کوتاہ ھوتي ھی - جلد پھر آتا ھوں * کوئي
میرے جانے پر راضي نہ ھوا - لاچار دل تو اُوداس ھورھا تھا *
ایک دن بغیر سب کے کہے سُنے چپکے وزیر باتدبیر کو بلا کر مختار
اور وکیل مطلق اپنا کیا - اور سلطنت کا مدارالمھام بنایا * پھر
میں نے گیروا بستر پہن فقیري بھیس کر - اکیلے راہ بصرے کي
لي * تھوڑے دنوں میں اُسکي سرحد میں جا پہنچا * تب سے
یہہ تماشا دیکھنے لگا - کہ جہاں رات کو جاکر مقام کرتا - نوکر جاکر
اُسي ملکہ کے اِستقبال کر کر ایک مکان معقول میں اُتارتے - اور
جتنا لوازمہ ضیافت کا ھوتا ھی بخوبي موجود کرتے - اور خدمت
میں دست بستہ تمام رات حاضر رھتے * دوسرے دن دوسری منزل
میں یہي صورت پیش آتي * اِس آرام سے مہینوں کي راہ طی

Digitized by Google

لیجائیو * یہہ خیرات اِحتیاج رفع کرنیکے واسطے ہی - نہ جمع کرنیکے لئے - ای حریص ! چالیس دروازون سے تونے ایک اشرفي سے چالیس اشرفیون تک لین - اُسکا حساب توکر کہ ریوڑي کے پھیرکي طرح کتني اشرفیان ہوئین - اور اِس پر بھي تجھے حرص پھر پہلے دروازے سے لے آئي * اِتنا مال جمع کرکر کیا کریگا ؟ فقیر کو چاہئے کہ ایک روز کي فکر کرے * دوسرے دن پھر نئي روزي رزاق دینے والا موجود ہی * اب حیا و شرم پکڑ - اور صبر و قناعت کو کام فرما * یہہ کیسي فقیري ہی جو تجھے مُرشد نے بتائي ہی ؟

یہہ میري بات سنکر خفا اور بد دماغ ہوا - اور جتنا مجھسے لیکر جمع کیا تھا سب زمین مین ڈال دیا اور بولا - بس بابا ! اتنے گرم مت ہو * اپني کائنات لیکر رکھہ چھوڑو - پھر سخاوت کا نام نہ لیجیو * سخي ہونا بہت مُشکل ہی * تم سخاوت کا بوجھہ نہین اُٹھا سکتے * اُس منزل کو کب پہنچوگے ؟ ابھي دِلّي دور ہي - سخي کے بھي تین حرف ہین پہلے اُن پر عمل کرو تب سخي کہلاؤ - تب تو مین ڈرا اور کہا - بھلا داتا ! اِسکے معنے مجھے سمجھاؤ * کہنے لگا - س سے سمائي - اور خ سے خوف اِلہي - اور ي سے یاد رکھنا اپني پیدایش اور مرنے کو * جب تلک اِتنا نہولے تو سخاوت کا نام نہ لے - اور سخي کا یہہ درجہ ہی کہ اگر بدکار ہو تو بھي دوست خدا کا ہی - اِس فقیر نے بہت مُلکون کي سیر کي ہی لیکن سواے بصرے کي پادشاھزادي کے کوئي سخي دیکھنے مین نہ آیا * سخاوت کا جامہ خدا نے اُس عورت پر قطع کیا ہي اور سب نام چاھتے ہین پر ویسا کام نہین

Digitized by Google

ہوتا ہی - تو اُس سے کتنا کچھہ پیدا ہوتا ہی ؟ یہہ بات دل میں ٹھہرا کر میرعمارت کو بلوا کر حکم کیا کہ ایک مکان عالیشان جسکے چالیس دروازے بلند اور بہت کشادہ ہوں باہر شہر کے جلد بنواو * تھوڑے عرصے میں ویسی ہی عمارت وسیع جیسا دل چاہتا تھا بنکر تیار ہوئی - اور اُس مکان میں ہر روز ہروقت فجر سے شام تلک محتاجوں اور بے کسوں کے تئیں روپی اشرفیاں دیتا اور جوکوئی جس چیزکا سوال کرتا میں اُسے مالامال کرتا *

غرض چالیسوں دروازے سے حاجت مند آتے اور جو چاہتے سولیجاتے * ایک روز کا یہہ ذکر ہی - کہ ایک فقیر سامنے کے دروازے سے آیا اور سوال کیا * میں نے اُسے ایک اشرفی دی - پھر وہی دوسرے دروازے سے ہوکر آیا - دو اشرفیاں مانگیں - میں نے پہچانکر درگذرکی اور دیں * اسی طرح اُن نے ہرایک دروازے سے آنا اور ایک ایک اشرفی بڑھانا شروع کیا - اور میں بھی جان بوجھکر انجان ہوا اور اُسکے سوال کے موافق دیا کیا * آخر چالیسویں دروازے کی راہ سے آکر چالیس اشرفیاں مانگیں * وہ بھی میں نے دلوادیں * اِتنا کچھہ لیکر وہ درویش پھر پہلے دروازے سے گھس آیا اور سوال کیا * مجھے بہت برا معلوم ہوا - میں نے کہا سن ای لالچی ! تو کیسا فقیر ہی کہ ہرگز فقر کے تیئوں حرفوں سے بھی واقف نہیں ؟ فقیر کا عمل اُن پر چاہئے * فقیر بولا - بھلا داتا ! تمہی بتاؤ * میں نے کہا - ف سے فاقہ - ق سے قناعت - ر سے ریاضت نکلتی ہی * جس میں یے باتیں نہوں وہ فقیر نہیں * اِتنا جو تجھے ملا ہی اِس کو کھا پی کر پھر آیئو اور جو مانگو

Digitized by Google

هی - جھوٹہ بولنا ایسا گناہ هی که کوئي گناہ اُسکو نہین پہنچتا *
خدا سب کو اس بلا سے محفوظ رکھے - اور جھوٹہ بولنے کا چسکا
نہ دے * بہت آدمي جھوٹہ موٹہ بک جاتے هین - لیکن
آزمایش کے وقت سزا پاتے هین *

غرض اُن سب کو مُوافق اُنکے انعام دیکر نوفل نے اپنے دل
مین خیال کیا که حاتم سے شخص سے (که ایک عالم کو اُس سے
فیض پہنچتا هی - اور محتاجون کي خاطر جان اپني دریغ نہین
کرتا - اور خداکي راہ مین سرتا پا حاضر هی) دشمني رکھني اور
اُسکا مدعي هونا مردِ آدمیت اور جوان مردي سے بعید هی *
وهین حاتم کا هاتھہ بڑي دوستي اور گرم جوشي سے پکڑلیا اور کہا -
کیون نہو - جب ایسے هو تب ایسے هو * تواضع تعظیم کر کر پاس
بٹھلایا اور حاتم کا مُلک و املاک اور مال و اسباب جوکچھہ ضبط کیا
تھا وهین چھوڑ دیا * نئے سرسے سرداري قبیلۂ طی کي اُسے دي -
اور اُس بوڑھے کو پانچ سو اشرفیان اپنے خزانے سے دلوا دین *
وہ دعا دیتا هوا چلا گیا *

جب یہہ ماجرا حاتم کا مین نے تمام سنا - جي مین غیرت آئي -
اور یہہ خیال گذرا که حاتم اپني قوم کا فقط رئیس تھا جن نے
ایک سخاوت کے باعث یہہ نام پیدا کیا که آج تلک مشہور هی *
مین خدا کے حکم سے پادشاہ تمام ایران کا هون - اگر اس نعمت سے
محروم رهون تو بڑا افسوس هی * في الواقع دنیا مین کوئي کام بڑا
داد و دهش سے نہین - اسواسطے که آدمي جوکچھہ دنیا مین
دیتا هی - اُسکا عوض عاقبت مین لیتا هی * اگر کوئي ایک دانہ

Digitized by Google

لفترائي والا ڈينگ مارنے لگا کہ مين کئي دن سے دوڑ دھوپ کر جنگل سے پکڑ لايا ہون - ميري محنت پر نظر کيجئے - اور جو قرار ہی سو دیجئے *

اِسيطرح اشرفيون کے لالچ سے ہرکوئي کہتا تھا کہ يہہ کام مجھسے ہوا * وہ بوڑھا چپکا ايک کونے مين لگا ہوا سب کي شيخيان سن رہا تھا - اور حاتم کي خاطر کھڑا روتا تھا * جب اپني اپني دلاوري اور مردانگي سب کہہ چکے - تب حاتم نے بادشاہ سے کہا اگر سچ بات پوچھو تو يہہ ہی کہ وہ بوڑھا جو الگ سب سے کھڑا ہی مجھکو لايا ہی * اگر قيافہ پہچان جانتے ہو تو دريافت کرو - اور ميرے پکڑنے کي خاطر جو قبول کيا ہی پورا کرو - کہ سارے ڈيل مين زبان حلال ہی - مرد کو چاہئے جو کہے سو کرے - نہين تو جيبہہ حيوان کو بھي خدا نے دي ہی - پھر حيوان اور اِنسان مين کيا تفاوت ہی ؟

نوفل نے اُس لکڑہارے بوڑھے کو پاس بلاکر پوچھا - کہ سچ کہہ اصل کيا ہی ؟ حاتم کو کون پکڑ لايا ؟ اُس بيچارے نے سر سے پاون تک جو گذرا تھا راست کہہ سنايا - اور کہا کہ حاتم ميري خاطر آپ سے آپ چلاآيا ہی * نوفل يہہ ہمت حاتم کي سنکر متعجب ہوا کہ بل بے تيري سخاوت ! اپني جان کا بھي خطرہ نکيا * جتنے جھوٹے دعوے حاتم کے پکڑ لانے کے کرتے تھے - حکم کيا کہ اُنکي ٹنڈيان کس کر پانسو اشرفي کے بدلے پان پان سي جوتيان اُنکے سر پر لگاؤ کہ اُنکا بھيجا نکل پڑے * وہيں تڑ تڑ پيزارين پڑنے لگين کہ ايک دم مين سر اُنکے گنجے ہوگئے * سچ

Digitized by Google

چپکا هورہے * وهین باهر نکل آیا اور اُس بوڑھے سے کہا - کہ ای عزیز ! حاتم مین هي هون - میرے تئین نوفل کے پاس لیچل - وہ مجھے دیکھیگا اور جو کچھہ روپی دینے کا قرار کیا هی - تجھے دیویگا * پیر مرد نے کہا سچ هی کہ اِس صورت مین بھلائي اور بہبودي میری البتہ هی لیکن وہ کیا جانے تجھہ سے کیا سلوک کرے ؟ اگر مار ڈالے تو مین کیا کرون ؟ یہہ مجھسے هرگز نہو سکیگا کہ تجھکو اپني طمع کي خاطر دشمن کے حوالے کرون * وہ مال کئی دن کھاؤنگا اور کب تک جیؤنگا ؟ آخر مرجاؤنگا تب خدا کو کیا جواب دونگا ؟ حاتم نے بہتیری منت کي کہ مجھے لیچل - مین اپني خوشي سے کہتا هون - اور همیشہ اِسي آرزو مین رهتا هون کہ میرا جان و مال کسو کے کام آوے - تو بہتر هی * لیکن وہ بوڑھا کسي طرح راضي نہ هوا کہ حاتم کو لیجاوے اور انعام پاوے * آخر لاچار هو کر حاتم نے کہا اگر تو مجھے یون نہین لیجاتا - تو مین آپ سے آپ پادشاہ پاس جاکر کہتا هون کہ اِس بوڑھے نے مجھے جنگل مین ایک پہاڑ کي کھوہ مین چھپا رکھا تھا * وہ بوڑھا هنسا اور بولا - بھلائي کے بدلے برائي ملے - تو یا نصیب ! اس رد و بدل کے سوال و جواب مین آدمي اور بھي آپہنچے - بھیڑ لگ گئي - اُنھون نے معلوم کیا کہ حاتم یہي هی - تُرت پکڑ لیا - اور حاتم کو لیچلے * وہ بوڑھا بھي افسوس کرتا هوا پیچھے پیچھے ساتھہ هولیا * جب نوفل کے رو برو لے گئے - اُسنے پوچھا کہ اِسکو کون پکڑ لایا ؟ ایک بدذات سنگدل بولا کہ ایسا کام سواے همارے کون کر سکتا هی ؟ یہہ فتح همارے نام هی - همنے عرش پر جھنڈا گاڑا هی * ایک اور

Digitized by Google

سے انعام پاوے * یہہ سنکر سب کو لالچ آیا اور جستجو حاتم کي کرنے لگے *

ایک روز ایک بوڑھا اور اُسکي بڑھیا دو تین بچے چھوٹے چھوٹے ساتھہ لئے ہوئے لکڑیان توڑنے کے واسطے اُس غار کے پاس (جہان حاتم پوشیدہ تھا) پہنچے - اور لکڑیان اُس جنگل سے چُننے لگے * بڑھیا بولي کہ اگر ہمارے دن کچھہ بھلے آتے - تو حاتم کو کہین ہم دیکھہ پاتے - اور اُسکو پکڑ کر نوفل کے پاس لیجاتے - تو وہ پانچ سو اشرفي دیتا - ہم آرام سے کھاتے - اس دکھہ دھندے سے چھوٹ جاتے * بوڑھے نے کہا کیا ٹُر ٹُر کرتي ہی ؟ ہمارے طالع مین یہي لکھا ہی - کہ روز لکڑیان توڑین - اور سر پر دھر بازار مین بیچین - تب لون روٹي میسر آوے - یا ایک روز جنگل سے باگھہ لیجاوے * لے اپنا کام کر - ہمارے ہاتھہ حاتم کاہے کو آویگا - اور پادشاہ اِتنے روپي دلاویگا ؟ عورت نے ٹھنڈھي سانس بھري اور چپکی ہورہي * --

یے دونون کي باتین حاتم نے سنین - مردمي اور مروت سے بعید جانا کہ اپنے تئین چھپایئے اور جان کو بچایئے اور ان دونون بیچارون کو مطلب تک نہ پہنچایئے * سچ ہی اگر آدمي مین رحم نہین ہو تو وہ اِنسان نہین - اور جسکے جي مین درد نہین وہ قصائي ہی *

درد دل کے واسطے پیدا کیا اِنسان کو
ورنہ - طاعت کے لئے کچھہ کم نہ تھے کروبیان -

غرض حاتم کي جوانمردي نے نہ قبول کیا کہ اپنے کانون سے سنکر

Digitized by Google

کامل هر نوع کي پاکر قابل هون * خدا کے فضل سے چودہ برس کے
سن و سال مین سب علم سے ماهر هوا * گفتگو معقول نشست
و برخاست پسندیدہ اور جوکچهه پادشاهون کو لائق اور درکار هی
سب حاصل کیا - اور یهي شوق شب و روز تها که قابلون کي
صحبت مین قصے هر ایک مُلک کے اور احوال اُلو العزم پادشاهون
اور نام آورون کا سنا کرون *

ایک روز ایک مُصاحب دانا نے (که خوب تواریخ دان اور
جهان دیدہ تها) مذکور کیا - که اگرچه آدمي کي زندگي کا کچهه
بهروسا نهین - لیکن اکثر وصفے ایسی هین که اُنکے سبب سے
انسان کا نام قیامت تک زبانون پر بخوبي چلا جائیگا * مین نے
کها - اگر تهوڑا سا احوال اُسکا مُفصل بیان کرو تو مین بهي سنون -
اور اُسپر عمل کرون * تب وہ شخص حاتم طائي کا ماجرا اِس طرح
سے کهنے لگا - که حاتم کے وقت مین ایک پادشاہ عرب کا نوفل
نام تها * اُسکو حاتم کے ساتهه بسبب نام آوري کے دشمني کمال
هوئي * بهت سا لشکر فوج جمع کرکر لڑائي کي خاطر چڑهه آیا *
حاتم تو خدا ترس اور نیک مرد تها - یهه سمجها که اگر مین بهي
جنگ کي تیاري کرون - تو خدا کے بندے مارے جائینگے - اور
بڑي خون ریزي هوگي - اِسکا عذاب میرے نام لکها جائیگا * یهه
بات سوچ کر تن تنها اپني جان لیکر ایک پهاڑ کے کهوہ مین جا چهپا *
جب حاتم کے غایب هونے کي خبر نوفل کو معلوم هوئي - سب
اسباب اور گهربار حاتم کا قرق کیا - اور مُنادي کروادي - که جوکوئي
ڈهونڈهه ڈهانڈهه کر پکڑ لاوے - پانسو اشرفي پادشاہ کي سرکار

Digitized by Google

* بسم الله الرحمن الرحيم *

* سير دوسرے درويش كي *

جب دوسرے درويش کے کہنے کي نوبت پہنچي

وہ چار زانو ہو بيٹھا اور بولا *

* اى يارو ! اِس فقير کا تک ماجرا سنو *
* ميں ابتدا سے کہتا ہوں تا اِنتہا سنو *
* جسکا علاج کر نہيں سکتا کوئي حکيم *
* ہيگا ہمارا درد نپٹ لا دوا سنو *

اى دلق پوشو ! يہہ عاجز پادشاہزادہ فارس کے مُلک کا ہى - ہر فن کے آدمي وہاں پيدا ہوتے ہيں چنانچہ اِصفہان نصف جہان مشہور ہى * ہفت اِقليم ميں اُس اِقليم کے برابر کوئي ولايت نہيں - کہ وہاں کا ستارہ آفتاب ہي - اور وہ ساتوں کواکب ميں نير اعظم ہى * آب و ہوا وہاں کي خوش اور لوگ روشن طبع اور صاحب سليقہ ہوتے ہيں * ميرے قبلہ گاہ نے (جو پادشاہ اُس مُلک کے تھے) لڑکپن سے قاعدے اور قانون سلطنت کے تربيت کرنے کے واسطے بڑے بڑے دانا اُستاد ہر ايک علم اور کسب کے چن کر ميري اتاليقي کے لئے مُقرر کئے تھے - تو تعليم

Digitized by Google

SELECTIONS

FROM THE

BÁGH-O-BAHAR

AND

HISTORY OF INDIA.

FOR THE

EXAMINATION OF MILITARY OFFICERS

BY THE

Lower Standard.

Published by Authority.

باغ و بہار اور تاریخ ہندوستان

کا انتخاب

جو فوجي افسرون کے چھوٹے امتحان کے لئے مقرر ہی *

हिन्दुस्तान का इतिहास चौर बागोबहार का

चुम्बक

जो फौज के साहिबों के छोटे इम्तेहान के लिये

ठहरायागया है,

CALCUTTA:

PRINTED AT THE BAPTIST MISSION PRESS.

1881.

Digitized by Google

Digitized by Google

Digitized by Google

Digitized by Google

Digitized by Google